श्रीधरभाषाकोष ॥

जिसमें

संस्कृत और भाषाके शब्द, शब्दार्थ, अनेकार्थ
धातु, धात्वर्थशब्दलक्षण और उनके प्रमाणिक
उदाहरण व्याकरणसंयुक्त पाठकजनों की
विद्योन्नति और सहायार्थ लिखे गये हैं

सकल गुणाकर वीरेश नरेश विज्ञातिविज्ञ श्रीमान् टामस सी। ल्यूस
एम, ए, डैरेक्टर शिक्षाविभाग मुमालिक मुतहद्दा आगरा व
अवध तथा श्रीयुत मार्लबरो क्रास साहब बहादुर एम, ए,
इन्स्पेक्टर अवध देशीय पाठशालाध्यक्ष के अधिकार में

सद्गुणसम्पन्न

पण्डित बद्रीनारायण मिश्र हेडमास्टर सेण्ट्रल
नार्मलस्कूल लखनऊ की प्रेरणा से

कान्यकुब्ज पण्डित श्रीधरत्रिपाठि उक्त सेण्ट्रल नार्मलस्कूल के संस्कृत और भाषा
के अध्यापक ने रचना करके

तीसरीबार

लखनऊ

मुंशीनवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में मुद्रितकराया
सन् १९०६ ई०

ऐक्ट २५ सन् १८६७ ई० के अनुसार रजिस्ट्री हुई

मूल्य प्रतिपुस्तक २) डाकमहसूल ।)

ॐ श्रीसच्चिदानन्दमूर्तये नमः ।

श्लो० परमानुग्रहाकारं गणाध्यक्षं सुखप्रदम् ।
बुद्धिराशिं गुणागारं प्रणमामि गजाननम् ॥ १ ॥

भूमिका

प्रकट हो कि वर्तमानकाल में जो शिक्षाप्रकरण अर्थात् सरिश्ता तालीम में जो पुस्तकें पठन पाठन में आती हैं वे प्राचीन और अर्वाचीन पुस्तकों से संग्रह कीजाती हैं बहुधा अंगरेजी भाषाकी पुस्तकों से भी अनुवाद कीजाती हैं उन में ऐसे अपूर्वशब्द आजाते हैं कि जिन को सर्व साधारण लोग और पाठकजन नहीं समझसक्ते न अद्यावधि भाषा में कोई उत्तमकोष ऐसा निर्म्मित किया गया कि जिस की सहायता से शब्दों की धातु धात्वर्थ लक्षण अर्थों का प्रमाण और वाच्यादिशब्दसम्बन्धी बातोंका बोध भली भांति ज्ञात होता यद्यपि एक दो कोष भाषाके बनाये भी गये हैं तथापि उनमें केवल शब्द और शब्दार्थ लिखा गया है पर उपस्थित काल में जो पुस्तकें शिक्षा विभाग में प्रचलित हैं उन में बहुत से शब्द ऐसे प्रयोग किये गये हैं कि जो इन कोषों में नहीं मिलते हैं ऐसे अभिधान अर्थात् कोष के अवलोकन से पाठकजनों का चित्तोत्साह मन्द हो जाता है इस दशा को देख खेद होताहै अतएव एक भाषा का अभिधान लिखना समयानुसार उचित जान पड़ा मैं चौंतीस वर्ष से अवधशिक्षाबिभागका सेवक अर्थात् मुलाजिमहूं इतने समय की सेवकाई में संस्कृत और भाषाकोष और नाना समाचारपत्रों में जो २ विलक्षण और अपूर्वशब्द दृष्टिगोचर हुए उनको संग्रह करता रहा इन से अतिरिक्त सर्वगुणगणालंकृत महाशय बाबूमधुसूदनमुकर जी हेडमास्टर हाईस्कूल सुलतांपुर कि जिनकी मातहती में मैं चौदहवर्ष आनन्दपूर्वक रहा पूर्वोक्त महोदय से वंगदेशीय कोषों का उत्तमोत्तम आशय ग्रहण किया अब मातृभाषाके संशोधनार्थ और पाठकजनों के उत्साहवर्द्धन हेतु इस संग्रहको मु-

ङ्कित कराया पुनः इस स्थल पर इस बात को भी सूचित करना योग्य है कि भाषा का प्रचार कबसे और किसप्रकार से हुआ इतिहासों से विदित हुआहै कि संवत् ७७० में अवन्तिकापुरी अर्थात् उज्जैननगर में राजा भोज के पिता राजा मान काव्यविद्यामें अतिनिपुणथे उन्हों ने पुष्पनामक बन्दीजनको संस्कृत काव्य और अलङ्कारादि पढ़ाये उसने उनको भाषा दोहों में अनुवाद किया उसी समय से भाषा काव्यकी नीव पड़ी तब से दिनमति भाषा की उन्नति होती गई सूरदास, तुलसीदास, केशवदास, बिहारीलाल आदि कवियों ने भाषाके उत्तमोत्तम ग्रंथ निर्म्माण किये उनके शब्दों का ज्ञानदाता केवल कोषही होसक्ता है यद्यपि बहुत प्रकारकी विद्या हैं और उनके विषय भिन्न २ हैं यथा व्याकरणविद्या से वर्णविचार, शब्दविचार, वाक्यरचना, छन्दरचना, उन की विवेचना, योजना और शुद्धाशुद्ध का ज्ञान होताहै परन्तु वाक्य और छन्दका भावार्थ और तर्क वितर्क का ज्ञान न्यायशास्त्र से होता है और साहित्य अर्थात् काव्यविद्या शब्दों की सजावट लालित्य और विचित्रता के काम में आती है परन्तु सर्वोपरि कार्य अभिधान से निकलता है अभिधान में एक २ शब्द के नानार्थ दिखलाये जाते हैं एकही शब्द है पर स्थानान्तर से भिन्न २ अर्थ दिखलाता है इन बातों के विचार का भार कोषसंग्रहक पर रहता है क्योंकि वह शब्दों को श्रेष्ठतमरीतों से चुन २ कर एकत्रित करता है वह शब्दों को इसढब से क्रमबद्ध करता है कि जिस शब्द या उस के अर्थको जो लोग देखना चाहें तुरन्त निकल आवें वह शब्दों की योनि अर्थात् धातु, धात्वर्थ, प्रत्ययादि की रचना का विषय ठीक २ लक्षण या पहचान और उपसर्गादि के संयोग से जो अर्थों में भेद होजाताहै प्रकट करदेताहै इसका वर्णन आगे विस्तारसहित होगा अब कोषके उपयोगी संकेतों का उल्लेख किया जाताहै॥

इस कोष में निम्नलिखित संकेत ठहराये गये हैं ॥

संकेत	शब्द	संकेत	शब्द
सं०	संस्कृत	अं०	अंगरेजी
प्रा०	प्राकृत वा हिन्दी	( )	शब्दोत्पत्ति वा माद्दा
अ०	अरबी	पु०	पुँल्लिङ्ग
फा०	फ़ारसी	स्त्री०	स्त्रीलिङ्ग

संकेत	शब्द	संकेत	शब्द
ब० व०	बहुवचन	गु० उपस०	गुणवाचक उपसर्ग
गु०	गुणवाचक	समुच्च०	समुच्चयिक अव्यय
सर्वना०	सर्वनाम	वि० बो०	विस्मयादिबोधक
सं० सर्वना०	सम्बन्धी सर्वनाम	बोल०	बोलचाल वा मुहावरा
नित्य सं०	नित्य सम्बन्धवान् वा कृतसम्बन्धी	अव्य०	अव्यय
		क०	कर्तृवाचक
क्रि० अ०	क्रियाअकर्म्मक	र्म०	कर्म्मवाचक
क्रि० स०	क्रियासकर्म्मक	भा०	भाववाचक
क्रि० वि०	क्रियाविशेषण	ण०	करणवाचक
उपस०	उपसर्ग	धि०	अधिकरणवाचक

उक्त संकेतों का स्फुट विचार ॥

पु० जिस नाम से पुरुषत्व का बोध हो उसे पुँल्लिङ्ग कहते हैं जैसे पुरुष लड़का, घोड़ा ।

स्त्री० जिस नाम से स्त्रीत्व का बोधहो उसे स्त्रीलिङ्ग कहते हैं जैसे स्त्री, लड़की, घोड़ी ।

भाषा में नपुंसक शब्द पुँल्लिङ्ग ही मानेगये हैं जैसे सागर, जल, रत्न, कुल इत्यादि पर ये संस्कृत में नपुंसक लिङ्गहैं ॥

वचन—संख्याको कहते हैं वे दो हैं एक वचन और बहुवचन जिस रूपसे एकका बोधहो उसे एकवचन जैसे लड़का, घोड़ा इत्यादि ॥

---

(१) सत्त्वरजस्तमोगुणानामुपचयोपचयसमत्वमिहक्रमेण पुंस्त्वंस्त्रीत्वंनपुंसकत्वंच विवक्षितंतेनाचेतनेखट्वाजवनिकादौनदोषइति ॥

..त नामसे एकसे अधिक का बोधहो उसे बहुवचन जानो जैसे लड़के, घोड़े इत्यादि ॥

गुणवाचक—गुणवाचकसंज्ञा वहहै जो पदार्थ के गुण वा धर्म को बतावे जैसे काला घोड़ा, धनी पुरुष, प्रतापी मनुष्य इस स्थलपर काला, धनी, प्रतापी गुणवाचक हैं भाषा में गुणवाचक शब्द बहुधा संज्ञा और कर्तादि के विशेषण होते हैं जैसे खट्टा नींबू, ऊंची भीत, प्रतापी मनुष्य, सुखी जन, खजानची मोहनलाल इत्यादि।

सर्वनाम—संज्ञा उसे कहते हैं जो सब नामों के बदले में आवे सर्व्वनाम का प्रयोजन वहाँ पड़ताहै जहाँ नामको एकबार कहकर फिर कहना हो तब उसकी जगह सर्वनाम आताहै इस से वाक्य बुरा नहीं लगता और न वह संज्ञा वारबार कहने पड़ती है जैसे देवदत्त आया और उसने पोथी पढ़ी यहाँ (उसने सर्वनामहै) सर्वनामों में लिङ्ग के कारण कुछ विकार नहीं होता जिन संज्ञाओं के स्थान में वे आते हैं उनके अनुसार सर्वनामों का लिङ्ग समझा जाताहै जैसे देवदत्त ने कहा मैं पढ़ताहूं यहां देवदत्त पुँल्लिङ्गहै उसके बदलेमें मैं आयाहै तो मैं पुँल्लिङ्ग हुआ, लड़की कहती है कि मैं जातीहूं यहाँ लड़की स्त्री लिङ्ग है अतएव मैं भी स्त्री लिङ्ग हुआ।

सर्वनामों के कई भेद हैं जैसे पुरुषवाची जमीर शख़्सी, निश्चयवाचक वा दर्शक जमीर इशारह, अनिश्चयवाचक जमीर मुबहम, सम्बन्धवाचक इस्म मौसूल, प्रश्नवाचक इस्तफ़हाम, आदरसूचक इज़्ज़त बतानेवाले। मैं तू वह पुरुषवाचक सर्वनाम हैं यह, वह निश्चयवाचक कोई, कुछ अनिश्चयवाचक जो जौन सो तौन सम्बन्धवाचक क्या कौन प्रश्नवाचक आप आदर सूचक।

सम्बन्ध उसे कहते हैं जिससे स्वत्व और रिश्ता जाना जाताहै वह दो में रहताहै एक कृतसम्बन्धी अर्थात् मुज़ाफ़अलेह दूसरा सम्बन्धी अर्थात् मुज़ाफ़ जैसे राजा का घोड़ा राजा कृतसम्बन्धी घोड़ा सम्बन्धी इत्यादि॥

क्रिया के विषय में॥

क्रिया उसे कहते हैं जिससे कृति स्थिति और देह मन के व्यापारका बोध हो क्रियापद में लिङ्ग, वचन, पुरुष, अर्थ, काल, प्रयोग अवश्य होते हैं और इनका ज्ञान क्रियापदके रूप से होताहै इन भेदोंसे क्रियापद के रूप प्रायः बदलते हैं॥

क्रिया धातु से बनती है इस हेतु धातुका वर्णन करते हैं॥

क्रिया की योनि या मूल जो प्रत्ययादि कार्यरहित शुद्धरूप है उसे धातु कहते हैं क्रिया दो प्रकार की है सकर्म्मक और अकर्म्मक सकर्म्मक क्रिया में कर्ता के व्यापर का फल कर्म्म में पाया जाता है यथा पण्डित पोथी को पढ़ता है पण्डित कर्ता, पोथी कर्म्म, पढ़ता है क्रिया। अकर्म्मक क्रिया में कर्ता के व्यापार का फल कर्ताही में रहताहै यथा बालक होता है या रोताहै बालक के व्यापार का फल बालकही में रहा संस्कृतज्ञ धातु के दो भेद कहते हैं सकर्म्मक अकर्म्मक जो धातु वस्त्वन्तरसापेक्ष है वह सकर्म्मक है यथा राम भोजन करताहै श्याम दर्शन करता है इस स्थल में क्या भोजन करता है और किस का दर्शन करता है इसकी जानने की अपेक्षा है राम कोई वस्तु भोजन करता है और श्याम कोई द्रव्य का दर्शन करता है अतएव सापेक्षत्व प्रयुक्त भुज धातु एवं दृश धातु सकर्म्मक हैं जो धातु वस्त्वन्तर सापेक्ष नहीं है वह अकर्म्मक है यथा शिशु शयन करते हैं बालक क्रीड़ा करते हैं इस स्थल में शी एवं क्रीड़ धातु किसी वस्तु की अपेक्षा नहीं करती हैं केवल कर्तृनिष्ठ हैं ‡॥

अकर्म्मक धातु जानने के निमित्त संस्कृत में कोई संकेतिक चिह्न नहीं दिया जाता है वह अनायास ज्ञात होती है॥

द्वितीय बात यह है कि इ, औ, इत्यादि वर्णों को अनुबन्ध कहते हैं जिस धातु के परे इ, वर्ण दृष्ट होवे तिस धातु के उपान्तमें न अक्षर का आगम होगा पश्चात् वही नकार वर्गके अनुसार सन्धि के नियम से ङ, ञ, ण, म, से बदल जाती है यथा अक्+इ+त=अङ्कित, अच्+इ+त=आञ्चित, उत्कठ्+इ+त=उत्कण्ठित कप्+इ+त=कम्पित॥

स्वाभाविक धातु सम्वलित नकारका भी यही नियम है यथा अन्ज=अञ्जन एवं जिस धातु के पश्चात् औ होगा उस के उत्तर त (तव्य) आदि प्रत्ययके परे इकार का आगम नहीं होगा यथा गमऔ=गत, गम औ=गन्तव्य तृतीय बात यह है धातु का नानाप्रकार का अर्थ होने से भी व्यवहारानुसार एक दो तीन पर्य्यन्त धात्वर्थ लिखे गये हैं॥

इस ग्रन्थमें धातुनिष्पन्न शब्द का अकारादिवर्णप्रबन्ध में प्रत्यय और वाच्य का यथोचित उल्लेख रहेगा वाच्यका सङ्केतिक एक २ वर्णहोगा अर्थात् कर्तृवाच्य

‡ लज्जासत्तास्थितिजागरणंवृद्धिक्षयभयजीवितमरणम्। शयनक्रीड़ारुचिदीप्त्यर्थंधातुगणंतमकर्मकमाहुः॥

का क० कर्म्म वाच्य का र्म० करण वाच्यका ण०, अधिकरण वाच्यकी धि० भाववाच्य का भा० लिखागया है ॥

प्रत्यय

अन, अ, ति, अ,

(संस्कृत में अनट, अल, क्ति, घञ्,) इन प्रत्ययों के योगसे क्रियावाचक शब्द निष्पन्न होता है (कहीं २ संज्ञा शब्द भी होता है) प्रकट हो कि अनट, अल प्रत्यय के ट, ल, काम में नहीं आते इस कारण अनट, अल के स्थान में अन, अ को लिखते हैं अन, अ, (अनट, अल) के प्रायः सब धातु के उत्तर भाववाच्य में अन, अ, प्रत्यय होता है अन, अ, के योग से धातु का अन्त्य वर्ण पूर्ववर्ती इ, उ, ऋ, के स्थान में ए, ओ, अर्, होजाता है एवं धातु के अन्त स्थित इ, ई, के स्थान में अय् उ ऊ के स्थान में अव्, ऋ ॠ के स्थान अर् हो जाता है यथा क्षिप+अन=क्षेपन । विक्षिप+अ=विक्षेप । चि+अन=चयन । सश्रि+अन=सश्रयन इत्यादि ॥

ति (क्ति)

प्रायः सब धातुके अन्त्य में भाववाच्य में ति प्रत्यय होता है ति कभी २ धातु में युक्त होजाता है यथा शक्+ति=शक्ति । कभी २ ति प्रत्यय के परे धातु के अन्तिम, एवं न, का लोप हो जाता है यथा गम्+ति=गति । आहन् +ति=आहति और कभी २ ति के परे धातु के अन्त स्थित म को न हो जाता है और प्रथम स्वर दीर्घ हो जाता भ्रम्+ति=भ्रान्ति इत्यादि ॥

अ (घञ्)

धातु के उत्तर भाववाच्य में अ प्रत्यय होता है अ प्रत्यय के योग से धातु के उपांत अ को आ हो जाता है और इ के स्थान में ए और उ को ओ ऋ को अर् होजाता है यथा स्वद अ=स्वाद एवं अ प्रत्यय के योग से धातु के अन्त इ ई के स्थान में आय् उ ऊ के स्थान में आव् ऋ ॠ के स्थान में आर् हो जाता है यथा अधि इ+अ=अध्याय इत्यादि निम्न लिखित प्रत्ययों के योग से विशेषण शब्द कदाचित् संज्ञा शब्द निष्पन्न होते हैं

अक, तृ, इन, इष्णु, अन, उक, र, अ, आन, स्यमान, क्विप्, त, तव्य, अनीय, य, स, इ, ष (संस्कृत क्रम से अक, तृण, णिन , इष्णु, अन, उक, र, (ण, यण, श, उ,) आन, स्यमान ॥

क्विप्, त, तव्य, अनीय, य, क्यप्, घ्यण्, सन्, भि, यङ् उक्त प्रत्ययों का प्रयोग अर्थात् इस्तामाल,

(अक=णक)

धातु के उत्तर कर्तृवाच्यमें अक प्रत्यय होताहै अर्थात् धातुके साथ अक प्रत्यय के योग से कर्तृबोधक शब्द निष्पन्न होताहै अक प्रत्यय के योग से धातुके इकारादि अन्तस्वर के स्थान में आय् इत्यादि होजाताहै एवं उपान्त का अदीर्घ आ- हो जाताहै और इकारादिके स्थान में एकारादि होजाताहै, एवं आकारान्त अकारान्त धातु के पीछे अकप्रत्यय के पूर्व में य का आगम होजाताहै यथा नी + अक=नायक, पठ् + अक=पाठक, भिद् + अक=भेदक, कृ० + अक=कारक, दा + अक=दायक ॥

(तृ=तृण्)

धातु के उत्तर तृ प्रत्यय होने से कर्तृवाच्य होता है तृ प्रत्यय के योगसे धातु के अन्त्य और उपांतिम इकारादिके स्थानमें एकारादि होताहै यथा जी+तृ= जेता, नी + तृ=नेता, स्तु + तृ=स्तोता, कृ + तृ=कर्ता, हृ + तृ=हर्ता, आ, हृ + तृ=आहर्ता, छिद् + तृ=छेत्ता, भिद् + तृ=भेत्ता ॥

(इन्=णिन्)

धातु के परे कर्तृवाच्य में इन् प्रत्यय होताहै इन् प्रत्यय के योग में धातु के इकारादि अन्तस्वर के स्थान में आय् प्रभृति होजाताहै एवं उपांत के अ को आ हो जाताहै और इकारादि के स्थानमें एकारादि होजाताहै एवं अकारांत धातु के उत्तर इन् प्रत्यय के परे यकार का आगम होताहै यथा शी+इन्=शायी, वद+इन्=वादी, भिद+इन् भेदी, स्था + इन्=स्थायी, दा + इन्=दायी, पा + इन्=पायी, या + इन्=यायी ॥

(इष्णु)

चर, सह, वृध, निर, आ, कृ, और कई एक धातु के उत्तर में कर्तृवाच्य में इष्णु प्रत्यय होताहै इष्णु प्रत्यय के योगसे धातु के अन्त और उपांत इकारादि एकारादि होजाताहै यथा चर् +इष्णु=चरिष्णु, वृध्+इष्णु=वर्द्धिष्णु, अलं, कृ + इष्णु=अलंकरिष्णु इत्यादि ॥

(अन)

ई (नि) युक्त पद प्रभृति कई एक धातु के परे कर्तृवाच्य में अन होता है यथा नद् + इ + अन=नन्दन, नश् + अन=नाशन, हन् + अन=घातन, मर्द् + अन=मर्द्दन, तृ + अन=तारण, भू + अन=भावन, मुह + अन=मोहन, पु + अन=पावन, भिन्न उक्तरूप सब उपपद पूर्व में व्यवहार किये जाते हैं यथा, विपन्नाशन, पतितपावन, गोपीमोहन इत्यादि ॥

(उ, उक)

कई एक धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में उक होता है कम् + उक=कामुक इत्यादि ॥

(र)

दीप् , नम्, कम्, हिंस, प्रभृति कई एक धातु के परे कर्तृवाच्य में र होता है यथा नम + र=नम्र, हिंस + र=हिंस्र ॥

† ‡ अ (ण् , यण, श, उ)

विशेष्य विशेषण किंवा अव्यय शब्द के पूर्व्ववर्ती धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अ प्रत्यय होता है अ प्रत्यय कई एक धातु में संयुक्त हो जाता है और अ प्रत्यय के परे कई एक धातु का अन्त्य इकारादि एकारादि से परिवर्तित होजाता है अर्थात् बदल जाता है और अ प्रत्यय के कई एक धातु का अंत्य वर्ण और तत्पूर्व्ववर्ती स्वरका लोप होजाता है वा धातु का अंत्य अकार लुप्त होजाता है यथा मनस् रम् + अ=मनोरम, कुम्भकृ + अ=कुम्भकार, पङ्क + जन + अ=पङ्कज, सुख + दा + अ=सुखद ॥

(आन)

कई एक धातु के परे वर्तमानकाल में कर्तृवाच्य में आन प्रत्यय होता है। जिस धातु के परे अकार आता है तदुत्तर आन के स्थान में मान होजाता है अन्यप्रकार के धातु के परे केवल आन प्रत्यय होता है कर्म्म और भाववाच्य धातु के उत्तर यकार का आगम आता है और आन के स्थान में मान होजाता है यथा धात्र + आन=धात्रमान, शी + आन=शयान, कृ + आन=कुर्वाण, क्रिय + आन= क्रियमाण ॥

(स्यमान)

कर्तृ एवं कर्मवाच्य भविष्यत्काल में धातु के उत्तर स्यमान प्रत्यय होता है किसी धातु के परे स्यमान प्रत्यय के पीछे इकार का आगम होता है यथा दा + स्यमान=दास्यमान, जन + स्यमान-जनिष्यमाण ॥

---

† स्वद्योतकंविशेष्यम् । ‡ परद्योतकंविशेषणम् ।

(क्विप्[1])

धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में क्विप् होता है। क्विप् का कुछ नहीं रहताहै इस कारण शून्यमात्र प्रदर्शित होता है क्विप् प्रत्यय के परे वच् धातु प्रभृतिका अकार दीर्घ होजाता है और च् के स्थान में क् होजाता है एवं क्विप् प्रत्यय के परे ज् और श् के स्थान में क् होजाता है यथा वच्+०=वाक्, आखु+भुज्=आखुभुक्, दृश्+०=दृक्।

(त=क्त)

गम् प्रभृति कई एक धातु एवं अकर्म्मक धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में त प्रत्यय होता है और इससे भिन्न धातु के उत्तर कर्म्मवाच्य और प्रयोग विशेष उभयवाच्य में त प्रत्यय होता है यथा अकर्म्मक गम्+त=गत, भी+त=भीत, सकर्म्मक कृ+त=कृत, परिच्छिद्+त=परिच्छिन्न, भिद्+त = भिन्न।

जिस धातु का औ अनुबन्ध नहीं है तिस से परे त प्रत्यय के पूर्व इकार का आगम होता है एवं कृ, भू इत्यादि धातु के उत्तर त प्रत्यय के पूर्व इकार का आगम नहीं होता यथा इकार का आगम लिख्+त=लिखित।

अनागम भू+त=भूत, कृ+त=कृत, त प्रत्यय के योग में मकारांत और नकारान्त धातु का म् और न् का लोप होजाता है कभी २ म को न होजाता है तब प्रथमस्वर दीर्घ होजाता है यथा लोप का उदाहरण गम्+त=गत, हन्+त=हत, म को न और दीर्घ होने का उदाहरण भ्रम्+त=भ्रान्त, त प्रत्यय के योग में धातु का अन्त्य हकार ग से परिवर्तित होजाता है अर्थात् बदल जाता है एवं त प्रत्यय का तकार ध से बदल जाता है और यह ग के साथ मिल जाताहै किसी २ धातु का ह और त प्रत्यय का दोनों मिलकरके एक ढकार से बदल जाते हैं और धातुका ह्रस्वस्वर दीर्घ होजाता है यथा मुह्+त=मुग्ध, मुह्+त = मूढ।

त प्रत्यय के योग में मद्धातु छोड़कर दकारान्त धातु के द के स्थान में न और त प्रत्यय के त को भी न होजाता है यथा छिद्+त=छिन्न, डी प्रभृति धातु के परे त प्रत्यय के त के स्थान में न होजाताहै यथा डी+त=डीन, उड्डी+त=उड्डीन॥

शुष्, पच् धातुओं के उत्तर त प्रत्ययके तकारको क वा व होजाताहै यथा शुष्+त=शुष्क, पच्+त=पक्व त प्रत्यय के योग में ॠकारान्त धातु के ॠ को इर् होजाता है एवं त प्रत्यय के त को न होजाता है यथा आ-कॄ+त=आकीर्ण, उत्-तॄ+त=उत्तीर्ण॥

---

१ क्विपःसर्वापहारी लोपःसर्वाचार्य्यैर्विधीयते इति॥

योग्यार्थ और कर्म्मवाच्य

(तव्य)

यह प्रत्यय प्रायः बहुत धातुओं के साथ योग कियाजाता है प्रायः योग्यार्थ और कर्म्मवाच्य में तव्य होताहै तव्यके योग में धातुके अन्त्य किंवा उपान्त स्थित इकारादिके स्थान में एकारादि होजाता है। एवं जिस धातुका (औ) अनुबन्ध नहीं है ऐसे धातु के उत्तर एवं वृ, श्वि, श्रि, डी, शी, पू, रु, नु, स्नु, क्षि, क्ष्णु, धातु के उत्तर तव्य प्रत्यय के योग में इकारका आगम होजाताहै तद्भिन्न एक स्वर आ, इ ई, उ ऊ, और ऋकारान्त धातु के उत्तर तव्य प्रत्यय के योग में इकारका आगम नहीं होता है यथा चि + तव्य=चेतव्य, बुध + तव्य=बोद्धव्य, दा + तव्य=दातव्य ॥

कर्म्मवाच्य और योग्यार्थ

(अनीय)

यह प्रत्यय प्रायः सकल धातु के उत्तर कर्म्मवाच्य और योग्यार्थ में होता है अनीय प्रत्यय के योग्य में धातु के अन्त्य इ ई, उ ऊ, ऋ के स्थान में अय्, अव् अर् होजाता है एवं उपान्त के इकारादि के स्थान में एकारादि होजाता है यथा चि + अनीय=चयनीय, भिद् + अनीय=भेदनीय, भज्, यज्, जप्, आ, नम् धातुके उत्तर एवं जिन सब धातुओं के साथ (य=ध्यण्) किंवा (य=क्यप्) प्रत्यय का योग नहीं कियाजाता है तिसके पश्चात् प्रायः कर्म्मवाच्य में और योग्यार्थ में य प्रत्यय होताहै य प्रत्यय के योगमें तव्य प्रत्ययान्त धातुके अनुसार स्वरका परिवर्तन होता है अर्थात् बदलजाता है एवं धातुका अन्त्य आ एकारसे परिवर्तित होताहै यथा चि + य=चेय, भिद् + य=भेद्य, दा + य=देय, धा + य=धेय, ज्ञा + य=ज्ञेय, वि—ज्ञा + य=विज्ञेय ।

(य=क्यप्)

वृ, दृ, भृ, स्तु, इ, शास् एवं ऋकारान्त धातु के उत्तर एवं और कई एक धातु के उत्तर प्रायः कर्म्मवाच्य नित्य (य, क्यप्) प्रत्यय होताहै कृ, वृष्, मृज् गुह्, दुह्, शंस्, संप्रभृति वा अपि अभिपूर्वक ग्रह धातुके उत्तर विकल्प से (य, क्यप्) होताहै य प्रत्यय के योगमें धातु के स्वरका परिवर्तन नहीं होता अर्थात् नहीं बदलता यथा भृज् + य=भृज्य, गुह् + य=गुह्य परन्तु वृ, आ, दृ, भृ, स्तु, कृ धातु के उत्तर (य, क्यप्) प्रत्यय के पूर्व त का आगम होजाता है यथा भृ + य=भृत्य, आ, दृ + य=आदृत्य ।

इकारान्त वा उकारान्त एवं हलन्त अथवा ऋकारान्त धातु के उत्तर कर्म्म-वाच्य में (य, घ्यण्) होजाता है य प्रत्यय के योग में धातु के इकारादि अन्त्यस्वर आय् आदि के रूप में बदलजाता है एवं उपान्त्यका इकारादि स्वर एकारादि में परिवर्तित होजाता है एवं जन्, वध् धातुको छोड़ अन्य धातुका उपान्त्य अ को आ होजाता है यथा श्रु+य=श्राव्य, दुह्+य=दोह्य, क्रम्+य=क्राम्य।

(इ, ञि)

धातुके परे प्रेरणार्थ में और स्वार्थ में इ प्रत्यय होता है इस प्रत्यय के होने में शब्द निष्पन्न नहीं होता है धातु के उत्तर इ प्रत्यय कियाजाय तिसके परे और कोई एक प्रत्यय करते हैं इ प्रत्यय के परे धातु के अन्त्य इकारादि के स्थान में आय् इत्यादि एवं उपान्त्य के इकारादि के स्थान में एकारादि होजाता है परन्तु कभी २ इ प्रत्यय का लोप होजाताहै वा कभी इ प्रत्ययका परिवर्तन अय् से होजाता है यथा कृ+इ+त=कारित, कृ+इ+तृ=कारयिता, चुर्+इ+त=चोरित।

(स, सन्)

धातुसे परे इच्छार्थ में स प्रत्यय होता है इस स प्रत्यय के करने में और एक प्रत्ययका योग होता है स प्रत्यय के परे एक स्वर के सहित धातुके आद्य अक्षर की द्विरुक्ति अर्थात् द्वित्व होजाता है एवं द्विरुक्ति के क को च होजाता है और ग को ज और भ को ब एवं ध को द होताहै यथा कृ+स—आ=चिकीर्षा, पा+स—आ=पिपासा, गुप्+स—आ=जुगुप्सा।

स प्रत्यय के परे लभ्, दा, आप् के स्थान में क्रमशः लिप्, दित्, इप् होजाता है यथा लभ्+स—आ=लिप्सा, दा+स—आ=दित्सा, वि—आप्+स—आ=वीप्सा।

(य, यङ्)

धातु के उत्तर पुनः पुनः अर्थात् वारंवार अर्थ में य प्रत्यय होता है य प्रत्यय के परे एक प्रत्यय और होता है य प्रत्ययके परे एकस्वर सहित धातुके आद्यवर्णकी द्विरुक्ति अर्थात् द्वित्व होजाताहै एवं द्विरुक्ति के क को च होजाता है ग को ज और ध को द एवं भ को ब होजाता है यथा दीप्+य-आन=देदीप्यमान इस य प्रत्यय का किसी २ स्थान में लोप होजाता है किन्तु

ये प्रत्ययका कार्य्य समुदाय होता है पीछे अन्य प्रत्यय का योग होजाता है यथा क्रम्+अन=चक्रमण ।

(तद्धित प्रकरण)

तद्धित उसे कहते हैं जो शब्दार्थ में विशेषता प्रकटकरे जिससे संज्ञाके अंत में प्रत्ययों के लगाने से अनेक शब्द बनते हैं जो भाषा में व्यवहृत प्रत्यय हैं उन्हें नीचे लिखतेहैं तद्धित के प्रत्यय से अपत्यबाचक, कर्तृवाचक, भाववाचक, ऊनवाचक, गुणवाचक संज्ञा उत्पन्न होती है जैसे ।

१ अपत्यबाचक संज्ञा नामवाचक से निकलती है । नामवाचक के पहले स्वर को वृद्धि करने से अथवा ई प्रत्यय होने से जैसे शिव से शैव विष्णु से वैष्णव गोतम से गौतम मनुसे मानव वशिष्ठ से वाशिष्ठ महानन्द से महानन्दी रामानन्द से रामानन्दी हुआ है ।

२ कर्तृवाचक संज्ञा उसे कहते हैं जो क्रिया के व्यापार का कर्त्ता है उसे बतावे संज्ञा से वाला, हारा, इया, इन प्रत्ययों के लगाने से बनती है जैसे चुड़िहारा दूधवाला आढ़तिया इत्यादि ।

३ भाववाचक संज्ञा और संज्ञाओं से इन प्रत्ययों के लगाने से बनती है जैसे ता, त्व, आई ई पन पा वट हट स इत्यादि उदाहरण ये हैं चतुराई बोआई लड़काई लम्बाई पशुत्व उत्तमता मित्रता बालकपन बुढ़ापा बनावट चिकनाहट ।

४ ऊनवाचक संज्ञा अक इया आ वा लगाने से और आ को ई आदेश करने से बनती है जैसे मानव से मानवक वृक्षसे वृक्षक घोड़ीसे घुड़िया बचा से बचुआ मर्दसे मर्दक पलँग से पलँगड़ी ।

५ गुणवाचक संज्ञा नीचे के प्रत्ययों के लगाने से बनती है आ, इक, इत, इय या ई इला, एला, ऐला, लु, लू, ल, वन्त, वान्, जैसे प्यास से प्यासा, भूख से भूखा, शरीर से शारीरिक, स्वभाव से स्वाभाविक, आनन्द से आनन्दित, समुद्रसे समुद्रिय, झाँझ से झांझिया, ऊन से ऊनी, साज से सजीला, घरसे घरेला, बन से बनेला, दयासे दयालु, झगड़ा से झगड़ालू, कृपा से कृपालू कुल से कुलवन्त, आशा से आशावान् ॥

इति तद्धितप्रकरणम् ॥

कृदन्त के विषय में ।

क्रियासे परे जो प्रत्यय होते हैं कि जिन से कर्तृत्व या व्यापारका बोध

होता है उन्हें कृत् कहते हैं उनके आने से जो शब्द बनते हैं उन्हें कृदन्त अथवा क्रियावाचक संज्ञा कहते हैं इस हेतु से कि प्रायः क्रियाके सदृश अर्थ को प्रकाश करते हैं ॥

भाषा में पांच प्रकार की संज्ञा क्रिया से बनती हैं अर्थात् कर्तृवाचक, कर्म्म वाचक, करणवाचक, भाववाचक और क्रियाद्योतक उनके बनाने की रीति नीचे लिखी है ॥

१ जिससे कर्तापन का बोध हो वह कर्तृवाचक है उसके बनाने की रीति यह है कि क्रियाके साधारण रूपके अन्त्य आ को ए करके आगे हारा वाला लगा देते हैं यथा करनेवाला मारनेहारा इत्यादि स्त्री लिङ्ग में अन्त आ को,ई से बदल देते हैं यथा करनेवाली मारनेहारी दानदेनेवाली ॥

धातु के न चिह्नका लोप करके अक, इया, वैया प्रत्यय करने से कर्तृवाचक संज्ञा हो जाती है, यथा पालना से पालक, जड़ना से जड़िया, जीतना से जितवैया जिस धातु का स्वरदीर्घ हो तो वैया प्रत्यय के लगाने पर उसे ह्रस्व करदेते हैं यथा खाना से खवैया गाना से गवैया आदि जानो ॥

२ जिस संज्ञा से कर्म्मत्व जाना जाता है उसे कर्म्मवाचक संज्ञाकहते हैं वह सकर्म्मक क्रिया से बनती है और उसके बनाने की यह रीति है किधातु के न चिह्न को पुल्लिङ्ग में आ से और स्त्रीलिङ्ग में ई से बदल देते हैं उसके पूर्व स्वरका लोप करके आ और ई को मिला देते हैं वही कर्म्मवाचक संज्ञा होजाती है अथवा उस रूप के आगे हुआ लगा देते हैं यथा देखना से देखा मारना से मारा अथवा माराहुआ देखा हुआ स्त्रीलिङ्ग में मारी हुई देखी हुई आदि ॥

३ भाववाचक संज्ञा उसे कहते हैं कि जिसके कहने से पदार्थका धर्म्म वा स्वभाव समझाजाय अथवा जिससे किसी व्यापार का बोधहो व्यापारकी भाववाचक संज्ञा कई प्रकार से बनाई जाती है यथा कहीं धातु के ना के लोप करदेने से कहीं ना को आव् आदेश करने से कहीं २ धातु के ना के आका लोप करने से और कहीं आ का लोप करके आ, ई लगानेसे और कहीं ना का लोप करके आवट आहट अथवा वट हट लगाने से बनती है यथा बोलना से बोल चढ़ना से चढ़ाव देना लेना से देन लेन मारना पीटना से

मार पीट और बोना से बोआई ठगनासे ठगाई सिखना से सिखावट लिखना से लिखावट ॥

४ करणवाचक वह है जिसके द्वारा कर्ता व्यापार को सिद्ध करताहै उसके बनाने का नियम यह है कि धातु के ना के आ को ई करदेने से कहीं २ना का लोप करके ना से पूर्व अक्षर में आ लगाने से कोई २ धातुही करणवाचक का काम देती है यथा कतरना से कतरनी खोदना से खोदनी घेरना से घेरा फेरना से फेरा बेलना यह धातु ही करण का काम देती है ॥

५ क्रियाद्योतक संज्ञा वह है जो संज्ञा का विशेषण होके निरन्तर क्रिया को जनावे उसके बनाने की रीति है कि धातु के न चिह्न को ता करने से और स्त्रीलिङ्गमें ती करने से बनतीहै अथवा उसके आगे हुआ लगानेसे बनती है यथा देखता देखताहुआ इत्यादि ।

इति कृदन्तप्रकरणम् ।

१ अव्यय अ=नहीं व्यय=नाश, क्षय खर्च ।

अव्यय[1] उसे कहते हैं जिस में लिङ्ग वचन कारक के कारण विकार नहीं होता है सदा एक सा रहता है अव्यय चार प्रकार के हैं क्रियाविशेषण उभयान्वयी, शब्दयोगी, विस्मयादिबोधक देशभाषा में क्रियाविशेषण वारंवार आते हैं वे पांच सर्व नामों से बने हैं उनका एक कोष्ठ आगे दिया गया है यह वह कौन जौन तौन इन पांच सर्व नामों से स्थलवाचक, कालवाचक, प्रकारार्थक, परिमाणवाचक, क्रियाविशेषण–अव्यय बनते हैं ॥

	यह	वह	कौन	जौन	तौन	
१	अब	०	कब	जब	तब	कालवाचक
	०	०	कद	जद	तद	
२	यहां	वहां	कहां	जहां	तहां	स्थलवाचक
३	इधर	उधर	किधर	जिधर	तिधर	
४	यों	वों	क्यों	त्यों	ज्यों	गुणवाचक वा प्रकारार्थक
५	ऐसा	वैसा	कैसा	तैसा	जैसा	
६	इत्ता	उत्ता	कित्ता	जित्ता	तित्ता	परिमाणवाचक
७	इतना	उतना	कितना	जितना	तितना	

समुच्चय बोधक या उभयान्वयी अव्यय जो दो शब्दों या दो वाक्यों के बीच में आते हैं और प्रत्येक पद को भिन्न २ क्रिया सहित अन्वय का

(१) सदृशंत्रिषुलिंगेषुसर्वासु च विभक्तिषु। वचनेषुचसर्वेषु यन्नव्येतितदव्ययम् १॥

संयोग अथवा विभाग करते हैं उन्हें संयोजक और विभाजक अव्यय कहते हैं जैसे राम और कृष्ण आये ।

संयोजक अव्यय		विभाजक अव्यय
औ	यथा	वा
और	यदि	अथवा
एवं	जो	क्या
अथ	भी	परंतु
कि	पुनर	किन्तु
तो	पुनः	पर
फिर		चाहे
		जो

शब्द योगी अव्यय जब नाम या सर्वनाम के संग न आवे तो क्रिया विशेषण होते हैं जैसे नाम या सर्वनाम के साथ उदाहरण जिस लिये उस बिना किसलिये इत्यादि गोपीसहित कृष्ण आये गोपालसमेत कृष्ण आये क्रिया विशेषण जैसे बाहर गया पीछे गया ।

शब्द योगी अव्यय ।

आगे पीछे भीतर ऊपर बाहर बराबर बदल बदले समीप बीच पास तले ऊपर बिना साथ सहित समेत समस्त लिये प्रभृति ॥

विस्मयादिबोधक या केवल प्रयोगी अव्यय जिन अव्ययों से कहने वाले का दुःख हर्ष धिक्कार धन्यता इत्यादि के भाव या दशा का बोध होता है वे विस्मयादि बोधक हैं ।

दुःख और धिक्कार बोधक बा परे, हाय, हाय, अरे, रे, हा, धिक दूर दूर चुप, छी, त्राहि, हर्ष और धन्यता बोधक जय जय, शाबाश, वाह वाह, धन्य धन्य, सन्मुखी कारण बोधक—अय, ओ, अरे, अबे ॥

नीचे के अव्यय संस्कृत और भाषा में उपसर्ग कहाते हैं उप=ऊपर+सृज् =सर्ग, सृज=बनाना)[१] उपसर्ग प्रायः क्रियावाचक शब्द के पूर्वयुक्त होके क्रिया के भिन्न २ अर्थ का प्रकाश करते हैं वे एक से ले चार तक क्रिया के पूर्व में आते हैं यथा विहार, व्यवहार, सुव्यवहार, समाभव्यवहार उपसर्ग द्योतक हैं वाचक नहीं संयुक्त होकर दूसरे का अर्थ प्रकाश करते हैं असंयुक्त रहने से निरर्थक रहते हैं उपसर्ग से धातु का अर्थ बदल जाता है यथा हार आहार प्रहार संहार इत्यादि ॥

---

(१) उपसर्गेणधात्वर्थोबलादन्यत्रनीयते । प्रहाराहारसंहारविहारपरिहारवत् ॥

अब मैं अपना संक्षेप वृत्तकाउल्लेख करताहूं।

मेरे पितामह पण्डित रामप्रसाद जी जोकि पौराणिक और अपने समय में वैद्य शिरोमणि थे कान्यकुब्ज मुहल्ला मकरंदनगर शुक्लटोला के निवासी थे और मेरे पिता श्रीपण्डितलालमणिजी पुराण, ज्योतिष, वैद्यक के ज्ञाता थे उन्होंने सरकारी नौकरी भी १४ वर्ष पर्य्यन्त की और समयानुसार मुझे सातवर्ष की अवस्था से १६ वर्ष पर्य्यन्त संस्कृत अध्ययन कराकर फ़ारसी और गणितविद्या पढ़ने को उपदेश किया उन्हीं के आशीर्वाद से मैंने कुछ सीख पाया जिस का फल आप सज्जनों की सेवा में अर्पण किया जाता है ॥

इस अभिधान के बनाने में निम्न कोषों और समाचार पत्रों की सहायता लीगयी है ॥

फैलन साहेब का हिन्दुस्तानी अंगरेजी कोष।
फार्ब साहेब का हिन्दुस्तानी अंगरेज़ी कोष।
बेट साहेब का हिन्दी अंगरेज़ी कोष।
पण्डित तारानाथ वाचस्पतिका शब्दस्तोम महानिधि।
वावन शिवरामआप्टेकृत संस्कृत अंगरेज़ी कोष।
बाबू राधालाल साहेब का शब्द कोष।

प्रतिष्ठित बंगवासी समाचार पत्र कलकत्ता और राजा रामपालसिंह कालेकांकरका हिन्दोस्तान नामक समाचार पत्रादि इस कोष के मुद्रित कराने में मेरे चित में कई कारणों से नाना प्रकार के संकल्प विकल्प उत्पन्न होतेथे पर श्रीकश्यपवंशोद्भव लखीमपुरनिवासी पण्डितबेचेलालात्मज मनीषिमाननीय पण्डित बद्रीनारायणमिश्र हेडमास्टर नार्मलस्कूल लखनऊ की निर्भर सहायता और प्रेरणा से कटिबद्ध होकर इस को मुद्रित कराया ॥

प्रकट होकि सिवाय मेरे उक्त कोष गोवर्द्धन उपनाम मान त्रिपाठि कान्यकुब्ज निवासि की दूकान अमीनाबाद शहर लखनऊ में भी ग्राहक जनोंको मूल्य प्रेषित करने पर प्राप्त हो सकेगा।

सन्धिप्रकरण ॥

१ अक्षरों के मेलको सन्धि कहते हैं ॥

२ उनमें आगम और आदेशादि होतेहैं ॥

३ पदके बीचमें ऊपर से जो अक्षर आताहै वह आगम कहाजाता है ॥

४ जो किसी वर्णके स्थान में दूसरा वर्ण बनाया जाताहै उसे आदेश कहतेहैं॥

स्वरसन्धिः ॥

५ जब इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ से कोई असवर्ण* स्वरपरे होताहै तब उक्त वर्णों के स्थान में क्रमसे य् व् र् ल् आदेश कियेजाते हैं उदाहरण यथा-यदि अपि=यद्यपि । देवी आगता=देव्यागता । यहां इ ई को य् और मधु अत्र=मध्वत्र । वधू आगमन=वध्वागमन । यहां उ ऊ को व् और पितृ अर्थ=पित्रर्थ यहां ऋ को र् और ऌ इत्=लित् यहां ऌ को ल् आदेश होजाता है ॥

६ जब ए ऐ ओ औ के पीछे कोई स्वर आताहै तब चारों वर्णों को क्रम से अय् आय् अव् आव् आदेश होजाते हैं । यथा-जे अति=जयति । शे आते=शयाते विनै अक=विनायक । भो अन=भवन । पौ अक=पावक इत्यादि ॥

७ परन्तु जब पदके अन्त में ए ओ से परे अकार ह्रस्व आनेपर अकारका लोप होजाता है ॥ यथा-ते अत्र=तेऽत्र । पटो अत्र=पटोऽत्र इत्यादि ॥

८ जिस सञ्ज्ञा अर्थात् नामके अन्त में विभक्तिहो उस (विभक्ति सहित) को पद कहते हैं ॥

९ अ इ उ ऋ ऌ ये ह्रस्व और आ ई ऊ ॠ ए ऐ ओ औ दीर्घ और अ ३ इ ३ उ ३ ऋ ३ ऌ ३ ए ३ ऐ ३ ओ ३ औ ३ ये लुप्त कहाते हैं एक मात्रिकको ह्रस्व द्विमात्रिकको दीर्घ और त्रिमात्रिक को प्लुत कहते हैं । मात्राका अर्थ परिमाण है ॥

१० पर गवादिकों के मध्य में अ का आगम होजाताहै यथा-गो इन्द्रः=गो अ इन्द्रः यहां अकारका आगम हुआ=गवइन्द्रः यहां ओ का अव् आदेश होकर स्वरहीन वर्ण पर अक्षर में मिलगये और नियम ११ के अनुसार गवेन्द्रः सिद्धहुआ । गो अग्रम्=गवाग्रम् । गोऽग्रम् नियम ७ के अनुसार हुआ ।

---

* विजातीय, गैरजातिका ॥

११ अ आ से परे इ ई हो तो दोनों मिलके ए और अ आ से उ ऊ परे हो तो ओ और अ आ से ए ऐ परे तो ऐ और अ आ से परे ओ औ हो तो औ बनजाता है । यथा—उप + इन्द्र=उपेन्द्र । महा उदय=महोदय एक + एक=एकैक । महा ऐश्वर्य्य=महैश्वर्य्य । जल ओघ=जलौघ । महा औदार्य्य=महौदार्य्य ॥

१२ अ आ अ ३ ये तीनों आपस में सवर्ण कहे जाते हैं इसी प्रकार इ ई इ ३ इत्यादि स्वर सवर्ण कहाते हैं ॥

१३ जब अ इ उ ऋ वर्णों से कोई इनकाही सवर्ण स्वरपरेहो तो दोनों मिलके एक दीर्घ आदेश बनजाता है । यथा—शशअङ्क=शशांक । देव आलय=देवालय । क्षिति ईश=क्षितीश । विधु उदय=विधूदय । स्वयम्भू उदय=स्वयम्भूदय पितृ ऋण=पितृण ।

१४ जब पदके अन्त में ई या ऊ होवे इनकेपरे सवर्णस्वर छोड़कर कोई दूसरा स्वरहो तो ये ह्रस्व होजाते हैं । यथा—चक्री अत्र=चक्रिअत्र दूसरारूप नियम ४ से चक्रयत्र होताहै ।

१५ जब आ से परे ऋ हो तो आ को अ भी होता है यथा—ब्रह्माऋषि= ब्रह्मऋषि दूसरारूप नियम १६ से ब्रह्मर्षि होताहै ॥

१६ अ आ से परे ऋ हो तो दोनों मिलके अर् और कभी आर् भी होजाताहै । यथा—देवऋषि=देवर्षि महाऋषि=महर्षि शीतऋत=शीतार्त इत्यादि ॥

१७ अकार से परे ऌ हो तो दोनों को अल् होजाता है यथा—तव ऌकारः= तवल्कारः । इति स्वरसन्धिः ॥

अथ प्रकृतिभावः ॥

प्रकृतिभावका अर्थ सन्धि न होना ज्योंका त्यों रहना ॥

१८ अमू वा अमी शब्द से परे स्वरहो तो सन्धि नहीं होगी । यथा—अमू आसाते । अमी अश्वाः यहां नियम ५ से ऊ को व् और ई को य् आदेश नहीं हुआ इत्यादि ॥

१९ किसी शब्द द्विवचनके अन्त में ई, ऊ, ए, स्वरहों और इनके आगे कोई स्वर आवे तो सन्धि नहीं होगी । यथा—अग्नीअत्र । पटूअत्र । माले आनय इत्यादि यहां अग्नी पटू माले द्विवचनान्त हैं ॥ इन शब्दों के स्वरों को य् व् अय् नियम ५ और ६ से आदेश नहीं हुए । परन्तु

मणीवादि शब्दों में नियम १३ के अनुसार सन्धि होगई। यथा—मणी इव=मणीव। दम्पती इव=दम्पतीव इत्यादि ॥

२० आकार ओकार की निपात सञ्ज्ञा है इनमें और एक स्वर में सन्धि नहीं होती है। यथा—आ एवंमन्यसे। नो अत्रस्थातव्यम्। उ उतिष्ठ। इन उक्त शब्दों में निपात और एक स्वर होने से सन्धि नहीं हुई ॥

२१ जब किसी सम्बोधनान्त (दूरसे बुलाने) में स्वरहो तो वह प्लुत होजाता है और प्लुतको अगले स्वर से सन्धि नहीं होती। यथा—देवदत्त ३ एहि यज्ञदत्त ३ आगच्छ यहां अ ए मिलके ऐ और अ आ मिलकर आ नहीं हुआ। इति प्रकृतिभावः ॥

व्यञ्जन सन्धिः ॥

२२ स और त वर्गको शकार चवर्ग के परे क्रमसे शकार चवर्ग बनजाता है। यथा—कस्चरति=कश्चरति। कस्शूरः कश्शूरः। तत् चित्रम्=तच्चित्रम्। राजन्जय=राजञ्जय इत्यादि।

२३ यदि पदके अन्त में त अथवा द परे श हो तो त द के स्थान में च और श के स्थान में छ आदेश होजाताहै। यथा—जगत् शरणम्=जगच्छरणम्। तत्शास्त्रम्=तच्छास्त्रम्। तत्शरीरम्=तच्छरीरम् ॥

२४ श से परे तवर्गको चवर्ग नहीं होताहै यथा—विश्नः=विश्नः। प्रश्नः=प्रश्नः ॥

२५ स और तवर्ग के परे ष और टवर्गहो तो क्रमसे ष और टवर्ग होजाताहै। यथा—तत्टीका=तट्टीका। कस्टीकते=कष्टीकते। कस्षष्ठः=कष्षष्ठः। उत्डीनम्=उड्डीनम्। पेष्ता=पेष्टा। शिष्तः=शिष्टः।

२६ यदि तवर्ग से ष परे हो तो टवर्ग न होगा। यथा—सन्षष्ठः यहां नियम २५ से न् को ण् न बना ॥

२७ पदके अन्त में किसी वर्गका प्रथम द्वितीय तृतीय चतुर्थ वर्ण और य व ल से परे य म ङ ण न हों तो पूर्वोक्तवर्णों में से जो जिस वर्गका हो उसको उसीका पञ्चमवर्ण होजाता है। यथा—वाक्मयम्=वाङ्मयम्। चित्मयम्=चिन्मयम्। एतत् मुरारिः=एतन्मुरारिः। यहां क् और त् को उसीका पञ्चम ङ् और न् बनगया ॥

२८ तवर्ग से लकार परेहो तो त को ल होजाताहै परन्तु नकार को लँ अनुनासिक बनजाताहै यथा—तत्लीला=तल्लीला। महान्लाभः=महाँल्लाभः ॥

२९ वर्गके प्रथम तृतीय अक्षरों से किसी वर्गका पञ्चम अक्षर परेहो तो इनको भी अपने वर्गका पञ्चमवर्ण प्रायः बनजाताहै । यथा-त्वक्मांसम्=त्वङ्मांसम् । दूसरारूप नियम ३० से त्वग्मांसम् । तत्मित्रम्=तन्मित्रम् ॥

३० च ट त क प को ज ड द ग ब आदेश होजाते हैं यदि स्वर वा ह य व र वा वर्गका तृतीय चतुर्थ वर्णपरेहो तो । यथा-वाक्ईश्वरः=वागीश्वरः । धिक् लोभिनम्=धिग्लोभिनम् । वाक् दानम्=वाग्दानम् । जगत् ईशः=जगदीशः । महत् धनुः=महद्धनुः । अच् अन्तः=अजन्तः । षट् अत्र=षड्त्र । ककुप् ऐन्द्री=ककुबैन्द्री इत्यादि ॥

३१ किसी वर्गके दूसरे तीसरे चौथे अक्षरों को उन २ का प्रथम अक्षर भी होजाताहै यदि वर्गके प्रथम द्वितीयवर्ण वा श ष स परेहों तो । यथा-उद् थानम्=उत्थानम् । त्वग् त्र=त्वक्त्र इत्यादि ॥

३२ यदि किसी वर्ग के प्रथम द्वितीय तृतीय चतुर्थवर्ण से परे ह हो तो ह को उसी का चतुर्थ अक्षर होजावेगा पीछे नियम ३० के अनुसार कार्य होगा । यथा-वाक् ह्रासः=वाग्घ्रासः। त्वच् हीनः=त्वज्झीनः षट् हसन्ति=षड्ढसन्ति। तत् हविः=तद्धविः। ककुप् हासः=ककुब्भासः ॥

३३ ह्रस्व स्वर से परे छ होवे तो उसके पूर्व च का आगम होताहै अर्थात् च अधिक होजाता है ॥ परन्तु दीर्घस्वर से परे च होता और नहीं भी होता । यथा-परिछदः=परिच्छदः । वृक्षछाया=वृक्षच्छाया लक्ष्मीच्छाया । लक्ष्मीछाया ।

३४ अनुस्वार से परे किसी वर्गका कोई अक्षरहो तो अनुस्वार को उसी वर्गका पञ्चमवर्ण बनजाता है । यथा-अंक=अङ्क । पंच=पञ्च । कंठ=कण्ठ । अंत=अन्त । अंध=अन्ध । अंब=अम्ब । संवत्=सम्वत् । इत्यादि भाषाके ज्ञाता अनुस्वारको अनुस्वारही लिखते हैं और संस्कृतज्ञ अनुस्वारके बदले वर्गका पञ्चमवर्ण काममें लातेहैं परन्तु लेख दोनों रीतिसे प्रचलित है ॥

३५ ह्रस्व स्वरसे परे ङ ण् न् हों और इनके परे स्वर हो तो इनको द्वित्व होजाता है । यथा—प्रत्यङ् आत्मा=प्रत्यङ्ङात्मा । सुगण् इह=सुगण्णिह । धावन् अश्वः=धावन्नश्वः । इति व्यञ्जनसन्धिः ॥

अथ विसर्गसन्धिः ॥

३६ जब किसी वर्गसे त, थ, स, परे हों तो (ः) को स् आदेश होता है ।

यथा–उन्नतः तरुः=उन्नतस्तरुः । नद्याः तीरम्=नद्यास्तीरम् । रामःथं वदति=रामस्थंवदति । यज्ञदत्तःसनोति=यज्ञदत्तस्सनोति ॥

३७ यदिविसर्ग सेट ठ ष परे हों तो विसर्गको ष् आदेश होजाता है । यथा–धनुःटङ्कारः=धनुष्टङ्कारः । भग्नः ठक्कुरः=भग्नष्ठक्कुरः । कःषष्ठः=कष्षष्ठः ॥

३८ यदि विसर्ग से परे च, छ, श, हों तो (ः) को श आदेश होताहै । यथा–पूर्णःचन्द्रः=पूर्णश्चन्द्रः । रवेःछविः=रवेश्छविः नरःशङ्कते=नरश्शङ्कते ॥

३९ यदि पदके मध्य में न् वा म् हो तो उनको अनुस्वार होजाता है जब कि वर्गोंका प्रथम द्वितीय तृतीय चतुर्थ और श ष स ह परेहों तो । यथा यशान्सी=यशांसी । किम् करोषि=किंकरोषि ॥

४० यदि पदके अन्तमें म् होवे उससे परे व्यञ्जनहो तो म् को अनुस्वार होजाताहै । यथा–हरिम् वन्दे हरिंवन्दे।चन्द्रम् पश्यति=चन्द्रंपश्यति ॥

४१ यदि अकारके नीचे विसर्ग हो और विसर्ग के परे ह्रस्वअकार होवे तो पूर्व अकार सहित विसर्ग को ओ आदेश होजाताहै उस ओ में पूर्व वर्ण को मिला देते हैं ओ से परे अकार का लोपकरके ऽ ऐसा रूप लिख देते हैं यथा––वेदः अधीतः=वेदोऽधीतः नरः अयम्=नरोऽयम् ॥

४२ यदि अः के परे वर्गका तृतीय चतुर्थ वा ह, य, व, र, ल, न, म, हों तो अः को ओ बनजाता है 'यथा–चौरः हरति=चौरोहरति ॥ नरःयाति=नरोयाति पण्डितःभवति=पण्डितोभवति=इत्यादि ॥

४३ यदि अ आ को छोड़ किसी स्वर से परे विसर्ग हो और उसके परे कोई स्वर वा ह, य, व, र, ल, न, म, वा किसी वर्गका तृतीय चतुर्थ वर्ण हो तो विसर्ग को र् हल बनजाता है, यथा–कविःअयम्=कविरयम् । शत्रुः हतः=शत्रुर्हतः । हरेःवचनम्=हरेर्वचनम् इत्यादि ॥

४४ यदि सः और एषः के परे अकार को छोड़ कोई स्वर वा व्यञ्जन वर्ण होतो सः और एषः की विसर्गका लोप होजाता है और लोप होनेपर सन्धि नहीं होती है । यथा–सःआगतः=स आगतः । सःइच्छति=सइच्छति । सःकरोति=सकरोति । सःहसति=सहसति । एषः आयाति=एष आ याति । एषःशेते=एषशेते इत्यादि ॥

४५ यदि श्लोक वा ऋचाका पाद¼चौथाई पूर्ण करना हो तो सन्धि हो जावेगी ॥

यथा—सःएषदाशरथीरामः=सैषदाशरथीरामः। सःएषराजा युधिष्ठिरः= सैषराजा युधिष्ठिरः। सःएषकर्णोमहत्त्यागी=सैषकर्णोमहत्त्यागी। सःएष भीमो महाबलः=सैषभीमो महाबलः। यहां विसर्ग का लोप होनेपर भी सन्धि होगई ॥

४६ अ सेपरे विसर्ग का लोप होजाताहै जबकि अ को छोड़ कोई अन्यस्वर परे हो। यथा—देवःआगच्छति=देवआगच्छति। तथा आ से आगे विसर्ग का भी लोप होजाता है यदि कोई स्वर वा वर्गका तृतीय चतुर्थ पञ्चम वा ह य व र ल परे हों। यथा—मनुष्याःनिवसन्ति=मनुष्या निवसन्ति। वाताःवान्ति=वातावान्ति इत्यादि ॥

४७ यदि अ इ उ के नीचे विसर्ग हो और विसर्ग के परे र हो तो विसर्ग को हल र् आदेश होकर लोप होजाता है और पूर्व स्वर दीर्घ हो जाता है यथा—पुनःरमते=पुनर्रमते=पुनारमते। शुक्तिःरूप्यात्मनाभाति=शक्तिर्रूप=शुक्तीरूप्यामनाभाति इत्यादि ॥

४८ यदि स्वर वा वर्गका तृतीय चतुर्थ पञ्चम वर्ण वा य र ल व ह भोःपद के परे होवें तो भोः के नीचे विसर्गका लोप होजाता है लोप होनेपर सन्धि नहीं होती है ॥

यथा—भोःगदाधर=भोगदाधर। भोःअम्बरीष=भो अम्बरीष इत्यादि॥

४९. कभी स्वर के परे भोः शब्द की विसर्ग को य् भी बन जाता है यथा—भोः ईशान भोयीशान। भोः उमापते=भोयुमापते।

इति विसर्गसन्धिः ॥

(णत्वविधान)

५० ऋ ॠ र ष इनके परे न को ण आदेश होता है। यथा—नृ नाम्=नृणाम्। मातृनाम्=मातृणाम्। सर्पेन=सर्पेण। पूष्ने=पूष्णे। इत्यादि यदि स्वर वर्ण वा कवर्ग पवर्ग वा य, व, ह, और अनुस्वार मध्य में व्यवधान अर्थात् रोकनेवाले हों तो भी न को ण बनजावेगा यथा—मूर्खेन=मूर्खेण। दर्पेन=दर्पेण। मृगेन=मृगेण। पूर्वोक्त वर्णों को छोड़ और वर्णों के व्यवधान होनेसे न को ण कभी न होगा। यथा—अर्चना। दृढेन। अर्थेन इत्यादि में न को ण नहीं हुआ।

५१ पदके अन्त में न् हो तो ण कभी न होगा। यथा—हरीन्। गुरून्। तरान्। इत्यादि ॥

(षत्वविधान)

५२ अ आभिन्न स्वर और क, र, ल, के परे प्रत्यय का जो सकार आता है उसके स्थान में मूर्धन्य षकार होजाता है। यथा–मुनिसु=मुनिषु। साधुसु=साधुषु। भ्रातृसु=भ्रातृषु। सर्वेसाम्=सर्वेषाम् इत्यादि अनुस्वार विसर्ग मध्य में रहने से भी दन्त्य स के स्थान में मूर्धन्य ष हो जाता है यथा–धनूंसि=धनूंषि। हवींसि=हवींषि। धनुःसु=धनुःषु। आशीःसु=अशीःषु इत्यादि ॥

५३ संहितैकपदेनित्या, नित्याधातूपसर्गयोः। नित्यासमासे वाक्येतु, साविवक्षामपेक्षते ॥

(अर्थ)

सन्धि एक पद में और धातु उपसर्ग समास में सदैव होती है और जब पद मिलकर वाक्य बनता है तब वक्ता के अधीन है ॥

(इति सन्धिव्याख्यानम्)

विभक्तिहीन शब्दों को नाम कहते हैं वही नाम विभक्ति युक्त होने से पद कहाता है ॥

पदों के मेल को समास कहते हैं।

समास ६ प्रकार का है।

१ अव्ययी भाव २ तत्पुरुष ३ द्वन्द्व ४ बहुव्रीहि ५ कर्मधारय ६ द्विगु ॥

१ अव्ययीभाव उसे कहते हैं जिसमें समीप, आदर, उल्लङ्घना अभाव अर्थ पाये जावें और कई एक पदों के मेल से समास होता है उन पदों में प्रथम पद अव्यय होता है। यथा–निर्दोष। यथाशक्ति। उपकूल। निर्विष। आसमुद्र। प्रतिगृह। सजल ॥

२ तत्पुरुष उसे कहते हैं जिसके पूर्वपद में द्वितीयादि दे सप्तमी पर्यन्त कोई विभक्ति युक्तहो और परे के पद में प्रथमाविभक्तिहो। यथा–घर गया। लोभजित। धनलोभी। सर्पभय। राजपुत्र। पुरुषोत्तम इन शब्दों में द्वितीयादि दे सप्तमी तक की विभक्तियुक्त हैं ॥

३ द्वन्द्वसमास उसे कहते हैं जिस में परस्पर पद विशेष्य विशेषण नहीं पर प्रथमाविभक्ति युक्त अनेक पदहों इस समास के मध्य में संस्कृत में च अक्षर और भाषा में च के स्थान में और आता है पर समास बनने

से उसका लोप होजाता है। यथा—राम लक्ष्मण। माता पिता इनके मध्य में और शब्दका लोप होगया॥

४ बहुव्रीहि समास उसे कहते हैं जिसमें कई पदों से समास बनायाजावे पर पदोंका अर्थ ठीक २ न पाया जावे उनसे दूसरी वस्तु वा व्यक्ति का अर्थ समझाजावे बहुव्रीहि में संस्कृत में येन, यस्य पद आतेहैं भाषामें यद्का वाचक जिस शब्दका रूप अवश्य आता है यथा—दीर्घबाहू इस स्थल में बड़ी दो भुजा न समझी जावेंगी बल्कि बड़ी हैं दो भुजा जिस पुरुषकी वहपुरुष समझा जावेगा अर्थात् पुरुष दो भुजावाला। चन्द्रशेखर। त्रिशूलपाणि। चक्रपाणि। जलज। वंशीधर। निर्मल जला। ये समासान्त पद अपना अर्थत्याग विशेष अर्थ बताते हैं इससे दूसरे को विशेषण होते हैं॥

५ कर्म्मधारय समास उसे कहतेहैं जो विशेष्य और विशेषण के योगसे बने मुख्य संज्ञाको विशेष्य और उसके गुण धर्म्मको बतावे वह विशेषण है यथा—उन्नततरु। नीलकमल। श्वेतवस्त्र। सुन्दरपुरुष। पूर्वपद विशेषण और परेका पद विशेष्य से मिलके कर्म्मधारय बना॥

६ द्विगु समास उसे कहते हैं जिसमें पूर्वपद संख्यावाचक परेका पद समाहार अर्थात् अनेक वस्तुओंका बोधकहो यथा—त्रिभुवन पञ्चपात्र त्रिनेत्र। चतुर्युग। षट्ऋतु॥

इति समासः॥

ॐ सच्चिदानन्दमूर्तये नमः ।

श्रीधरभाषाकोष ।

अ० देवनागरी वर्णमाला का प्रथम अक्षर, जिस शब्द के आदि में आता है, उसका अर्थ पलट जाता है, जैसे धर्म से अधर्म और शोक से अशोक और जब शब्द का प्रथम अक्षर स्वरहोता है तो अ के स्थान में अन् होजाता है और न् शब्द के आदि स्वर में मिला देते हैं जैसे अन्+अंत=अनंत, अन्+एक=अनेक इत्यादि ।

सं० अ (अव्=बचाना) पु० रक्षक, विष्णु, ब्रह्मा, शिव, पिता, गुरु, वायु, कृपा, समर्थ, अधिपति, मालिक ।

प्रा० अऊत, ऊत (सं० अपुत्र अ=नहीं पुत्र=बेटा.) पु० जिसके लड़का बाला न हो, निर्वंश, २ अनब्याहा, मूर्ख, जाहिल ।

सं० अंश (अंश्=बांटना) भा०पु० भाग, बांट, बांटा, टुकड़ा, २ हिस्सा, दर्जा, अंश, भिन्न में उसे कहते हैं कि एक पूरी चीज़ के बराबर टुकड़े कर के उसमें से जितने लेवें उसे शुमारकुनिन्दा कहते हैं ।

सं० अंशक (अंश्+अक) क० पु० बांटनेवाला, हिस्सेदार ।

सं० अंशांश (अंश+अंश) अंश का अंश, भागका भाग, हिस्सा दर हिस्सा ।

सं० अंशी (अंश+ई) क० पु० बटाऊ, बांटनेवाला, बटवैया साझी, हिस्सेदार ।

सं० अंशु (अंश्+उ) पु० सूर्य की, किरन, २ तेज, उजाला, प्रकाश ।

सं० अंशुक (अंशु+क) पु० वस्त्र, रेशमी वस्त्र, टसर, रेशम ।

सं० अंशुजाल (अंशु=किरण, जाल=समूह) पु० किरन समूह, शुआयें ।

सं० अंशुधर (अंशु=किरन धर=धरनेवाला) क० पु० किरनधारी, सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि, दीप, दिया, देवता, ब्रह्मा, प्रतापी ।

सं० अंशुमान् क० पु० सूर्य, चन्द्रमा,

नाम सूर्यवंशी राजा का असमंजस का पुत्र सगर राजाका पोता।

सं॰ अंशुमालिन्, अंशुमाली (अंश=किरन माला=पांति) क॰ पु॰ सूर्य, आफ़ताब।

प्रा॰ अंसनि (सं॰अंश, अंस्=बांटना) पु॰ किरन, २ भाग, ३ कंधे।

प्रा॰ अंसल (सं॰ अंशल=बाँटनेवाला) गु॰ साझी, हिस्सेदार।

सं॰ अंहति (अंह=आना+ति) भा॰ स्त्री॰ त्याग, दान, २ रोग।

सं॰ अंहस् (अंह्+अस्) पु॰ पाप, स्वधर्म त्याग, गुनाह, दुःख।

सं अंह्रि-ना॰ पु॰ चरण, पांव, हाहूबेर।

सं॰ अकच्छ (अ=नहीं, कच्=बांधना) गु॰नंगा, मेहरा, लंपट, हरैला।

प्रा॰ अकड़ (अकड़ना) भा॰स्त्री॰ ऐंठ टेढ़ापन, बांकापन, शेखी।

प्रा॰ अकड़बाज़ बोल॰ अकड़ैत, छैला, बांका, छैलचिकनियां।

प्रा॰ अकड़मकड़ बोल॰ ऐंठ कर चलना, घमंड, अभिमान, शेखी।

प्रा॰ अकड़ना (सं॰आकुंचन, आ=उलटा, कुञ्च=सिमटना) क्रि॰ अ॰ ऐंठना, टेढ़ाहोना, २ दुखना, दर्द करना ३ कड़ा होना।

प्रा॰ अकड़ैत (अकड़ना) गु॰बांका, छैला, घमंडी, अभिमानी, शेखीबाज़

सं॰ अकण्टक (अ=नहीं+कण्टक=कांटा गु॰ शत्रुहीन निरुपाधि, चैनसे, बेखतर, बेखरखशा।

प्रा॰ अकथ (सं॰ अकथ्य, अ=नहीं कथ्=कहना) गु॰ जो कहने में न आवे, जिसका वर्णन न होसके।

सं॰ अकथनीय (अ+कथ्+अनीय) स्म॰ जो कहने योग्य न हो, बयान से बाहर।

प्रा॰ अकनि (सं॰आकर्ण्य, आ=चारोंओर से कर्ण=पैठना धा॰ सा॰ अव्य॰सुनकर।

सं॰ अकम्पन (अ=नहीं। कम्प=कांपना) गु॰ दृढ, कठोर, मज़बूत, पु॰ राक्षसविशेष।

प्रा॰ अकरन (सं॰अ+करण, कृ=करना) अयोग्य, बिना हथियार, बेसबब।

प्रा॰ अकरा (सं॰ अनर्घ अन=नहीं, अर्घ=मोल होना) गु॰ महँगा बहुत मोलका, बढ़िया, बहुमूल्य, क़ीमती।

सं॰ अकर्म (अ=नहीं वा बुरा कर्म=काम) पु॰ बुराकाम, पाप, अधर्म, अपराध, बुराई, कुकर्म कारबद।

सं॰ अकर्मक (अ=नहीं, कर्म=कर्मकारक) गु॰ ऐसी क्रिया जिसमें कर्म न हो जैसे आना, रहना, आदि, फ़ेल लाज़िमी।

सं०अकल (अ+कला) गु० अङ्गहीन परमात्मा।

प्रा०अंकवार } स्त्री० गोद, गोदी,
अकवार } बगल, कांख २ छाती।

प्रा०अँकवारभरना, बोल० गले लगाना, गोदमें लेना, मिलना।

अ०अकस (अक्स=उलटा) परछांई, वैर, बिरोध, अदावत।

प्रा०अकसर-गु० अकेला २ तनहा बहुधा।

सं०अकस्मात् (अ=नहीं, कस्मात्=किससे वा किसकारण, क्रि० त्रि० अचानक, अनचिते, अकारण, एकाएक, संयोग से, दैवात्, इत्तिफ़ाक़न्।

प्रा०अकाज (सं० अकार्य्य अ=नहीं, कार्य्य=काम) स्पं०पु० बिगाड़, हानि, घटी, घाटा, अनरथ, नुक़सान।

सं०अकाण्ड (अ+काण्ड) गु० कुसमय, बेवक्, अचानक, बेफ़स्ल।

सं०अकापट्य-भा०पु० निश्छलता, ईमानदारी, बेमक्र।

प्रा०अकाम (-सं० अकर्म्म वा अकार्य्य) वृथा, निष्फल, बेफ़ायदे, २इच्छारहित, ३कामहीन४बेमुहब्बत, बे उल्फ़त।

सं०अकाल (अ=नहीं, वा बुरा, काल समय) पु० महँगी, काल, कुसमय, दुकाल, दुर्भिक्ष, क़हत् २ गु० बिनसमयका, बेऋतु, बेफ़स्ल।

सं०अकिञ्चन-गु० निर्धन, तिही-दस्त, मुफ़लिस।

प्रा०अकीरति (अ+कीर्त्ति, कृत्=गाना) भा०स्त्री०अयश, बदनामी।

प्रा०अकुण्ठा (सं० अ+कुण्ठ=गुठिला) गु० नाशहीन, तीक्ष्ण तेज़, पैना।

सं०अकुल गु० कुलटुट, नीच, २अशिव शिव, बे हसब नसब।

प्रा०अकुलाना (सं०आकुल) क्रि० अ०, घबराना, दुखीहोना, व्याकुलहोना, थकना, मुज़तरिब होना, परेशानहोना।

सं०अकुलीन (अ=नहीं, कुलीन=अच्छेघरानेका) गु० नीच, कुजात, कुलहीन, कमीना।

प्रा०अकेला (सं०एक) गु० अकेला, केवल, निराला, तनहा।

सं०अक्रूर (अ=नहीं, क्रूर=कठोर) गु० कोमलस्वभाव, नम्र, नर्म्मदिल, पु० श्रीकृष्णका चचा और मित्र।

सं०अक्ष (अक्ष=फैलना) पु० पहिया २ धुरी वा कील, ३ पांसा, ४ जुआ, ५ गाड़ी, रथ, ६ आंख, ७ रुद्राक्ष, ८ बहेड़ा, ९ सर्प, १० गरुड़ ११ रावणकापुत्र, १२ आत्मा।

सं०अक्षत (अ=नहीं, क्षत=टूटाहुआ क्षण=नाशकरना, तोड़ना) गु०पु०

बिनटूटा-चावल जो पूजाके काममें आता है, बिनाटूटाहुआ ।

सं०अक्षय (अ=नहीं, क्षय=नाश, नाशहोना (गु० अमर, चिरंजीव, स्थिर, लाजवाले ।

सं०अक्षर (अ=नहीं, क्षर=नाश हो-ना) पु० अकारादिवर्ण, आखर, हर्फ़, २ ब्रह्म,गु० जिसकानाशनहो, अविनाशी ।

सं०अक्षांश (अक्ष=पृथ्वी की कील, अंश=भाग) पु० पृथ्वी के उत्तर वा दक्षिण केन्द्रतक नब्बे नब्बे अंशपर रेखा, अर्ज़ुलबलद, लैटीच्यूड ।

सं०अक्षि (अश=फैलना) स्त्री० आंख, चश्म ।

सं० अक्षोभ (अ+क्षुभ=डरना) गु० निर्भय, बेखौफ़ ।

सं०अक्षौहिणी (अक्ष=रथ, ऊ-हिणी=भीड़,ऊह=तर्ककरना) स्त्री० सेना जिस में १०९३५० पैदल, ६५६१० घोड़े, २१८७० रथ, २१८७० हाथी हों ।

प्रा०अखड़-गु० गवाँर, अनसीखा, अनघड़, जंगली ।

सं०अखण्ड (अ=नहीं, खण्ड=टु-कड़ा) गु०पूरा,सारा,सब,सम्पूर्ण, तमाम ।

सं०अखण्डित (अ=नहीं, खण्डित=टूटाहुआ) गु० पूरा, बिनटूटा सारा, तमाम ।

प्रा०अखाड़ा } अखारा } पु० मल्लों के कुश्ती करनेकीजगह,सभा।

सं०अखिल (अ=नहीं, खिल= नाश, खिल=कण, कण=लेना) गु० पूरा, सारा,सब, सम्पूर्ण, कुल ।

प्रा०अखैबृक्ष } अक्षैबृक्ष } (सं० अक्षयबृक्ष, अक्षय=अमर, बृक्ष =पेड़) पु०ऐसा पेड़ जिसका कभी नाशनहो-दरख़्त लाजवाल ।

सं०अग (अ=नहीं, गम=चलना वा जाना) पु० पहाड़, २ बृक्ष ।

सं०अगणित (अ=नहीं,गण=गिन-ना) गु० अनगिनत, अपार, असं-ख्यात, बेशुमार ।

सं०अगद (अ+गद=बोलना)गु० गूंगा,२नीरोग, पु० ओषधि वा दवा.

प्रा०अगम (सं० अगम्य=अ=नहीं गम्य=जानेयोग्य, गम=जाना)गु० नहीं जाने योग्य, विकट, औघट, अपहुँच, दुर्गम, २ गहरा अथाह ।

प्रा०अगर (सं० अगुरु=अ=नहीं गुरु=भारी) पु० एकप्रकारकी सुगं-धित लकड़ी ।

प्रा०अगरवाला (अगरोहा एक जगहका नाम जो दिल्ली के पश्चिम की ओर है)पु० बनियोंकी एकजा-

ति जो अगरोहा से निकले हैं ।

प्रा०अगला (अग्र्, अग्र=आगे) गु० आगेका, पहलेका, पहला २ मुखिया, प्रधान ।

प्रा० अगलौन गु० गिनती में पहला, अव्वल ।

प्रा०अगवा } अगुवा } (सं० अग्रग वा अग्रगामी, अग्र=आगे, गम=जाना) गु० आगे चलने वाला, २ मार्ग बतलानेवाला पु० दूत, अगवानी ।

सं०अगस्ति (अग= पहाड़ अस्=फेकना) पु० एक ऋषि का नाम जो मित्रावरुणका पुत्रथा जिसने विन्ध्याचल पहाड़को गिरादिया था कहते हैं कि यह ऋषि घड़े से जन्माथा और जब समुद्रपर कोप किया था तो सारे समुद्र को पी गया, एकवृक्ष का नाम ३ एकतारे का नाम है ।

सं०अगस्त्य (अग=पहाड़, विंध्याचल,स्त्यै=शब्दकराना) पु० अगस्ति ऋषि ।

प्रा०अगहन (सं०अग्रहायण, अग्र=पहले, हायन=बरस, हा=छोड़ना अर्थात् पुरानी रीति से बरस का पहला महीना) पु० मंगसर, मृगशिर बरसका आठवां महीना ।

प्रा०अगहुड़-गु०अगला, अव्वल ।

प्रा०अगाऊ (सं०अग्र=आगे) क्रि० वि० अगाड़ी, आगे, पहले, सामने ।

प्रा०अगाऊजाना, बोल० सामने जाना, किसीके मिलनेको जाना ।

प्रा० अगाड़ी (सं० अग्र=आगे) क्रि० वि० आगे, सामने और बढ़के, स्त्री० रस्सी जिससे घोड़े के अगले पैर बांधते हैं—२ अगला हिस्सा, अगवाड़ा, आगा ।

प्रा०अगाड़ी पिछाड़ीलगाना,बोल० रोकना, बन्दकरना (घोड़ेको) घोड़े के अगले पिछले पैर बांधना ।

प्रा०अगाड़ीमारना, बोल० मोहरामारना, बैरी की अगली सेना को हराना ।

सं०अगाध (अ=नहीं, गाध=थाह जगह, गाध=ठहराना) गु० अथाह बहुतही गहरा, बेपाँयां ।

प्रा०अगिया पु० एकपक्षी वा कीड़ा का नाम ।

सं०अगुण (अ=नहीं, गुण=हुनर, विद्या, वा, रज, तम, सत ये तीन गुण) गु० निर्गुणी, बेहुनर, २ निर्गुण, ब्रह्म ।

सं०अगेन्द्र (अग=पहाड़+इन्द्र=राजा, पु० सुमेरु, २ हिमालय ।

सं०अगोचर अ=नहीं, गोचर

इन्द्रियों के सामने, गो=इन्द्री, चर=चलना (जो देखने में नहीं आवे, अदृश्य, अलख, गायब, ।

प्रा०अगौनी (सं० अग्रगमन,अग्र=आगे, गमन=जाना) स्त्री० मिलाप के लिये आगेजाना, पेशवाईकरना।

प्रा०अगौनीकरना-बोल० दुलहा के मिलने के लिये सामने जाना, बरात के साम्हने जाना, मिलनी करना ।

सं०अग्नि (अगि=जाना जो ऊपर जाती है) स्त्री०आग,आगी,अनल २ दक्षिण पूर्वकोन का दिक्पाल।

सं०अग्निकोण (अग्नि=आग,कोन=खूंट वा गोशा) स्त्री० पूर्वदक्षिण के बीच का कोन जिसका स्वामी आग है ।

सं०अग्निक्रीड़ा (अग्नि + क्रीड़=खेलना) भा०स्त्री०आतशबाजी ।

सं०अग्निचूर्ण(अग्नि + चूर्ण=पीसना) कर्म०पु०बारूद ।

सं०अग्निबाण (अग्नि + बाण=तीर) पु० आगका तीर ।

सं०अग्निसंस्कार (अग्नि+संस्कार=पवित्रता) पु०मुर्देको आगदेना, जलाना, दाग देना ।

सं०अग्निहोत्री (अग्नि + होत्री=होमकरनेवाला)क०पु०अग्निपूजक, होमकरनेवाला, सदा आग रखनेवाला आतशपरस्त ।

सं०अग्र (अगि=जाना) गु० आगे पहले, मुख्य, प्रधान, मुखिया, पहला ।

सं०अग्रगण्य (अग्र=आगे, गण्य=गिनाजाय, गण=गिनना) कर्म० सबसे पहला और बहुत अच्छा गिनाजाय, प्रधान, मुखिया, मुख्य ।

सं०अग्रगामी (अग्र=आगे, गामी=चलनेवाला,गमजाना)क०पु० सबसे आगे चलनेवाला, अगुआ, सरदार, प्रधान, नायक, मुखिया, पेशवा ।

सं०अग्रज (अग्र=आगे, जन, पैदा होना) पु० बड़ाभाई ।

सं०अग्रदूत (अग्र=आगे,दु=चलना दूत=चलनेवाला) क०पु० नक़ीब, जो आगे सवारीके तारीफ़ करता चलता है ।

सं०अग्रसर(अग्र=आगे, सृ=जाना) गु० आगे चलनेवाला, अग्रगामी पु० सरदार ।

सं०अग्रिम=गु० अगौढ़ी,पेशगी ।

सं०अघ (अघ=पापकरना) पु० पाप, अपराध, अधर्म, गुनाह, २ दोष, चूक, दुःख ।

सं०अघखानि (अघ=पाप, खानि=

उत्पत्ति स्थान, खन=खोदना) गु० पापकी खानि, पापी, गुनहगार।

सं०अघटित (अ+घटित, घट= होना, वा चेष्टाकरना) गु० अयोग्य अनहोनी, नाशुदनी, ग़ैरमुमकिन।

सं०अघमर्षण (अघ=पाप, मर्षण मृष=छुटाना) भा० पु० पापनाशक मंत्र जोसन्ध्योपासनमें पढाजाताहै।

प्रा०अघाई (अघाना) भा० स्त्री० पेटभराव, तृप्ति, आसूदगी।

प्रा०अघाना क्रि० अ० पेटभरजाना, छकना, अफरना, भरपूरहोना, तृप्त होना, आसूदाहोना।

सं०अघासुर (अघ=पाप, असुर= राक्षस) पु० एक राक्षसका नाम जिसको कंसने श्रीकृष्ण के मारने के लिये भेजाथा।

सं०अघोर (अ=नहीं, घोर=डरावना अर्थात् शांत, वा जिससे अधिक कोई डरावना नहीं) पु० शिव, गु० डरावना, भयानक।

प्रा०अघोरी (सं०,अघोर) गु० अघोरपंथी, जो सब चीज बलिकमैला और मुर्दाभी खाते हैं।

सं० अंक (अङ्क=चिह्न करना, गिनना) पु० आंक, चिह्न, संख्या, संकेत, नम्बर २ गोद।

प्रा०अंकना (सं० अङ्कचिह्नकरना) क्रि० स० छापना, मोहर देना, लिखना, २ मोलकरना, जांचना।

सं० अंक विद्या (अङ्क=संख्या, विद्या) स्त्री० गणितविद्या, हिसाब।

प्रा० अंकाना (सं०,अङ्कचिह्नकरना) क्रि० स० मोल ठहराना, जचाना, परखाना।

सं० अंकित (अङ्क=चिह्न करना) र्म्म० चिह्न कियाहुआ, आंकाहुआ, मोल ठहराया हुआ, जांचा हुआ, लिखाहुआ।

सं०अंकुर (अंक=चिह्न करना, वा जाना) पु०अंखुआ, आंकुर, कोपल गाछी, फुनगी।

सं०अंकुश (अंक=चिह्नकरना) पु० लोहेकाकांटा जिससे हाथीको चलाते हैं, आँकुश, आंकड़ी।

प्रा० अँकोर पु० घूस, रिशवत।

प्रा० अँखिया (अक्षि) स्त्री०ब० व० आंखें।

सं० अङ्ग (अङ्ग=चिह्न करना) पु० शरीर, देह, शरीर का एक भाग, अवयव, अज़ो २ देश विशेष, वा भागलपुर।

सं०अंगजनित (अंग=शरीर+ जनित=उत्पन्न=जन्=पैदाहोना) क० पु० देहसे पैदा।

प्रा०अङ्गड़ाई (सं०अङ्ग) भा० स्त्री० देह मरोड़ना, जम्हाई।

सं० अङ्गण } (अगि=जाना) पु०
अङ्गन } आँगन, अँगनाई, चौक
चौगान, आँगन, सहन।

सं०अङ्गद (अङ्ग=शरीर, दै=शुद्धकर, ना, वा, दा=देना) पु० बहूंटा भुजबन्द, बाजूबन्द २ बालि वानरका बेटा।

सं०अङ्गना (अंग=शरीर, अर्थात् सुन्दर शरीरवाली) स्त्री० सुन्दरस्त्री सुन्दरी, कामिनी, स्त्री, लुगाई।

प्रा०अङ्गना पु० } (सं० अंगन)
अङ्गनाई, स्त्री. } आंगन, चौक।

सं०अङ्गन्यास (अंग=शरीर, न्यास= धरना) भा० पु० मंत्रपढ़कर अंग स्पर्श करना।

सं० अङ्गपक्ष-पु० सहायक, मददगार।

प्रा०अङ्गरखा (सं० अंगरक्षा अंग= शरीर, रक्षा=बचाना) पु० चपकन, पहनने का एक कपड़ा।

प्रा० अङ्गरी स्त्री, कवच, बखतर।

प्रा०अंगुली } (सं० अंगुली, अंग=
अंगुरी } चिह्नकरना, गिनना)
अंगुली } स्त्री० हाथका वा पांव का अंग, हाथ पैर की अंगुली।

प्रा० अंगुली काटना, बोल० अचम्भे में होना, अचम्भा करना।

सं०अङ्गव (अंग+अव=रक्षाकरना) पु० मेवा।

प्रा०अङ्गवनिहारा पु० सहनेवाला, बरदाश्त करनेवाला।

प्रा०अङ्गा (सं० अंग=शरीर) पु० अंगरखा, कुरता, कुरती।

सं० अङ्गांगीभाव-भा० पु० शारीरक सम्बन्ध, बाहमी मदद।

सं०अङ्गार (अंग चिह्न करना) पु० अंगारा, जलताहुआ, कोयला।

प्रा०अङ्गारा (सं० अंगार) पु० जलता हुआ कोयला, अंगार।

प्रा०अङ्गारोंपरलोटना बोल० डाह से जलना, दुखपाना, कलपना।

प्रा०अङ्गिया (सं० अंगिका, अंग= शरीर) स्त्री० चोली, कांचुली, कंचुकी।

सं०अङ्गिरा (अंगिरस, अगि= जाना) पु० एकऋषि का नाम जो ब्रह्मा के मुंह से पैदा हुआ।

सं०अङ्गी (अंग+ई) क० पु० शरीर वाला।

सं०अङ्गीकार (अंग=स्वीकार, कृ= करना) भा० पु० मानना, स्वीकार, अंगेजना, कबूल, मंजूर।

प्रा० अङ्गीकारकरना, बोल० मानना, स्वीकार करना, अंगेजना, मंजूर करना।

प्रा०अङ्गीठी } स्त्री० आग रखने
अङ्गेठी } का बर्तन, आगकी
बरोसी, कांगड़ी

सं० अंगुल (अङ्क=चिह्न करना) पु०आठ जौ का नाप, एकगिरहका तीसरा हिस्सा।

सं०अंगुलित्राण (अंगुलि+त्राण =रक्षा) हाथका मोजा, दस्ताना।

प्रा०अंगूठा (सं० अंगुष्ठ, अंगु=हाथ, स्था=ठहरना) पु० मोटी अंगुली।

प्रा०अंगूठी (सं० अंगुलीय) स्त्री० मुँदरी, छल्ला, अंगुरी में पहनने का गहना।

प्रा० अङ्गोछा (सं० अङ्ग=शरीर, उछ=बांधना,वा, अङ्ग पोंछना) पु० गमछा, शरीर पोंछने का कपड़ा।

सं० अंघ्रि (अघि=जाना) पु० पांव पैर २ वृक्ष की जड़।

सं० अच पु०स्वर (अच=गुप्तकरना) छिपाकर करना।

प्रा० अचगरी स्त्री० अनुचित काम, धींगाधींगी, अत्याचार।

सं० अचञ्चल (अ=नहीं+चञ्चल= चपल) गु० स्थिर, कायम।

प्रा०अचंभा } (सं० आश्चर्य) पु०
अचरज } आश्चर्य, विस्मय,
ताज्जुब।

सं० अचर (अ=नहीं, चर=चलना) गु०नहीं चलनेवाला,अचल, अटल।

सं०अचल (अ=नहीं,चल=चलना) गु० नहीं चलनेवाला, ठहराहुआ अटल, पु० पहाड़, पर्वत।

सं० अचला (अचला) स्त्री० पृथ्वी, धरती, भूमि, जमीन।

प्रा० अचानक } (सं०अकस्मात्)
अचानचक } क्रि० वि० एका
एकी संयोग से, अनुचित, बिन कारण, दैवयोग से, दफ़अतन।

प्रा० अचाना } (सं०आचमन,आ,
अचवाना } चमु=खाना) क्रि०
स० खाने के पीछे मुंह साफ़ करना, आचमन करना।

प्रा० अचार (सं० आचार,आ,चर= चलना) भा० पु० चलन,चाल, चलन, रीतिभांति, व्यवहार, धर्मव्यवहार, तरीक़ा।

सं० अचिन्त (अ=नहीं, चिति= सोचना) गु० अचेत, बेसुध,निर्बुद्धि।

सं०अचिर (अ=नहीं+चिर=देर) तुरन्त, जल्द।

प्रा० अचीता (सं० अ=नहीं, चित सोचना)गु० बिनचाहा, २ (सं०अ= नहीं, चित्र, बेल बूटा, वा तसवीर) बिन तसवीर वा बेल बूटोंके।

प्रा० अचेत (सं० अचेतस्,अ=नहीं, चित्त सोचना) गु० बेसुध, निर्बुद्धि, सुन, मूर्छित, बेहोश ।

प्रा० अचेत होना, बोल० बेसुधहोना, सुन होजाना, मूर्च्छा खाना, मूर्छित होना ।

प्रा० अचैन (सं० अ=नहीं, चैन=सुख) गु० बेकल, व्याकुल, दुखी, बे आराम ।

सं० अच्युत (अ=नहीं, च्युत=गिरना) गु० ठहरा हुआ, अटल, अचल, नित्य, अमर, स्थिर, पु० विष्णुका नाम ।

प्रा० अच्छना, } (सं० अस्=होना)
अछना, } क्रि० अ० जीता रहना, होना, रहना ।
जैसे "तुमहिअछतअसहालहमारी"
"सुखतजिभइउँशोकअधिकारी"
तुलसीकृत रामायण ।
"अच्छतपतिभभूतिकिनलाई"
कहोकहांकी रीति चलाई"
प्रेमसागर,

प्रा० अच्छर (सं० अक्षर) पु० आखर, वर्ण, हर्फ़, अक्षर, अकार आदि वर्ण, २ नाशरहित ।

प्रा० अच्छा (सं० अच्छ, अ=नहीं, छो=काटना) गु० भला, उत्तम, सुन्दर, स्वच्छ, साफ़, मनोहर, चंगा ।

प्रा० अच्छाकरना-बोल० चंगाकरना, भला चंगा करना, बीमारी से चंगा करना ।

प्रा० अच्छालगना-बोल० मोहना, फबना, खुलना, पसन्दआना, भाना,

प्रा० अच्छाहोना-बोल० चंगाहोना भलाचंगाहोना, बीमारी से आराम पाना ।

प्रा० अच्छेसेअच्छा-बोल० सबसे अच्छा, उत्तम, बहुतही अच्छा, श्रेष्ठ ।

प्रा० अछतानापछताना, बोल० क्रि० अ० पछताना, पस्तावाकरना, पश्चात्ताप करना, अफ़सोस करना ।

प्रा० अछूता (सं० अ=नहीं हिं० छूना) गु० नहीं छुआहुआ जो चीज जूठीनहो, पवित्र, देवता अथवा ऋषिमुनिके लिये शुद्धभोगआदि ।

प्रा० अज } (सं० अद्य, इदम् यह)
आज } क्रि० वि० आजकादिन, वर्तमान दिन ।

सं० अज (अ=नहीं, ज=पैदाहुआ, जन्=पैदाहोना, वा अ=विष्णु, ज=पैदाहुआ) पु० ब्रह्म, विष्णु, ब्रह्माशिव, जीव, २ दशरथ राजा के बाप का नाम ।

सं० अज (अज=चलना) पु० बकरा मेषराशि ।

सं० अजा (अज्=चलना) स्त्री०बकरी, २ माया ।

सं० अजगर (अज=बकरा, गर=निगलनेवाला, गृ निगलना) पु० बड़ासांप, अज़दहा ।

सं० अजगव (अजगु=शिव,अर्थात् शिवका, अजोऽजन्मागौर्यस्य असौ अजगुः शिवः तस्यधनुः अजगवं आजगवं वा,) पु० शिवका धनुष ।

सं० अजय (अ=नहीं,जि=जीतना) गु० जिसकी जीत नहीं हुई हो, २ जोजीतानहींजाय,अजीत,स्त्री०हार ।

सं० अजर (अ=नहीं, जरा=बुढ़ापा जृ=बूढ़ा होना) गु० जो बूढ़ा न हो सदा जवान बनारहे ।

प्रा०अजहू, अजहूं, अजो } (अज=आज, हू=भी, तक,) क्रि०वि० अबभी, आज भी, अबतक, आजतक ।

प्रा० अजान, अनज्ञान } (सं०अज्ञान) गु० मूर्ख, अनसमझ, अबूझ ।

सं० अजामिल– एकपापी ब्राह्मण का नाम जो कन्नौज में रहताथा जिसकेपुत्र का नाम नारायण था मरते समय नाम लेनेसे तरगया ।

सं० अजित (अ=नहीं, जित=जीतना) गु० जो जीतानहींजाय,अपेल, बली, सबको जीतनेवाला ।

सं० अजिन (अज्=जाना, वा चमकना) पु० मृगछाला, हरिण की खाल जिसपर ब्रह्मचारी और संन्यासीलोग बैठा करते हैं ।

सं० अजिर (अज्=जाना) पु० आंगन, चौक, अँगना, अँगनाई ।

प्रा० अजीत (सं०अजित) गु०सब को जीतनेवाला, बली, जो जीता नहीं जाय ।

सं० अजीर्ण (अ०=नहीं,जीर्ण=पुराना जॄ पुराना होना, पचना) गु० अपच, नहींपचना, हज़म न होना ।

प्रा० अयोध्या (सं० अयोध्या,अ=नहीं,युद्ध=लड़ना अर्थात् जहां कोई लड़नेको नहींआसक्ता) स्त्री०अवध, सूर्यवंशियों की राजधानी ।

स० अज्ञ (अ=नहीं, ज्ञा=जानना) गु० अजान, अनजान, अनसमझ, अबूझ, मूर्ख, बेवकूफ़ ।

सं० अज्ञात (अ=नहीं, ज्ञात=जाना हुआ, ज्ञा=जानना) गु० अनजाना, नहीं जाना हुआ, २ असमझ, मूर्ख ।

सं० अज्ञान (अ=नहीं,ज्ञा=जानना) गु० मूर्ख, अजान, अनजान, असमझ

अबूझ पु० मूर्खता बेवकूफी ।

सं० अज्ञानता (अज्ञान) भा० स्त्री० मूर्खता, अज्ञानपन, बेवकूफी, नाफ़हमी ।

सं० अज्ञानी (अज्ञान) गु० मूर्ख, अजान, अबूझ, अनसमझ, बेवकूफ, नादान ।

सं० अञ्चल (अञ्च्=जाना वा मांगना) पु० अंचल, आंचल, कपड़ेका किनारा ।

सं० अञ्जन (अञ्ज्=आंजना, सुरमा लगाना) पु० सुरमा, काजल ।

सं० अञ्जना (अञ्ज्=शोभना) स्त्री० हनुमान्‌की मा ।

सं० अञ्जलि (अञ्ज्=मिलाना) स्त्री० दोनों हाथों का मिलाना, हाथ का सम्पुट, दोनों हाथों को इस तरहसे मिलाना कि बीच में जगह खालीरहे जिसमें पानीआदि लिया जाय, २ एक तरहका नाप, इतनी चीज़ कि दोनों हाथों में अटसके ।

सं० अञ्जसा (अञ्ज्=जाना, सा=सा धारण) २ शीघ्र सारा ।

फ़ा० अञ्जुमन-स्त्री० सभा, मंडली ।

प्रा० अञ्झा (अन्=नहीं + अध्याय=पढ़ना) छुट्टी तातील ।

प्रा० अटक (अटकना) स्त्री० रोक, रुकाव, आड़, २ सिंधु नदीका नाम ।

प्रा० अटकना-क्रि० स० रोकना, बंदकरना, क्रि० अ० रुकना, बंद होना, ठहरना, रहना ।

प्रा० अटकल (अटकलना) स्त्री० अनुमान, अंदाज़ा, कूत ।

प्रा० अटकलपच्चू, बोल० बे अंदाज़, बे हिसाब, ऊटक नाटक, बे ठौर ठिकाने, योंहीं ।

प्रा० अटकलना, क्रि० स० अंदाज़ा करना, अनुमान करना, सोचना, बिचारना, कूतना ।

प्रा० अटका, पु० श्री जगन्नाथ के प्रसादके लिये भातबनानेका मिट्टी, का बरतन ।

प्रा० अटकाना क्रि० स० रोकना, ठहराना, छेंकना, बंदकरना ।

प्रा० अटकाव (अटकाना) भा० पु० रोक, रुकाव, प्रतिबन्ध ।

प्रा० अटखेल, अठखेल (सं० अट्टखेला अट्ट=बहुत, खेल=खेल) गु० चंचल, खिलाड़, खिलाड़ी, शोख़ ।

प्रा० अटखेली, अठखेली (सं० अट्ट खेला) स्त्री० चंचलता, खिलाड़पन, ढिठाई, चंचलाई,) शोखी ।

सं० अटन (अट्=फिरना) भा० पु० फिरना, चलना, भ्रमण, यात्रा, घूमना, सफ़र, सैयाही, २ अटारी ।

प्रा० अटना (सं० अट्=फिरना, जाना) क्रि० अ० समाना, भर जाना, २ फिरना ।

प्रा० अटपट, पु०
अटपटी, स्त्री०
अटपटांगी, स्त्री० } गु० टेढ़ा टेढ़ी, बांका, बांकी, टर्रा टर्री, एढ़ी, ढेढ़ी, बेठिकाने, बेढंगी, कठिन, ऐंचयुत, पेचीदा ।

सं० अटल (अ=नहीं, टल्=घबराना) गु० अचल, जो टलेनहीं, ठहराहुआ, दृढ़, पायदार ।

सं० अटवि
अटवी } (अट्=जाना, फिरना, स्त्री० वन, जंगल

प्रा० अटा
अटारी } (सं० अट्ट, अट्ट=ऊंचा होना, बढ़जाना या निरादर करना) स्त्री० अटारी, ऊपरकी कोठरी ।

प्रा० अटाला-ढेर, असबाब, सामान, खटला, सामग्री ।

प्रा० अटूट (सं० अ=नहीं, हिं=टूटना) गु० बहुतही बहुत जो टूटे नहीं, समूचा, पूरा, कुल ।

प्रा० अटेरन (भा० स्त्री० चरखी, आंटी) २ घोड़ेकी एक चाल ।

सं० अट्टहास (अट्ट=बहुत, हास=हँसी) भा० पु० बहुत हँसना, खिलखिलाकर हँसना, कहकहा मारना ।

सं० अट्टालिका (अट्ट=ऊंचाहोना बढ़ना वा निरादर करना) स्त्री० अटारी, अटा, ऊपरकी कोठरी, बालाख़ाना ।

प्रा० अठतालीस
अड़तालीस } (सं० अष्टचत्वारिंशत, अष्ट=आठ, चत्वारिंशत=चालीस) गु० चालीस और आठ ।

प्रा० अठतीस
अड़तीस } (सं० अष्ट=आठ त्रिंशत=तीस) गु० तीस और आठ ।

प्रा० अठवारा-सं० अष्टवार, (अष्ट=आठ, वार=दिन) पु० आठवांदिन २ हफ़्ता, सप्ताह ।

प्रा० अठसठ
अड़सठ } (सं० अष्टषष्टिः अष्ट=आठ, षष्टि=साठ) गु० साठ और आठ ।

प्रा० अठहत्तर (सं० अष्टसप्ततिः अष्ट=आठ सप्तति=सत्तर) गु० सत्तर और आठ ।

प्रा० अठाईस
अट्ठाईस } (सं० अष्टविंशतिः अष्ट=आठ, विंशति=बीस) गु० बीस और आठ

प्रा० अठानवे (सं० अष्टनवति, अष्ट=आठ, नवति=नब्बे) गु० नब्बे और आठ।

प्रा० अठारह (सं० अष्टादशः, अष्ट=आठ, दशन्=दश) गु० दश और आठ।

प्रा० अठावन (सं० अष्टपञ्चाशत्, अष्ट=आठ, पञ्चाशत्=पचास) गु० पचास और आठ।

प्रा० अठासी, अट्ठासी (सं० अष्टाशीतिः, अष्ट=आठ, अशीति=अस्सी) गु० अस्सी और आठ।

प्रा० अठोतरसौ (सं० अष्टोत्तरशत, अष्ट=आठ, उत्तर=आगे, शत=सौ) गु० एक सौ आठ।

प्रा० अड़-भा० स्त्री० झगड़ा, विरोध, हठ, जिद।

प्रा० अड़ंग-स्त्री० मंदी, दिसावर की चीज का उतार, २ हठ जिद।

प्रा० अड़ना, अड़करना क्रि० अ० रुकना, थमना।

प्रा० अड़बंगा-गु० बांका, तिरछा, बराबर नहीं, ऊँचानीचा, नाहमवार।

प्रा० अड़बड़ंग-पु० बावलापन।

प्रा० अडूसा-पु० एक औषधि का नाम, रूसा, वासा,।

प्रा० अडोल (सं० अ=नहीं, डुल्=हिलना, झूलना, डोलना) गु० जो नहीं हिलसके, अचल, अटल दृढ बेहरकत।

प्रा० अड़ोसपड़ोस-पु० बोल० पड़ोस, पासबसना, प्रतिवास।

प्रा० अड्डा-सेनाकी जगह, ठहरनेकी जगह, छावनी, छतुरी।

प्रा० अढ़ाई (सं० अर्द्धद्वयः अर्द्ध=आधा, द्वि=दो) गु० दो और आधा।

सं० अणि, अणी (अण्=शब्द करना) स्त्री० धार, नोक, बाढ़, तीखीधार, तेजधार।

सं० अणिमा (अणु=छोटा) स्त्री० आठ सिद्धियों में की एक सिद्धि, जिससे बहुतही छोटारूप बनाके सबजगह जासके, छोटाबनजाने की शक्ति, बहुतही सूक्ष्मता, बहुत बारीकी।

सं० अणु (अण्=शब्द करना, जीना) पु० कन, कनिका, परमाणु, गु० बहुतही छोटा, महीन, सूक्ष्म, बारीक, खुर्द, जर्रा।

सं० अणुमात्र-गु० छोटासा, जरासा।

प्रा० अण्डा (सं० अण्ड=अंडा) पु० गोली, खेलनेकी गोली।

सं० अण्ड (अम्=जाना, अर्थात् जिसमें से बच्चा निकलता है) पु० अंडा।

सं० अण्डकटाह (सं० अण्ड+कटाह) पु० ब्रह्माण्ड ।

सं० अण्डज (अण्ड=अण्डा,ज=पैदा हुआ, जन्=पैदा होना) पु० अण्डे से पैदा होनेवाले जानवर जैसे पखेरू, सांप मछली, और गोह, गिरगिट, बिसखपरा आदि ।

प्रा० अण्डा (सं०अण्ड)पु० पखेरू आदि के पैदाहोने की जगह ।

सं० अतः क्रि० वि० इससे इस लिये, लिहाजा ।

सं० अतएव–क्रि० वि० इसीलिये, पस ।

सं० अतसी (अत्=जाना) स्त्री० तीसी, सन, अलसी ।

सं० अतत्त्वज्ञ (अ=नहीं+तत्त्व मूल+ज्ञा=जानना) क० पु० मूल का न जाननेवाला, गलतफहम, बेसमझ ।

सं० अतत्त्वज्ञता-भा० स्त्री० नासमझी, गलतफहमी ।

सं० अतन } (अ=नहीं+तन=शरीर) गु० शरीररहित,
अतनु } पु० कामदेव ।

सं०अतन्द्रित- गु० आलस्यरहित सुस्त ।

सं० अतल (अ=नहीं+तल=थाह) गु० अथाह पु० नीचे के सात लोकों में से पहिलालोक ।

प्रा० अताई, पु० गवैया, बजंत्री, बजानेवाला ।

सं० अति (अत्=जाना) गु० उप० बहुत, अधिक, बहुतही बहुत, बड़ा, बीताहुआ, होचुका, उलांघना, पार ।

सं० अतिकाय (अति=बड़ी, काय=देह) पु०बड़ा शरीर, २ रावणका पुत्र जिसे लक्ष्मण ने मारा था अथवा गु० बड़ी देहवाला,दानवरूपी, भयानक ।

सं० अतिक्रम (अति=पार+क्रम=चलना) भा० पु० पारजाना, उल्लंघन, अपराध, जुर्म ।

सं० अतिक्रान्त (अति+क्रान्त, क्रम=चलना) क० पु० पारगयाहुआ, बहुत बढ़गया, सबक़त पाया हुआ ।

सं० अतिथि (अत्=जाना अर्थात् जो एक जगह नहीं ठहरता फिरता रहता है) पु० पाहुना, महिमान २ अभ्यागत, योगी, संन्यासी ।

सं०अतिथिभक्त (अतिथि + भक्त भज्=सेवा करना) क० पु० अतिथिपूजक, महिमानपरस्त, मेजबान ।

सं०अतिथिभक्ति-भा० स्त्री० अतिथि सेवा, मेजबानी ।

सं० अतिरिक्त (अति + रिक्त) गु० छूटाहुआ, सिवाय, अलावह ।

सं० अतिरेक (अति + रेक, रिच्=जुदा होना) भा० पु० अधिकता, कसरत ।

सं० अतिशय (अति=बहुत, शी=सोना) गु० बहुतही बहुत, अत्यन्त अधिक, निहायत ।

सं० अतिसार (अति=बहुत, सृ=जाना) पु० पेट चलना, संग्रहणीरोग, पेटौखा रोग, पेट की बीमारी ।

सं० अतीत (अति=बीता हुआ, इ=जाना) क० पु० बीताहुआ, होचुका, परे, गुज़रा हुआ ।

प्रा० अतीत, अतीथ } (सं० अतिथि) पु० योगी, संन्यासी ।

सं० अतुल, अतुलित, प्रा० अतोल } (अ=नहीं, तुल=तोलना) गु० जिसका तोल नहीं, अपार, जो तोला नहीं जाय, अप्रमाण, २ अनूप, उत्तम, जिसकी बराबरी न होसके ।

सं० अत्यन्त (अति=उलांघना, अन्त=पार) गु० बहुतही बहुत, अतिशय, अधिक ।

सं० अत्यय (अति=पार + अय=जाना, इ=जाना) भा० पु० समाप्ति नाश, अपराध, गुनाह ।

सं० अत्याचार (अति=विरुद्ध + आचार=चलन) भा० पु० अन्याय, ज़ुल्म, बिदअत ।

सं० अत्युक्ति (अति=बहुत, उक्ति=कहना, वच् बोलना) भा० स्त्री० बहुत बढ़ावा देकर कहना, झूठी सराह करना, एक अलंकार का नाम, मुबालिग़ा ।

सं० अत्र (इदम्=यह) क्रि० वि० यहां इस जगह, इस ठौर ।

सं० अत्रि (अद्=खाना वा बचाना) पु० सात ऋषियों में का एकऋषि ब्रह्मा का बेटा ।

सं० अथ (समुच्च० अव्य, फिर, उपरांत) इसके पीछे, शुरू, आरंभ, इस तरह से ।

सं० अथवा (अथ=फिर, वा, या) समुच्च० या, वा, किंवा, प्रकारान्तर ।

प्रा० अथाई (सं० अ=नहीं, स्था=रहना) भा० स्त्री० जगह जहां लोग बातचीत और हँसी ठट्ठा करने के लिये इकट्ठे होते हैं, बैठक, २ सभा जमाव ।

प्रा० अथाह (सं० अ=नहीं स्थान=जगह, वा अगाध) गु० गहरा गंभीर, बहुतही गहरा, बेथाह ।

प्रा० अद, अध } (सं० अर्द्ध) गु० आधा ।

सं० अदन (अद्=खाना) भा०पु० भोजन, खाना ।

सं० अदनीय (अद्+अनीय) कर्म० पु० भोजन योग्य, खुर्दनी ।

अ० अदब, कायदा, आचार ।

सं० अदभ्र गु० बहुत, पूर्ण ।

प्रा० अदमूआ, अदमरा, अधमूआ, अधमरा (सं० अर्द्धमरण, अर्द्ध=आधा, मृ=मरना) गु० बोल० बहुतही सुस्त, बहुतही आसकती आधामरा हुआ, नीम मुर्दा ।

प्रा० अदल बदल बोल० एराफेरी, पलटा ।

प्रा० अदला बदला करना, बोल० बदलना, पलटना, एक चीज के पलटे में दूसरी चीज लेना ।

प्रा० अदहन (सं० आदहन आ=अधिक, दहन=जलाना) पु० दालचावल अथवा और चीज पकानेकेलिये बहुतही गर्म पानी ।

सं० अदार (अ=नहीं, दारा=स्त्री) पु० कल्याणभार्य, रँडुवा ।

सं० अदिति (अ=नहीं, दा=देना जो दुख नहीं देवे वा, दो=काटना) स्त्री० देवताओं की मा और दक्ष की बेटी और कश्यप मुनि की स्त्री ।

सं० अदिन (अ=नहीं, वा बुरा, दिन=समय) पु० बुरादिन, बुरी दशा, खोटे दिन, खोटे ग्रह, कुदिन ।

सं० अदूरदर्शी, क०पु० अल्पदृष्टि । कोताह नजर ।

सं० अदृश्य, अदृष्ट (अ+नहीं, दृश=देखना) गु० अलख, जोदेखने में न आवे, अगोचर, गुप्त, अदेख ।

सं० अदेय (अ=नहीं, देय=देनेयोग्य, दा=देना) गु० नहींदेनेयोग्य ।

सं० अद्धा अव्य० साक्षात्, सन्मुख ।

प्रा० अद्धी (सं० अर्द्ध=आधा) स्त्री० आधीदमड़ी २ एकप्रकारकीतनजेब ।

सं० अद्भुत (अत्=अचंभा, भू=होना वा, भा=चमकना) गु० अनोखा-अपूर्व, अजीब ।

सं० अद्यापि (अद्य+अपि) क्रि० वि० आजतक, अबतक ।

सं० अद्यावधि (अद्य+अवधि) क्रि० वि० अभीतक, इस समयतक ।

प्रा० अद्रक (सं० आर्द्रक, आर्द्र=गीला) पु० आदा, आद, कच्ची सोंठ ।

सं० अद्रि (अद्=खाना) पु० पहाड़, पर्वत, २ वृक्ष, पेड़, सात ।

सं० अद्वितीय (अ=नहीं, द्वितीय=दूसरा) गु० केवल, निकेवल, एक ही, २ अनूप, अतुल्य, लासानी ।

सं० अद्वैत (अ=नहीं, द्वैत=दूसरा) गु० जिसके समान दूसरा नहीं है, भेदरहित, बे मिस्ल ।

प्रा० अधकपाली (सं० अर्द्ध कपाल, अर्द्ध=आधा, कपाल=शिर) स्त्री० अधशीसी, आधेशिर में पीड़ा ।

प्रा० अधवर (सं० अर्द्ध=आधा) गु० आधीदूर, बीचमें, मध्य, दर्मियान ।

सं० अधम (अव्=बचाना) गु० नीच, कमीना ।

सं० अधमर्ण (अधम+ऋण) क० पु० ऋणी, खादक, कर्ज़दार ।

सं० अधर (अ=नहीं, धृ=रखना) पु० होठ, नीचेका होठ, २ बीच, शून्य, स्वर्ग और धरती के बीच की जगह, गु० नीच, कमीना, छोटा, लघु ।

सं० अधरामृत (अधर=होठ, अमृत =अमी) पु० होठों में की अमी ।

सं० अधर्म (अ=नहीं, धर्म=पुण्य) पु० पाप, अन्याय, अपराध, अन्धेर, बुराकाम, दोष, गुनाह ।

सं० अधर्म्मी (अ=नहीं, धर्म्मी=धर्म करनेवाला) क० पु० पापी, दुराचारी, अन्यायी, दुष्ट, दोषी, अपराधी, बदकार ।

प्रा० अधवाड़ (सं० अर्द्ध=आधा) पु० कपड़े का आधा थान, आधे घर के लोग ।

सं० अधस्, अधः अव्यय० नीचे, तले ।

प्रा० अधार (सं० आधार) भा० पु० आसरा, आड़, २ खाना, आहार, भोजन ।

सं० अधार्मिक (अ=नहीं, धार्मिक =धर्मी) क० पु० अन्यायी, पापी, दुष्ट, बुरा ।

सं० अधि--उप० पर, ऊपर, ऊंचा, २ मुख्य, प्रधान, ३ बहुत, अधिक, ४ साम्हने, ५ वशमें, यह उपसर्ग अप का उलटा है ।

सं० अधिक (अधि=ऊपर) गु० बहुत, विशेष, ज़ियादह ।

सं० अधिकता (अधिक) भा० स्त्री० अधिकाई, बहुतायत, बढ़ती ।

सं० अधिकरण (अधि=ऊपर, कृ= करना) पु० आधार, आसरा, २ व्याकरणमें सातवां कारक, ज़र्फ ।

प्रा० अधिकाई (सं० आधिक्य, अधिक=बहुत) स्त्री० बहुतात, बढ़ती ।

सं० अधिकार (अधि=ऊपर, कृ= करना) भा० पु० हक़, बपौती २ योग्यता, स्वामीपन, ३ राज, ४ अख़्तियार, ५ ओहदा, काम ।

सं० अधिकारी (अधिकार+ई) क० पु० अधिकाररखनेवाला, स्वामी, मालिक, धनी, वारिस, हक़दार, २ पुजारी, पण्डा ।

सं० अधिकृत, कर्म० पु० अधिकारपाया हुआ, अधिकार किया हुआ, मक़बूज़ा ।

सं० अधित्यका (अधि+त्यकन त्यज्=छोड़ना) स्त्री० टीला, तराई दामन कोह २ कुड़री ।

सं० अधिप / अधिपति (अधि=ऊपर, पा=पालना, क०पु०राजा, मालिक, स्वामी, प्रभु ।

सं० अधिमास (अधि=अधिक, मास=महीना) पु० मलमास, लौंदका महीना ॥

सं० अधिराज (अधि=ऊपर, वा, प्रधान, राजन्=राजा) पु० महाराज, राजाधिराज ।

सं० अधिरूढ़ (अधि=ऊपर, रूढ रुह=जमना) क०पु०आरूढ, सवार ।

सं० अधिवास (अधि+वास-वस्=रहना) भा० पु० रहनेकी जगह, सकूनत ।

सं० अधिवेशन (अधि=ऊपर, वेशन-विश=घुसना, जाना) बैठक, दरबार, इजलास ।

सं० अधिष्ठाता (अधि=ऊपर, स्था=ठहरना) क०पु०स्वामी, मालिक, रक्षक, पालनेवाला, अध्यक्ष, मुखर, अगुवा ।

सं० अधिष्ठान (अधि+स्थान) भा० पु० स्थिति, कयाम, मुक़ाम ।

सं० अधीत (अधि+इत-इ=जाना) र्म०पु० पढ़ाहुआ, पठित ।

सं० अधीति (अधि+इति—इ=जाना) भा०स्त्री०पढ़ना, अध्ययन, ख़्वाँदगी ।

सं० अधीन (अधि=पर अथवा बश इन=स्वामी) गु० बसमें, आज्ञाकारी, दबैल, ताबेदार ।

सं० अधीनता (अधीन) स्त्री०ताबेदारी, चाकरी, दबाव हुकम मानना ।

सं० अधीर (अ=नहीं, धीर=धीरज वाला) गु० चंचल, उतावला, घबरायाहुआ, असंतोषी, चपल, अस्थिर, हड़बड़िया, चटपटा, जल्दबाज, पस्तहिम्मत ।

सं० अधीरता (अधीर) भा० स्त्री० घबराहट, चंचलाहट, उतावली, बेसबरी, हड़बड़ी, चटपटी ।

सं० अधीश / अधीश्वर (अधि=ऊपर वा अधिक, ईश वा ईश्वर=स्वामी) पु० राजाधिराज, राजाओं का राजा, महाराज, शाहनशाह ।

सं० अधुना-क्रि०वि० अब, इसवक्त ।

प्रा० अधूरा (अधपूरा) गु० अधबना, अनबना, पूरानहीं, नामुकम्मिल ।

प्रा० अधूराजाना-बोल० कच्चाजाना, कच्चेबच्चे का गिरना ।

प्रा० अधेड़ (अर्द्ध=आधा) गु०अधबूढ़ा, जिसकी आधीउमर बीतगईहो यह शब्द स्त्री के लिये बहुत बार बोलाजाता है ।

प्रा० अधेन (सं० अध्ययन) भा० पु० पढ़ना ख़्वाँदगी ।

प्रा० अधेला (सं० अर्द्ध=आधा) पु० आधा पैसा, पैसेका आधा ।

प्रा० अधेली (सं० अर्द्ध=आधा) स्त्री० आधा रुपया, अठन्नी, आठ आना।

सं० अधोमुख गु० नीचे मुख कियेहुये, शिर झुकाये हुये, उदास, सरनगूं।

प्रा० अधौड़ी (सं० अर्द्ध=आधा) स्त्री० आधी खाल, मोटा और गाढ़ा चमड़ा जिसके जूते के तले, डोल डोलची और घोड़े के साज आदि बनते हैं।

सं० अध्यक्ष (अधि=ऊपर, अक्ष=फैलाना) पु० स्वामी, मालिक, प्रधान, मुखिया, मुख्य, अधिकारी।

सं० अध्ययन (अधि+इ=पढ़ना) पु० पढ़ना, पवित्र पोथियोंका पाठकरना, ब्राह्मणोंके षट्कर्ममें का एककर्म।

सं० अध्यवसाय (अधि+अव+सै=नाश होना) पु० उद्यम, उपाय, रोजगार।

सं० अध्यापक (अधि+इ=पढ़ना) पु० पाठक, गुरू उपाध्याय, आचार्य, शिक्षक, वेद शास्त्र पढ़ानेवाला।

सं० अध्यापन (अधि+इ=जाना) भा० पु० पढ़ाना, सबक़देना।

सं० अध्याय (अधि+इ=पढ़ना) पु० पाठ, पर्व, सर्ग, प्रकरण, बाब, परिच्छेद।

सं० अध्यास (अधि+आस=बैठना) भा० पु० भाव, ख़याल, सम्बन्ध, ताल्लुक़ २ सत्य असत्य वस्तुकी जो अभेद प्रतीति है उसीका नाम अध्यासहै।

सं० अध्यासीन (अधि+आसीन-आस्=बैठना) क० पु० बैठाहुआ।

सं० अध्वर (अध्वन्=मार्ग, रा=देना अर्थात् जो सच्चा रस्ता बतलाताहै) पु० यज्ञ, होम, बलिदान।

सं० अध्वा (अध्वन्=मार्ग) स्त्री० राह।

सं० अन्=निषेधवाचक अव्यय, संस्कृत में जिस शब्द का पहला अक्षर स्वर हो उस के पहले अ नहीं आता बल्कि ऐसी जगह पर अ को अन् होजाता है जैसे अनन्त, पर हिन्दी में व्यंजन के पहले भी अन आता है जैसे अनदेखा।

अं० अनकवनांट्यड-वह नौकर जिन्हें सरकार नौकरी देनेकी जिम्मेदार नहीं।

प्रा० अनख (अनखाना) भा० स्त्री० रिस, कोप, क्रोध, गुस्सा, रड़ाइ, ईर्षा।

सं० अनख (अ+नख) नखहीन, जिस के नख न हो।

प्रा० अनखाना-क्रि० अ० कोपकरना, खिसियाना, क्रोध करना, गुस्सा होना चिढ़ना, खुनसाना, ख़फ़ाहोना।

प्रा० अनगढ़, अनगढ़ा, पु० अनगढ़ी, स्त्री० } (अन्=नहीं=गढ़ना=बनाना) गु० अनबना, अड़बग, अनसीखा, नहीं गढ़ा हुआ।

प्रा० अनगढ़ीबात-बोल० बे ठिका-ने बात, बे मेल बात, बे सिर पांव की बात, बेढंगीबात।

प्रा०अनगणित, अनगिणत, अनगिणती (सं० अगणित, अ = नहीं, गण् = गिनना) गु० अपार, बे-शुमार, असंख्यात, बहुत, बेहिसाब।

प्रा०अनगिना (सं० अगणित) गु० नहीं गिना हुआ, बे गिना, २ अनगणित, अपार, बेशुमार, बे-हिसाब।

प्रा० अनगिना महीना--बोल० स्त्री को गर्भ का आठवां महीना, जब लुगाई पेट से होती है उस समय का आठवां महीना॥

सं० अनघ (अ=नहीं, अघ=पाप) गु० निष्पापी, निर्दोष, सीधा सा-दा, शुद्ध, बेगुनाह।

प्रा० अनङ्ग (अ=नहीं, अङ्ग=देह) पु० कामदेव, एकबार महादेव ने अपनी तीसरी आंख की आग से कामदेव को जला दिया था उसी दिन से इसका नाम अनङ्ग हुआ, यमराज और श्रद्धा का पुत्र।

प्रा० अनचाहत (अ=नहीं, चाहना) गु० नहीं चाहा हुआ, अनिच्छित।

प्रा० अनचित (सं० अ=नहीं, चित् सोचना) गु० अचानक, एकाएक, अचीता।

प्रा० अनजाना (सं० अज्ञान) गु० नहीं जाना हुआ, २ निर्बुद्धि।

प्रा० अनजाने (सं० अज्ञान) क्रि० वि० बिनजाने, बे जाने बूझे, नहीं जानके, अजान।

प्रा० अनजीवत (सं० अजीवित) क० पु० मृतक, मुर्दा।

सं० अनडुह (अनः=छकड़ा+वह= लेजाना) पु० बैल।

सं० अनड्वान् (सं० अनडुह) पु० बैल।

प्रा०अनत (सं० अन्यत्र) क्रि०वि० और जगह।

सं०अनन्त (अन्=नहीं, अन्त=पार) गु० अपार, जिस का अन्त नहीं, असीम, बेहद, पु० शेषजी, शेष-नाग जिनके एक फनपर हिंदूलोग पृथ्वीको ठहरी बताते हैं, २ चौदह गांठका एक धागा जिसको भादौं सुदी १४ अर्थात् अनन्त चौदसके दिन पूजा करके हिंदूलोग अपने दहिने हाथ पर बांधते हैं, ३ विष्णु, धरणी, नक्षत्र, जीव, ब्रह्म, लाइ-न्तिहा।

सं०अनन्य (अ=नहीं, अन्य=दूसरा) गु० एकही, जिसको दूसरेका भरो-सा नहीं।

सं०अनपत्य (अन्=नहीं+अपत्य= पुत्र) पुत्रहीन, लावल्द।

प्रा०अनपावनी (सं०अप्रापणीय) गु० जिसको कोई न पावै, दुर्लभ, अप्राप्त।

प्रा० अनबनाव (अन=नहीं, बनाव=मेल) भा० पु० अनरस, बिगाड़, फूट, नाचाकी, ऐंठाऐंठी, नाइत्तिफ़ाक़ी।

प्रा० अनबेधा (सं० अविद्ध, अ=नहीं व्यध्=बींधना, कर्म०पु० अनछेदा, अबेधा, नहींछेदाहुआ, नहींबींधाहुआ।

प्रा०अनबोल (अन=नहीं + बोल=बोलना) गु० चुपचाप, अवाक्, अबोल, अनबोला, चुपका, गूंगा।

प्रा०अनभल (अ=नहीं, भला=अच्छा) पु० बुरा, दुख।

सं० अनभिज्ञ (अन्+अभि+ज्ञा=जानना) गु० नादान, नावाक़िफ़।

प्रा० अनमना (सं० अन्यमनस्, अन्य=दूसरा, मनस्=मन वा उन्म, नस्, उत्=ऊपर, मनस्=मन) गु० घबराया हुआ, उदास, चिंता में, चिंतित, फ़िकरमंद, मुतफ़क्किर।

प्रा० अनमोल (अन्=नहीं मोल =क़ीमत, वा, सं० अमूल्य, अ=नहीं, मूल्य=मोल) गु० अमोल, बढ़िया, उत्तम, जिसका मोल न होसके।

प्रा०अनरस (अन्=नहीं, रस=स्वाद) पु० अनबनाव, मित्रों के आपस में ऐंठाऐंठी, फूट, नाचाकी, बिगाड़।

प्रा०अनरीति (अन्=नहीं, रीति=चाल) स्त्री० कुचाल, कुढंग, बुरीरीत।

सं० अनर्थ (अ=नहीं, अर्थ=मतलब लाभ) गु० वृथा, बेफ़ायदा, अनुचित, निरर्थक, अकारथ, निष्फल, बेमतलब पु० हानि, नुक़सान।

सं० अनर्थकारी (अनर्थ+कारी) क० पु० हानिकारक, मुज़िर।

सं० अनल (अ=नहीं, अल=पूरा होना, अर्थात् जिसमें चाहे जितना डालो पर पूर्ण नहीं होवे, वा) अन्=जीना, जिससे सब जीते हैं (पु० आग) आगी, अग्नि।

सं०अनवद्य (अ=नहीं अवद्य=दोष) गु० निर्दोष, बेचूक, बेगुनाह, बेख़ता।

सं० अनवधान (अन्=नहीं + अव=निश्चय + धा=धरना) भा० पु० आशक्ति, रहित, बेतवज्जुह, बेमुहब्बत, बे ख्वाहिश।

सं० अनवस्थित (अन्=अव + स्था=ठहरना) गु० अचेत, बेख़बर असावधान, ग़ाफ़िल।

प्रा०अनसिख } (सं० अशिक्षित
अनसीखा } अ=नहीं, शिक्षित=सीखा) गु० अनपढ़, मूर्ख, अजान ग़ैर तालीमयाफ़्ता।

प्रा० अनसुना (अन=नहीं, सुनना) गु० नहीं सुना, नहीं ध्यान दिया, अनाकानी।

प्रा०अनसुनी करना } बोल० कि-
सुनीअनसुनीकरना } सीकीबात

पर कुछ ध्यान नहीं देना, नहीं सुनने का बहाना करना ।

प्रा० अनहित (सं० अहित, अ नहीं हित भला) क०पु० बैरी, द्वेषी, बुरा करनेवाला २ बुरा ।

प्रा० अनहोना (अन-नहीं, होना गु० नहींहोनेवाला, असंभव, गैर मुमकिन ।

सं० अनाचार (अ=नहीं, आचार चाल चलन) भा०पु० बुरा चाल चलन, कुचाल, कुरीति, बुरा व्यवहार बदचलनी, बदचलन ।

प्रा० अनाज / नाज (सं० अन्न) पु० अन्न नाज, गल्ला ।

प्रा० अनाड़ी (सं० अनार्य, अन् नहीं, आर्य=सभ्य) गु० गंवार, मूर्ख, भोंदू, फूहड़, बेडौल, बेढंगा, सिख नौत, कच्चा ।

सं० अनाथ (अ=नहीं, नाथ=स्वामी) गु० बिनमालिक, बिन मा बाप का, मुरदा, यतीम, बिन पतिकी लुगाई, २ दुखी, दीन ।

सं० अनाथालय (अनाथ+आलय) धि० पु० मुहताजखाना, यतीमखाना ।

सं० अनादर (अ=नहीं, आदर= मान, आ+दृ फाड़ना) ु० अपमान, हलकापन बेइज्ज़ती ॥

सं० अनादि (अ=नहीं, आदि पहले) गु० जिसका शुरूअनहीं, अविनाशी, सदारहनेवाला ।

सं० अनामय (अ=नहीं, आमय= रोग, अम्=बीमार होना) गु० निरोग, भला चंगा, बिन रोग, भा० पु० अरोग्यता, निरोगपन, निरोगता, सेहत ।

सं० अनायास (अ=नहीं, आयास =मिहनत, आ=सब तरह में, यस्= मिहनत करना) गु० बिन मिहनत, सहज, सुगम, भा० पु० सुगमता, आसानी, चैन, सुख ।

सं० अनाहार (अ=नहीं, आहार= खाना) पु० उपास, लंघन, भूखा रहना, फाक़ाकशी ।

सं० अनित्य (अ=नहीं, नित्य=सदा) गु० जो सदा नहीं रहे, नाशवान्, नाशहोनेवाला, झूठा ।

सं० अनित्यता भा० स्त्री० अस्थिरता, फ़ना, नापायदारी ।

सं० अनियत (अ=नहीं, नियत= निश्चित, नि+यम) र्म० पु० अनिश्चित, संदिग्ध इत्तिफ़ाक़िया ।

सं० अनिरुद्ध (अ=नहीं, निरुद्ध= रोका हुआ नि, रुध्=रोकना अर्थात् जो किसी से नहीं रोका जाय) पु० प्रद्युम्न का बेटा श्रीकृष्णका पोता और ऊषा का पति, कहते हैं कि अनिरुद्ध शत्रुघ्न का अवतार था गु० जो रोका नहीं जाय ।

सं० अनिर्वचनीय / अनिर्वाच्या (अ+निः+वचनीय—कहने योग्य) जो कहने योग्य न हो, अकथ्य ।

सं० अनिशम्—क्रि०वि० प्रतिदिन, रोजमर्रा ।

सं० अनिल (अन्=जीना) पु० पवन, हवा, वायु, बाव, बयार, बतास संख्या ४९ ॥

स० अनिष्ट (अन्+इष्ट, इष्=चाहना) अप्रिय, अनिच्छित, खराव, बेचाहा ।

प्रा० अनी (सं= अणी स्त्री० नोकतीषी धार, २ सं०अनीक) स्त्री० फौज, सेना, दल, कटक ।

सं० अनीक (अन्=जीना अर्थात् जिससे रक्षा होती है) स्त्री० सेना, फौज, कटक ।

सं० अनीति (अ=नहीं + नीति= अच्छा चलन) स्त्री० अन्याय, कुचाल, बुरा चलन ।

सं० अनीप (अनी=सेना, पा=रक्षा करना) क०पु०-सेनापति, सरदार ।

सं० अनीह (अ=नहीं + ईहा=सुध, इच्छा, चेष्टा) गु० जिसको कुछ चाह नहीं, चेष्टारहित २ निर्गुण, बेरूप ३ आलसी, ढीला, बोदा, अयोध्याके एक राजा का नाम ।

सं० अनीहा (अन्+ईहा) भा० स्त्री० उदासीनता, बेपरवाही ।

सं० अनु-उप० पीछे, साथ, अनुसार, बराबर, पास, अनुकरण, नकल, हरएक, कम, थोड़ा ।

सं० अनुकथन (अनु पीछे + कथ्= कहना) भा०पु० कहे के पीछे कहना, बारंबार कहना, ताईद करना ।

सं० अनुकम्पा (अनु+कप कांपना) भा० स्त्री० दया, कृपा, मेहरबानी ।

सं० अनुकरण (अनु=नकल, कृ= करना) पु० नकल करना, अनुरूप ।

सं० अनुकूल (अनु साथ, कूल घेरना) गु० सहाय करनेवाला मददगार, कृपालु, दयालु, मिहरबान, अनुसार, मुवाफिक ।

सं० अनुक्रम (अनु=पीछे क्रम= चलना) गु० क्रमानुसार-तर्तीबवार, क्रमशः भा० पु० प्रबंध, सूचीपत्र, फेहरिस्त ।

सं० अनुग- (अनु=पीछे+गम्= जाना) क० पु० अनुचर, सेवक, ताबेदार ।

सं० अनुगति (अनु=पीछे, गति= चाल) भा० स्त्री० अनुमति, सम्मति, मर्जी, आज्ञा ।

सं० अनुगामी (अनु=पीछे, गामी =चलनेवाला, गम्=चलना) क० पु० पीछे चलनेवाला, पु० साथी २ नौकर, पैरोकार ।

सं० अनुग्रह (अनु=पीछे, ग्रह=लेना) भा०पु० कृपा, मिहरबानी, प्रसन्नता, दया ।

सं०अनुगृहीत (अनु=पीछे+गृहीत,गृह=लेना) कर्म०पु० दयाकिया गया, निवाजागया, इहसानमन्द ।

सं०अनुचर (अनु=पीछे, चर=चलनेवाला, चर=चलना) पु० नौकर, दास, सेवक, चाकर, पीछेचलने वाला, २ साथी ।

सं०अनुचरी (अनुचर) स्त्री०दासी, लौंडी, बांदी ।

सं०अनुचित (अ=नहीं, उचित=ठीक) गु० अयोग्य, ठीक नहीं, नामुनासिब ।

सं०अनुज (अनु=पीछे, ज=पैदाहो, जन्=पैदाहोना) पु० छोटाभाई ।

सं०अनुजा (अनुज) स्त्री० छोटी बहन ।

सं०अनुजीवी (अनु=पीछे, जीविन्=जीनेवाला, जीव=जीना) क० पु० नौकर, दास, सेवक, चाकर, पराधीन ।

सं०अनुज्ञा (अनु=पीछे, ज्ञा=जानना) भा० स्त्री० आज्ञा, अनुमति, हुक्म, चिताना, ताकीद ।

सं०अनुतप्त (अनु=पीछे+तप्त=तपा हुआ) क०पु० दुःखसे भराहुआ, रंजीदा ।

अनुताप (अनु+तप=तपना) भा०पु० पश्चात्ताप, अफ़सोस ।

सं० अनुदिन (अनु=हरएक दिन) क्रि० वि० हरएक दिन, दिन दिन, सदा, प्रतिदिन, रोज़मर्रा ।

सं०अनुनय (अनु+नी=लेजाना) भा० पु० विनय, शिक्षा, अदब, नसीहत ।

सं० अनुनासिक (अनु=पीछे, नासिका=नाक) गु० सानुनासिक, जो अक्षर मुंह और नाकसे बोलेजायँ, जैसे (ङ,ञ,ण,न,म) और अनुस्वार ।

सं०अनुपकारी (अन्+उप+कारी, कृ=करना) क० पु० उपकार रहित, बेफ़ैज़ ।

सं० अनुपम (अ=नहीं, उपमा=बराबरी) गु० अनूप, उत्तम, अपूर्व, जिसकी बराबरी न होसके बेमिसाल, बेनज़ीर ।

सं०अनुपयुक्त- कर्म० पु० अयोग्य नामुनासिब ।

सं०अनुपल (अनु=क्रम थोड़ा, पल=निमेष,) पु० पल का, साठवां हिस्सा, सेकण्ड ।

सं०अनुपात (अनु० पीछे, बराबर पत्=गिरना) पु० त्रैराशिक,बराबर सम्बन्ध ।

सं०अनुपान (अनु + पा=पीना) ण० औषधिकासहकारी, सहयोगी, जरिया, बदर्का ।

सं०अनुबन्ध (अनु + बन्ध=बांधना) बांधना, मिलाना, मेल, मिलाप, धातुका गण सूचक पूर्वपर अक्षर ।

सं०अनुभव (अनु=पीछे, भू=होना) भा० पु० ज्ञान, यथार्थज्ञान, विचार, अनुमान, सोचना, समझना, बूझना, तजरुबा ।

सं०अनुमत (अनु + मत्, मन्=सोचना) र्म० पु० सलाह दियागया।

सं०अनुमति–भा०स्त्री० सलाह, सम्मति ।

सं०अनुमान (अनु=पीछे, मा=मापना) भा०पु० अन्दाज़ा, अटकल, विचार, क़यास, तख़मीना ।

सं०अनुमानी–क० पु० विचारनेवाला, अन्दाज़ करनेवाला ।

सं०अनुमित (अनु + मित, मा=मापना) र्म० पु० अटकला गया, क़यास कियागया ।

सं०अनुमेय (अनु + मेय–मा=मापना) र्म०पु०अन्दाज़ के लायक़।

सं०अनुमोदन (अनु + मुद=हर्षित होना) प्रशंसा, समर्थन, ताईदकरना।

सं०अनुमोदित (अनु + मुद) क० पु० आह्लादित, आनन्दित, खुश ।

सं०अनुयायी (अनु=पीछे, यायी=जानेवाला, या=जाना) क०पु०पीछे जानेवाला, दास, नौकर, अनुचर पैरोकार ।

सं०अनुयोग (अनु + युज्=मिलना) भा०पु० तिरस्कार, निरादर, बेक़दरी !

सं०अनुयोजन–भा०पु० पूंछ पांछ, अपील ।

सं० अनुयोक्ता } (अनु + युज=मि-
अनुयोजक } लना, मिलाना)
पूंछपांछ करनेवाला, अपीलांट, अर्थात् अपील दायर करनेवाला।

सं०अनुयोज्य–र्म०पु० निन्दायोग्य क़ाबिल, हिक़ारत, रिस्पांडेंट अर्थात् वह जिसपर अपील कीजाय ।

सं०अनुरक्त (अनु=साथ + रञ्ज्=रंगना) क० पु० प्रेमी, अनुकूल, शायक़, आशिक़ ।

सं०अनुराग (अनु=साथ, रञ्ज्=रंगना) भा०पु० प्यार, स्नेह, प्रीति, छोह, मोह, मुहब्बत ।

सं०अनुरागी–क० पु० प्रेमी, स्नेही, मुहब्बती ।

सं०अनुराधा (अनु=पीछे, राधा=विशाखा नक्षत्र, राध् = पूराकरना) स्त्री० सत्तरहवां नक्षत्र ।

सं०अनुरुद्ध } (अनु + रुध् = रोक-
अनुरोधित } ना) र्म० पु०रोका
गया, क़ैदकियागया ।

सं० अनुरूप(अनु = बराबर, रूप =

डौल) गु० बराबर, तुल्य, समान, एकसा, सदृश, अनुसार, अनुहार ।

सं०अनुशासक (अनु + शास्=सिखाना) क० पु० हाकिम ।

सं०अनुरोध }
अनुरोधन } (अनु + रुध्) भा० पु० अपेक्षा, निस्बत २ रोकना, ३ आज्ञापालन, आशय, सम्मति, तामील लिहाज ।

सं०अनुरोधक }
अनुरोधी } क० पु० रोकनेवाला आज्ञापालक, फ़र्मांबरदार ।

सं०अनुलेप }
अनुलेपन } (अनु + लिप्=लगाना,) भा० पु० उबटन लगाना, तेल लगाना, सुगंधादिकलेप।

सं०अनुलोम (अनु=पीछे + लोम=बाल) गु० बालसहित, यथाक्रम, विलोम ।

सं०अनुवाद (अनु + वद्=कहना) भा० पु० बारबार कहना, उल्था, तर्जुमा ।

सं०अनुवृत्ति (अनु + वृत्ति=वर्त्तना) मार्ग, सेवा, जरिया, तामील ।

सं०अनुवेदना (अनु + विद्=विचारना) भा० स्त्री० सहानुभूति, हमदर्दी ।

सं०अनुवर्जन }
अनुवर्तन } (अनु + वृज, वृज्=जाना, वर्त्तना) पीछेचलना, अनुगमन, पैरवीकरना।

सं०अनुशासन (अनु=पास, शास्=सिखाना) भा० पु० आज्ञा, हुक्म, शिक्षा, सीख ।

सं०अनुशीलन (अनु + शील=अभ्यास करना) भा० पु० आलोचन, अभ्यास करना, सेवन ।

सं०अनुशोचन (अनु + शुच=रंज करना) भा० पु० पश्चात्तापकरना, अफ़सोस करना ।

सं०अनुष्ठान (अनु + स्था=ठहरना) भा० पु० आरम्भ, आग़ाज़ अमल ।

सं० अनुसन्धान (अनु=पीछे, सम्=अच्छी तरह से, धा=रखना) पु० खोज, पता, खोजना, तलाश, अन्वेषण, साजिश, तहक़ीक़ात, पूछ पांछ, क़स्द, प्रबन्ध, इन्तिज़ाम ।

प्रा०अनुसरना }
अनुहरना } सं० (अनु + सरण, अनु=पीछे, सृ=जाना) क्रि० अ० पीछे चलना, २ साथ चलना ।

सं०अनुसार (अनु=पीछे, सृ=जाना) भा० पु० बराबर, मुताबिक़, समान ।

सं०अनुस्यूत=ओतपोत, परस्पर, बाहम, खलतमलत ।

सं०अनुस्वार (अनु=पीछे, बराबर, स्वृ=शब्द करना) पु० स्वरके सिरपर की बिंदी ं ।

प्रा०अनूठा पु० अनोखा, नया, अपूर्व ।

प्रा०अनूप }
अनुप } (सं० अनुपम) गु० जिसकी बराबरी नहीं,

उत्तम, श्रेष्ठ, सबसेअच्छा, बेमिस्ल, २ दलदल ।

सं० अनृत (अन्=नहीं, ऋत=सांच, ऋ=जाना) गु० झूठा, स्त्री० झूठ ।

सं०अनेक (अन्=नहीं, एक) गु० बहुत,ढेर,अधिक,कईएक,एकनहीं ।

प्रा०अनैसे-क्रि०वि० कुदृष्टिसे टेढे ।

प्रा०अनोखा गु० अनूठा, अद्भुत ।

सं०अन्त (अम्=जाना) पु० सीमा, आखिर,सिरा, खूंट, सींव, समाप्ति, पूराहोना, २ नाशहोना, मौत, गु० पिछला, शेष, निदान ।

सं०अन्तःकरण (अन्तर=भीतर करण=इन्द्री)पु०मन,चित्त,हृदय,जी।

सं०अन्तःपुर-पु० स्त्रियों के रहने का घर, जनानखाना, हरम ।

सं०अन्तकाल (अन्त=पिछला,काल=समय) पु० मरनेकासमय,मौत का समय,मौतकी घड़ी।

प्रा०अन्तड़ी (सं० अन्त्र, अति=बांधना) स्त्री० आंत, अन्तरी ।

सं०अन्तर (अन्त=सीमा, रा=देना) पु० भीतर, बीच,बीचकी जगह, दूरी, २ मन, ३ भेद, फ़रक़, गु०और क्रि० वि० भीतर, बीच में ।

सं०अन्तरकथा (अन्तर=बीच की कथा=बात) स्त्री० बात में बात ।

सं०अन्तरंगमित्र पु० दिली दोस्त।

सं०अन्तरंगसभा (अन्तर+ग+सभा)सभाकेअन्तरसभा,छोटीसभा।

प्रा०अन्तरा (सं० अन्तर) पु० भजन अथवा गीत आदि का चरण पद, गु० बीचका पास ।

प्रा०अन्तरिया (सं०अन्तर) पु० तिजारी, जोतपएकदिनबीचमेंआकर तीसरेदिन फिरआवे, अन्तरा,तप।

सं०अन्तरिक गु०भितरी,अन्दरूनी ।

सं०अन्तरिक्ष } (अन्तर=स्वर्गऔर
अन्तरीक्ष } पृथ्वी के बीच, ईक्ष=देखना, वा अन्तर भीतर, ऋक्ष, तारा अर्थात जिसमें तारे हैं) पु० आकाश, शून्य, अधर ।

सं०अन्तरित (अन्तर्+इत=गया हुआ) मध्यका,बीचका,दर्मियानी।

सं०अन्तरितकृषक (अन्तरित+ कृषक, कृष्=जोतना) क०पु०शिकमीकाश्तकार, वह किसान जो मौरूसी काश्तकार से लेकर जमीन जोतता है ।

प्रा०अन्तरी (सं०अन्त्र, अति=बांधना) स्त्री०आंत, अन्तड़ी ।

प्रा०अन्तरियांजलना बोल०बहुत भूख लगना, भूखोंमरना ।

प्रा०अन्तरीकाबलखोलना बोल० भूख में पेट भरके खाना ।

प्रा०अन्तरियोंमेंआगलगना-बोल० बहुत भूखा होना, बहुत भूख लगना, बहुत भूखों मरना ।

सं०अन्तरीप (अन्तर=भीतर, आप=पानी) पु० धरती का वह टुकड़ा जो समुद्र में दूर तक चला गयाहो, जैसे कन्याकुमारी ।

प्रा० अन्तर्जामी
सं० अन्तर्यामी } (अन्तर=मन यम्=ठहरना, फैलना) गु० मन की बात जानने वाला, घटघटनिवासी, पु० परमेश्वर, ईश्वर, परमात्मा ।

प्रा० अन्तर्धानहोना
अन्तर्ध्यानहोना } (सं० अन्तर्द्धान, अन्तर, भीतर=धा=रखना, पकड़ना) क्रि०अ०अलख होना, छिपजाना, नहीं दीखना, बिलाजाना, गुप्तहोना, गायब होना ।

सं० अन्तर्पट (अन्तर्=बीचमें, पट=कपड़ा) पु० परदा, ओट, आड़, कनात, टट्टी ।

सं० अन्तर्वृत्ति-धा०स्त्री०दिलीहाल ।

सं० अन्तर्हित (अन्तर्=भीतर, धा=रखना) गु० अन्तर्द्धान, छिपा, अलख, अदृश्य ।

सं० अन्तिक-पु०समीप, मित्र, चूल्हा-जेठी बहिन ।

सं० अन्तिम-गु० पिछला, आखिरी ।

सं० अन्त्रावलि (अन्त्र=आंत, अति बांधना, अवलि=पांत) स्त्री० बहुत सी अन्तड़ियां, अंतड़ियों की पांत । जैसे, धरिगाल फारहिं उरबिदारहिं गलअंत्रावलि मेलहीं रामायणलं० ।

सं० अन्ध (अन्ध=अंधा होना) गु० अंधा, सूरदास, बिन आंखका, पु० अंधेरा ।

सं० अन्धकार (अन्ध=अन्धा, कार=करनेवाला, कृ=करना) पु० अंधेरा, अंधियारा ।

सं० अन्धकूप (अन्ध=अन्धा, कूप=कुआं) पु० अन्धाकुआं, ऐसा कुआं जिस में घास पात जमजाता है और पानी नहीं होता ।

प्रा० अन्धड़ (सं०अन्धे) पु० आंधी, तूफान ।

सं० अन्धपरम्पराग्रस्त-गु० पु० पुरानी रीतों में फँसाहुआ क़दीम रस्मों में मुबतला ।

प्रा० अन्धला
अन्धा } (सं०अन्ध) गु० बिन आंख का, सूरदास, आंख फूटा, नेत्रहीन ।

प्रा० अन्धाधुन्धबोल० अंधेर, बेहिसाब, बेठिकाना, बहुतही बहुत अन्धों की तरह, आंख मूंदे ।

प्रा० अन्धाधुन्धलुटाना-बोल०उड़ाना, बेहिसाब खर्च करना, बेठिकाने, खर्च करना, बेफ़ायदह खर्च करना, आंख मूंदे खर्च करना ।

सं० अन्धसुत (अन्ध=अन्धा, सुत=बेटा) पु०अन्धेका बेटा अन्धे राजा धृतराष्ट्र का बेटा दुर्योधन ।

प्रा० अन्धियारा (सं० अन्धकार) पु० अंधेरा, अन्धकार ।

प्रा० अंधेर (सं०अन्धकार) पु०अंधेरा, अन्याय, बखेड़ा, उपद्रव, अन्धाधुन्ध, उत्पात, अनीत, बलवा, दंगा ।

प्रा० अंधेरकरना--बोल० अन्याय करना, अनीतकरना, उपद्रव करना, अन्धाधुन्ध करना ।

प्रा० अंधेरा (सं०अन्धकार) पु० अंधियारा, अन्धकार ।

प्रा० अंधेरीकोठरी-बोल० ऐसी कोठरी जिसमें अंधेरा हो, २ पेट गर्भस्थान, कोख, घरन।

सं० अन्न (अद्=खाना, वा, अन्=जीना) पु० नाज,अनाज, खाना।

सं० अन्नकूट (अन्न=खाना, कूट=ढेर) पु० दीवाली के दूसरे दिन का पर्व, जिस में हिन्दूलोग बहुत सा खाना और तरकारियां बनाकर अपने देवताओं को भोग चढ़ातेहैं।

सं० अन्नजल | अन्नपानी } बोल० दानापानी संयोग, पु०खाना पीना।

सं० अन्नदाता (अन्न=अनाज,दाता=देनेवाला, दा=देना) बोल०पालनेवाला, बचानेवाला, मालिक, दयावन्त, उपकारी, दाता।

सं० अन्नपूर्णा (अन्न=खाना,पूर्णा=भरनेवाली) स्त्री० दुर्गाका नाम, योगमाया, देवी।

सं० अन्नप्राशन (अन्न=अनाज वा खाना, प्राशन=खिलाना,प्र=शुरूअ, अश=खाना) पु० जब बालक छः महीनेका होताहै तब पहली बार अनाज अथवा खीरआदिखिलाना।

सं० अन्य (अन्=जीना) गु० और, दूसरा, गैर।

सं० अन्यतर-गु० कोई एक।

सं० अन्यथा (अन्य और, था=प्रकार अर्थमें प्रत्यय) क्रि०वि० और प्रकार से, और तरह से, नहीं तो गु० उलटा।

सं० अन्याय (अ=नहीं, न्याय=इन्साफ़, धर्म) बेइन्साफ़ी, अधर्म, उपद्रव, ज़ुल्म।

सं० अन्यायी (अन्याय) गु० अन्यायकरनेवाला, अधर्मी, दुष्टात्मा, ज़ालिम।

सं० अन्योन्य (अन्यः+अन्य) गु० आपस में, एक दूसरे को, परस्पर-बाहम।

सं०अन्योन्याश्रित-गु० एक दूसरे के साथ संबंध रखनेवाला, लाज़िम मल्ज़ूम।

सं० अन्वय (अनु=पीछे, इण्=जाना) पु० वंश, कुल, २ पदच्छेद, श्लोक के पदों का संबंध मिलाना, तरकीबनहवी।

सं० अन्वित-स्म० पु० युक्त,शामिल, पूरा।

सं० अन्वेषण (अनु=पीछे, इष=जाना) पु० खोजना,पतालगाना, हेरना, ढूंढना, तलाशकरना।

प्रा० अन्हवाना (अन्हाना) क्रि० स० नहलाना, अंगधोना, स्नान कराना।

प्रा० अन्हान (सं० स्नान वा अवगाहन) पु० स्नान, अन्हाना।

प्रा०अन्हाना (सं० अवगाहन, वा स्नान) क्रि० अ० अन्हाना, स्नान करना, शरीर साफ़ करना।

सं०अप, उप० से, उलटा, हानि, नहीं, बुरा, भेद, छिपाव, बुरीतरह से, अलग, भिन्न।

सं०अपकर्ष (अप + कृष्=खींचना) भा० पु० खींचना, न्यूनता, निरादर।

सं०अपकार (अप=उलटा, वा बुरा वा हानि, कृ=करना) भा० पु० बिगाड़, बुराकरना, हानि।

सं०अपकारी—क० पु० हानि करने वाला, नुक़सान करनेवाला।

सं०अपकीर्त्ति (अप=बुरा, कीर्त्ति =यश) भा० स्त्री० बुराई, बदनामी, अपयश, कुयश।

सं०अपक्क—गु० कच्चा, खाम।

सं०अपगति—भा० स्त्री० दुर्दशा, बुरीहालत।

सं०अपगा (अप=नीचे, गम्=जाना) स्त्री० नदी, दरिया।

सं०अपचय (अप + चि=चुनना) भा० पु० गिरना, हानि, नुक़सान।

प्रा०अपडर—भा० पु० मिथ्याडर, अपना से डर।

प्रा०अपत—गु० पापी, अप्रतिष्ठित, बेइज्जत।

प्रा०अपति (सं० आपत्ति) भा० स्त्री० अपमान, मुसीबत, बेइज़्ज़ती, २ पति रहित, उपपति।

सं०अपत्य (अ=नहीं, पत्=गिरना) जिसकेद्वारा पितर न गिरनेपावें, पुत्र, सन्तान, औलाद।

प्रा०अपना—सं० सर्वना० निजका, आपका।

प्रा०अपनीगाना, बोल० अपनी तारीफ़ करना, अपनेतईं सराहना।

प्रा० अपनाना—क्रि० स० अपना करना।

प्रा०अपनायत—स्त्री० नाता, संबन्ध, भाईचारा, घराना।

सं०अपनीत (अप + नीत—नी=ले जाना) कर्म० पु० हटायागया, दूर कियागया।

सं०अपभ्रंश (अप=से, भ्रंश गिरना) भा० पु० गँवारी बोल चाल, व्याकरण की रीति से अशुद्ध शब्द-व्याकरणविरुद्धशब्द, बिगड़ाहुआ शब्द।

सं०अपमान (अप=उलटा, मान= आदर) पु० अनादर, निरादर, तिरस्कार, हलकापन, बेइज़्ज़ती।

सं०अपयश (अप=उलटा, यश= नामवरी) पु० बुराई, बदनामी, अपकीर्त्ति, बुरानाम।

सं०अपर (अ=नहीं, पृ=भरना वा अ=नहीं, पर=दूसरा) गु० और

दूसरी, एक और, दूसरा कोई ।

सं०अपरमित (अ+पर+मित-मा=नापना,मापना) बेपरिमाण,बेहद, अनगिनत ।

सं०अपरम्पार (अ=नहीं, पर=दूसरा,पार=अन्त) गु० अपार, अनंत, बेहद, जिसका पारनहीं ।

सं०अपराध (अप=बुरीतरहसे, राध्=पूराकरना) पु० पाप, दोष, अधर्म, अन्याय, जुर्म, गुनाह ।

सं०अपराधी (अपराध) क० पु० पापी, दोषी, अधर्मी, गुनाहगार, मुजरिम ।

सं०अपराह्ण (अपर=पिछला, अह्न =दिन) पु० तीसरापहर,से पहर ।

सं०अपरिचित —गु० बजान पहिचान, अनजान, अजनबी ।

सं०अपरिष्कार — भा०पु० अपवित्रता, मैलापन ।

सं०अपवर्ग (अप=भिन्न, अलग-वर्ग=पद, दर्जा, अर्थात् सब दर्जों से अलग और बढ़कर है) पु० मुक्ति, मोक्ष,परम्पद, परमगति,छुटकारा, निस्तारा, उद्धार, नजात ।

सं०अपवाद (अप=बुरा, वद=कहना) पु०गाली, निन्दा,दोष,बुराई, बदनामी ।

सं०अपवाहन –(अप+वह=लेजाना, फुसलाना, लोगों को बहका लेजाना) एक राज से दूसरे राज में लेजाकर बसाना ।

सं०अपवित्र –(अ=नहीं, पवित्र=शुद्ध) गु० अशुद्ध,मैला, अपावन, नापाक ।

सं०अपशकुन (अप=बुरा, शकुन =सगुन) पु० बुरासगुन, बुराजतलानेवाला, अशुभजतलानेवाला चिह्न ।

सं०अपशब्द (अप=बुरा, शब्द) पु० बुराशब्द, अशुद्धशब्द, ऐसा शब्द जिसका कुछ अर्थ नहीं, मुहमिल २ पाद, गोज ।

सं०अपहरण (अप=अलग, हृ=लेजाना) भा० पु० कुरकी ।

सं०अपहरित –र्म० पु० छीनलियागया हरलियागया ।

सं०अपहारी –क० पु० हरनेवाला ।

सं०अपहृत –र्म० पु०कुर्कतहसील ।

सं०अपादान (अप=से, आदान=लेना) भा० पु०जुदाकरना,विभाग २ व्याकरण में पांचवां कारक ।

सं०अपान (अप=नीचे+अन्=जीना) पु० शरीर के पांच पवनों में से एक जो गुदा से निकलती है, अधोवायु, गोज, २ कहार ३ वरुण गु० अपना, २ पानरहित ।

सं०अपाय (अप=बुरीतरहसे, इण्=जाना) पु० विगाड़, नाश, हानि २ जुदा होना ।

सं० अपार (अ=नहीं, पार=अन्त) गु० अनन्त, अपरम्पार, अनमिलत, बेहद ।

सं० अपावन (अ=नहीं, पावन=पवित्र) गु० अशुद्ध, अपवित्र, मैला ।

प्रा० अपाहज-गु० लूला, लँगड़ा, सुस्त ।

सं० अपि-उप० भी, तिसपर भी, इसके सिवाय, इसपर भी, बल्कि, यहांतक, तोभी, तब भी, जोभी, यद्यपि, निश्चय, केवल, और भी, पास, मिला हुआ ।

अं० अपील=अनुयोजन, मुराफ़ा, दुबारा नालिश, बड़े हाकिम से फ़रयाद ।

अं० अपीलाँट अनुयोजक, अपील-करनेवाला ।

प्रा० अपूत (सं० अपुत्र, अ=नहीं, पुत्र=बेटा) गु० बिन लड़केवाला, निर्वंश, २ कुपूत ।

सं० अपूत (अ=नहीं, पू=पवित्रकरना) र्म्म० पु० अपवित्र, नापाक ।

सं० अपूर्ण (अ=नहीं, पूर्ण=पूरा) गु० पूरा नहीं, अधूरा, नातमाम ।

सं० अपूर्व (अ=नहीं, पूर्व=पहले, अर्थात् जो पहले न देखा गया) गु० जिसको पहले कभी नहीं देखा हो, उत्तम, अनूप, अनोखा, नया, अजीब ।

सं० अपृष्ट (अ=नहीं, प्रच्छ=पूंछना) र्म्म० पु० बे पूंछे ।

सं० अपेक्षा (अप, ईक्ष=देखना) स्त्री० आशा, भरोसा, इच्छा, ख़्वाहिश, जरूरत २ सम्बन्ध, निस्बत ।

सं० अपेय (अ+पेय, पा=पीना) र्म्म० पु० नहीं पीने योग्य ।

प्रा० अपेल (अ=नहीं, पेलना=टालना) गु० अचल, अटल, अमिट ।

सं० अप्रकाशित-र्म्म० पु० प्रकाशहीन, अँधेरा, तारीक ।

सं० अप्रचारित र्म्म० पु० चलन बाहर, ग़ैर मुरौवज ।

सं० अप्रतिष्ठा (अ=नहीं, प्रतिष्ठा=बड़ाई) भा० स्त्री० अपयश, अपमान, बुराई, बदनामी ।

सं० अप्रतिहत र्म्म० पु० बेरोक, नाशरहित, सावधान ।

सं० अप्रधान (अ=नहीं, प्रधान=मुख्य) गु० जो मुख्य नहीं, अमुख्य, २ आधीन ।

सं० अप्रमाणिकोन्नति (अ+प्रमाणिक+उन्नति) भा० स्त्री० शर्तीतरक्की ।

सं० अप्रमाणीय-गु० अविश्वासीय, बे एतिबार ।

सं० अप्रमेय (अ=नहीं, प्रमेय=मापने योग्य, प्र=बहुत, मा=मापना) र्म्म० पु० अपार, अनन्त ।

सं० अप्रसन्न (अ=नहीं, प्रसन्न=खुश, हर्षित) गु० दुखी, मलीन, उदास, नाराज ।

सं० अप्रिय (अ=नहीं, प्रिय=पि-

यारा) गु० दुःखदायी, नापसन्द, नागवार, पु० शत्रु, दुश्मन।

सं० अप्रीतिकर-क० पु० निठुर, बे मुहब्बत, बे खुल्क, बे उन्स।

सं० अप्सरा (अप्=पानी, सृ= चलना, अर्थात् जो समुद्र से पैदा हुई, वा जिसको न्हानेकी बहुत रुचिहो) स्त्री० स्वर्ग की स्त्री, इंद्रकी सभा में नाचनेवाली, उर्वशी, रम्भा आदि।

प्रा० अफल (अ=नहीं, फल=लाभ) गु० वृथा, निष्फल, बे फ़ायदा।

प्रा० अफसोस अह: ओह, अचम्भा, पछताव।

प्रा० अब (सं० अद्य) क्रि० वि० इस घड़ी, इस समय, अभी २, इसके पीछे।

प्रा० अबका-बोल० इस बार का।

प्रा० अबकी-बोल० इस बार, इस बरस।

प्रा० अबतक, अबतलक, अबतोड़ी } बोल० इस घड़ी तक, इस समय तक।

प्रा० अबतब होना-बोल० मौतका समय पास आना, मरनेपै होना।

सं० अबन्धित (अ=नहीं, बन्ध्= बांधना) स्म० पु० बन्धनरहित, अयुक्त, स्वच्छन्द, मुक्त।

सं० अबल अ=नहीं, बल=ज़ोर, गु० पु० निबल, निर्बल, दुबला, कमज़ोर।

सं० अबला (अबल) गु० स्त्री० निबली, दुबली, कमज़ोर, स्त्री० लुगाई, स्त्री, नारी।

सं० अवाक् -अ=नहीं, वाक्=बोल, गु० अबोल, चुप, गूंगा मौन।

सं० अबुध -अ=नहीं, बुध=पंडित, गु० अबूझ, मूर्ख, असमझ, अज्ञानी, बेवकूफ़, जाहिल।

प्रा० अबूझ (सं० अबुध) गु० मूर्ख, असमझ, अनसमझ, अज्ञानी।

प्रा० अबेर (सं० अवेला, अ=नहीं, बेला=समय) स्त्री० देरी, देर, ढील, विलम्ब, कुवेला।

प्रा० अबोल (अ=नहीं, बोल=बोलना) गु० चुपचाप, अवाक्, खामोश।

सं० अब्ज (अप्=पानी, जन्=पैदा होना) पु० कमल, पद्म, २ चांद, चौदह रत्न जो समुद्र से निकले।

सं० अब्द (अप्=पानी, दा=देना) पु० बादल, मेघ, २ बरस, साल।

सं० अब्धि (अप्=पानी, धा=रखना) पु० समुद्र, सागर, सातकी गिनती।

सं० अभय (अ=नहीं, भय=डर) गु० निडर, निर्भय, निधड़क।

सं० अभयदान-भा० पु० शरण- देना, जानबख्शी।

प्रा० अभाग (सं० अभाग्य) पु० बुराभाग, दुर्दशा, खोटी दशा, बद क़िस्मती।

प्रा॰ अभागा (सं॰ अभाग्य) गु॰ मन्दभागी, भाग्यहीन, कमबख़्त, अभागी ।

सं॰ अभाग्य (अ=नहीं, भाग्य=भाग) पु॰ अभाग, बुराभाग, बुरी दशा, दुर्दशा, कुदशा, गु॰ अभागा, मंदभागी, कमबख़्त ।

सं॰अभाव (अ=नहीं, भाव=होना, भू=होना) पु॰ नहीं होना, नाश, अदममौजूदगी ।

सं॰ अभि–उप॰ पास, को, इच्छा, चाह, बार बार, चारोंओर से, बहुत, साम्हने, ऊपर, अधिक, पहिले ।

सं॰ अभिख्या-स्त्री॰ शोभा, सुंदरता, खूबसूरती ।

सं॰ अभिगमन–भा॰ पु॰ निकट जाना, पासजाना ।

सं॰ अभिजित-पु॰ नाम नक्षत्र जो उत्तराषाढ के चतुर्थ चरण और श्रवण के प्रथम चरण से बनता है, योधा, जीतने वाला ।

सं॰ अभिधान–पु॰कोष, शब्दसंग्रह, लुग़त ।

सं॰अभिनय-पु॰ नाटक का खेल ।

सं॰अभिप्राय (अभि=चाह, प्र=बहुत, इण्=जाना, वा अभि=चाह, प्रिञ्=पूरा करना) पु॰मतलब, प्रयोजन, अर्थविचार, इरादा, मनोरथ, आशय, इच्छा, चाह, सम्मति ।

सं॰अभिप्रेत-र्म॰ पु॰ वांछित, मुराद मक़सूद ।

सं॰अभिमत (अभि=बहुत, मत्=मानना वा जानना) र्म॰ पु॰ चाहाहुआ, मानाहुआ, पसंद कियाहुआ, सम्मत वांछित ।

सं॰ अभिमर्षण (अभि+मृष्=छूना) भा॰ पु॰ सम्भोग, सुहबत परस्त्रीगमन, छूना ।

सं॰अभिमान (अभि=ऊपर, अधिक, मन्=जानना) पु॰ घमंड, अहंकार, मद, दाप, दर्प, ग़रूर, शेखी, अकड़ ।

सं॰ अभिमानी (अभिमान) क॰ पु॰ घमंडी, अकड़बाज़, शेख़ीबाज़, अहंकारी ।

सं॰ अभियुक्त } अभियोग्य } (अभि=सामने, युज्=जोड़ना) र्म॰ पु॰ प्रतिवादी, मुद्दआअलेह ।

अभियोग पु॰नालिश, मुक़द्दमा ।

सं॰अभियोगी } अभियोजक } अभियोक्ता, क॰ पु॰वादी, मुद्दई ।

सं॰ अभिमुख (अभि=सामने, मुख=मुंह) शब्दयो॰ अव्य॰ सामने, रूबरू, पेश ।

सं॰अभिराम (अभि=साम्हने, रम्=खेलना) गु॰सुन्दर, प्यारा, मनोहर ।

सं॰अभिलाष } अभिलाषा } (अभि=बहुत, लष=चाहना) भा॰स्त्री॰ इच्छा, चाहना, कामना, चाह ।

सं०अभिलाषी } क० पु० चाहने
अभिलाषुक } वाला, लोभी, ख़्वाहिशमन्द, आर्ज़ूमन्द ।

सं० अभिवादन (अभि + वद् = कहना) स्तुति, नमस्कार, बंदगी ।

सं० अभिषिक्त (अभि=सामने, षिक्त सिच्=सींचना) र्म्म० पु० तिलक कियागया ।

सं०अभिषेक (अभि=ऊपर, सिच्=सींचना) भा० पु० राजतिलक देने केसमयका स्नान, २ मंत्र देते समय शिरपर पानीडालना, शान्ति स्नान।

सं० अभिसन्धान-भा० पु० मिलाप, २ कपट ।

सं० अभिसन्धि-भा०स्त्री० खूबमेल, धोखा ।

सं० अभिसम्पात- पु० संग्राम, युद्ध, नाश ।

प्रा० अभी (अब + ही) क्रि० वि० इसी घड़ी, इसीदम, इसीसमय, तुरन्त।

सं० अभीरु (अ=नहीं, भीरु=डरनेवाला) गु० निर्भय, निर्दोष, पु० महादेव, भैरव, शतावरि।

सं०अभीष्ट (अभि=बहुत, इष्ट=चाहा हुआ, इष्=चाहना) र्म्म०पु०चाहा हुआ, बहुत चाहाहुआ, मनमाना, प्यारा, चहीता, पसन्द ।

सं०अभूतपूर्व-र्म्म० पु० जैसा कभी पहले नहीं हुआ, अद्भुत, अजीब ।

अभ्यन्तर-गु० भीतरी, अंदरूनी ।

सं०अभेद (अ=नहीं, भेद=छिपीबात) गु० जिसका भेद नहीं जाना जाय, २ जाना हुआ, ३ जो नहीं टूटसके, जिसमें कुछ नहीं घुससके, पु० मेल ।

सं०अभ्यर्थना (अभि=सामने, अर्थना=मांगना) भा०स्त्री०निवेदन, दरख़्वास्त।

अभ्यस्त-र्म्म० पु० आदी, खूगर ।

सं०अभ्यागत (अभि=सामहने, पास, आगत=आयाहुआ, आ, गम्=आना) पु० पाहुना, अतिथि, मेहमान गु० आया हुआ ।

सं० अभ्यास (अभि=बारबार, अस् फेंकना, और अभि उपसर्ग के साथ आनेसे इसका अर्थ दोहराना होता है) पु० साधन, चिंतन, बारबार करना, रब्त, मश्क़ ।

अभ्यासक } क० पु० अभ्यासक-
अभ्यासी } रनेवाला ।

अभ्युदय (अभि + उदय, उत् + इ=जाना) भा०पु०वृद्धि, ऐश्वर्य्य, इज़्ज़त।

सं० अभ्र (अभ्र=जाना) पु० बादल, मेघ, २ आकाश, अभ्र ।

सं० अमङ्गल- (अ=नहीं, मङ्गल=कुशल, कल्याण) गु० अशुभ, बुरा, पु० अकल्याण, अशुभ ।

प्रा० अमचूर (सं० आम्रचूर्ण, आ-

म्र=आम- चूर्ण=चूर) पु० सुखाये आम के टुकड़े वा फाँक ।

सं० अमत-गु० मतरहित, धर्महीन, लामजहब ।

सं०अमर (अ=नहीं, मृ=मरना) गु० जो कभी नहीं मरे, अविनाशी, सदा जीतारहनेवाला- पु० देवता, २ अमरकोप का बनानेवाला ।

सं०अमरपति (अमर=देवता, पति=स्वामी) पु० इन्द्र, देवताओंका राजा ।

अमरपुर } (अमर=देवता,
सं०अमरलोक } पुर, लोक=जगह) पु० स्वर्ग- बहिश्त ।

प्रा० अमराई (सं०आम्रराजि, आम्र=आम-राजि=क़तार) स्त्री० आंबों का बाग़ ।

सं०अमरावती (अमर=देवता, वत्=वाली) अर्थात् जिसमें देवता रहते हैं, स्त्री० स्वर्ग, इन्द्रकी राजधानी, देवलोक ।

प्रा० अमरूत (सं० अमृत) पु० एक फलका नाम, अमरूद ॥

सं० अमरेश (अमर=देवता, ईश=राजा) पु० देवताओंकाराजा, इन्द्र ।

प्रा०अमर्याद } (अ=नहीं, मर्यादा
सं०अमर्यादा } =मान, इज्जत) स्त्री० अनादर, अप्रतिष्ठा, अवज्ञा, हलकाई, हलकापन ।

सं० अमर्प (अ=नहीं, मर्ष=क्षमा) भा० पु० क्रोध, असह्य, गुस्सा ।

सं० अमात्य-पु० भूमिकामंत्री, वज़ीर आराज़ी ।

सं०अमल (अ=नहीं, मल=मैल) गु० निर्मल, शुद्ध, साफ़, पवित्र, स्वच्छ ।

प्रा० अमलतास-पु० एक औषध का नाम ।

सं० अमान (अ=नहीं, मान=गर्व) गु० मानरहित, निरहंकार, बेग़रूर ।

प्रा० अमाना (सं० मान, मा=मापना) क्रि० अ० समाना, भरजाना ।

सं०अमाय- गु० कपटरहित, बेमक्र ।

सं० अमाया-भा० स्त्री० सचाई, दियानतदारी ।

प्रा० अमावस } (अमा=साथ
सं०अमावस्या } वस=रहना, अ-
सं०अमावास्या } र्थात् जिसदिन सूर्य और चांद एक राशिमें रहते हैं, अमा सह वसतोऽस्याश्चन्द्राकौं अमावस्या, अमावास्या) स्त्री० अंधेरे पक्षकी पंदरहवीं तिथि, मावस ।

सं० अमित (अ=नहीं, मित=मापा हुआ, मा=मापना) गु० अप्रमाण, अपार, बेहद, बेठिकाने, जो नापने में नहीं आवे ।

प्रा० अमिय } (सं० अमृत) पु० अ-
अमी } मृत, सुधा, पीयूष, आब हयात ।

सं० अमुक (अदस्=यह) गु० वह, यह, कोई, अमकाढमका, फलाना, फुलां ।

सं० अमूलक (अ=नहीं, मूल=जड़) बेजड़, बेबुनियाद, निर्मूल ।

सं० अमृत (अ=नहीं, मृ=मरना) पु० अमी, सुधा, पीयूष, देवताओं का खाना अथवा रस जिसको पीने से अमर होजाते हैं) आबहयात ।

सं० अमोघ (अ=नहीं, मोघ=वृथा, मुह्=अचेतहोना) गु० सफल, सच्चा, फलदाता, जोखालीनजाय, बेखता ।

प्रा० अमोल (सं० अमूल्य, अ=नहीं, मूल्य=मोल) गु० अनमोल, उत्तम, बहुतही बढ़िया, अनोखा, अपूर्व ।

प्रा० अम्ब, आंब, आम } (सं० आम्र, अम् =खाना, जाना) पु० आमका पेड़, आम का फल ।

सं० अम्बक (अम्ब्=जाना) पु० आंख, लोचन, नेत्र, नयन ।

सं० अम्बर (अबि=शब्दकरना) पु० आकाश, आस्मान, २ कपड़ा, वस्त्र, नृपअम्बर=राजाओं के कपड़े, ३ सुगन्धित चीज, ४ अभ्रकधातु ।

सं० अम्बा, अम्बिका } (अम्ब्=जाना, जोप्यार के साथ अपने लड़के के पास जाती है) स्त्री० मा, माता, जननी, २ दुर्गा, देवी, भगवती, पार्वती, जगज्जननी ।

सं० अम्बु (अम्ब्=शब्दकरना) पु० पानी ॥

सं० अम्बुकण--पु० ओस, शबनम ।

सं० अम्बुज (अम्बु=पानी, ज=पैदा हुआ, जन्=पैदा होना) पु० कम्बल, पद्म २ चांद ।

सं० अम्बुद (अम्बु=पानी, द=देने वाला, दा=देना) पु० बादल, बदल, मेघ, घन, घटा, अब्र ।

सं० अम्बुधि (अम्बु=पानी, धा=रखना) पु० समुद्र, सागर, सिंधु ।

सं० अम्बुनिधि (अम्बु=पानी, निधि =जगह वा खज़ाना) पु० समुद्र, सागर, सिन्धु ।

सं० अम्बुनाथ (अम्बु=पानी, नाथ= मालिक) पु० समुद्र, सागर ।

सं० अम्बुवाह (अम्बु=पानी, वह= ले जाना) बादल, मेघ, अब्र ।

सं० अम्भस (अभि=शब्द करना) पु० पानी, जल, नीर, तोय, वारि ।

सं० अम्भोज (अम्भस्=पानी, जन् =पैदा होना) पु० जलज, कमल-पद्म ।

सं० अम्भोद (अम्भस्=पानी, द= देनेवाला, दा=देना) पु० बादल, मेघ ।

सं० अम्भोधर (अम्भस्=पानी, धा= रखनेवाला, धृ=रखना) पु० बादल ।

सं० अम्भोधि (अम्भस्=पानी, धा= रखना) पु० समुद्र, सागर ।

सं० अम्भोनिधि (अम्भस्=पानी, निधि=जगह, वा भंडार) पु०समुद्र ।

प्रा० अम्मा (सं० अम्बा) स्त्री० मा, माता

सं० अम्ल (अम्=जाना) गु०खट्टा ।

प्रा० अम्लि (सं० अम्ल=खट्टा) स्त्री० इमली, अमली, चिंचा ।

प्रा० अय (सं० अयस इ=जाना) पु० लोहा, शोग, प्रेम से पुकारने के लिये संबोधन, यह ।

सं० अयन (अय्=जाना) पु०मार्ग, रस्ता, २ चाल ३ आधा बरस, विषुवत् रेखा के उत्तर वा दक्षिण की ओर सूर्य का रस्ता, ४ घर, स्थान ।

सं०अयश (अ=नहीं, यश=नामवरी) पु० अपयश, बुराई, बदनामी, अपकीर्ति ।

प्रा० अयशी (सं०अयशस्वी) गु० बदनाम ।

प्रा० अयाना (सं० अज्ञान) गु० मूर्ख, अबूझ, अनसमझ, भोला ।

सं० अयुक्त (अ=नहीं, युक्त=ठीक) गु० अनुचित, अयोग्य, अनरीत, अन्याय ।

सं० अयुत (अ=नहीं, युत=मिलना, गिनना) गु० दशहजार ।

सं० अयोग्य (अ=नहीं, योग्य=ठीक) गु० अयोग, अनुचित, नामुनासिब ।

सं० अयोध्या (अ=नहीं, युध्=लड़ना) स्त्री० अवध, सूर्यवंशियों की राजधानी जोसरयूनदीके तीरपरहै ।

प्रा०अरई } **अरवी** } स्त्री०बड़ा, कंदा, एक तरकारीकानामघुइयाँ कचू ।

प्रा० अरगजा-पु० सुगंधित चीज ।

प्रा० अरगा (सं० अलग्न, अ=नहीं, लगि=मिलना) गु०अलग, अलगा, जुदा, न्यारा, भिन्न ।

प्रा० अरगाई } **अलगाई** } गु० अलग, चुप ।

प्रा० अरगाना (सं० अलग्न) क्रि० सं० अलग करना, जुदा करना ।

प्रा० अरझना-क्रि० अ० उलझना, फंसना, बझना ।

प्रा०अरणा (सं०आरण्य=जंगली) पु० जंगली भैंसा ।

सं० अरणि (ऋ=जाना) स्त्री० एक तरहकी लकड़ी जिसको घिसकर होम करने के लिये आग निकालते हैं आग मथनेकी लकड़ी ।

सं० अरण्य (ऋ=जाना) पु० बन, जंगल ।

सं० अरविन्द (अरा=पहियेका एक भाग उसीकेसमानदल, विदु=पाना, वा होना) पु० कमल, कँवल, पदम ।

प्रा० अरहट-पु० रहट, रेंटा, पानी चढानेकी कल ।

प्रा० अरहर (सं०आढकी, आ=चा-

रों ओर से, ढौक्=जाना) पु० अरहर, तूर, एक प्रकार का नाज जिस की दाल होती है ।

सं० अराति (अ=नहीं, रा=देना, जो सुख नहीं देता) पु० बैरी, शत्रु, दुश्मन ।

प्रा० अराधना (सं० आराधन) क्रि० स० पूजना, सेवा करना, मंत्र जपना ।

सं० अरि-(ऋ=जाना) पु० बैरी, शत्रु, दुश्मन, अराति ।

सं० अरिष्ट (रिष्=हिंसा करना) गु० अशुभ, पु० विघ्न, कौआ, वृषभासुरदैत्य, नींववृत्त ।

प्रा० अरहू (सं० भ्रू०) स्त्री० तिउरी, भृकुटी ।

प्रा० अरु-समुच्चय, और, फिर ।

सं० अरुचि- भा० स्त्री० नफ़रत, घृणा, अनिच्छा ।

सं० अरुण (ऋ=जाना) पु० सूर्य २ सूर्य का सारथी, ३ सूर्य का रथ, ४ सिंदूर, कुंकुम, गु० लाल ।

अरुणचूड़ }
अरुणशिखा } पु० मुर्गा, कुक्कुट ।

प्रा० अरुणाई (सं० अरुणता, अरुण=लाल) स्त्री० ललाई, बिहान की ललाई, सुर्खी ।

सं० अरुणोदय (अरुण=सूर्य, उदय=निकलना) पु० भोर, तड़का, बिहान ।

सं० अरुणोपल- (अरुण=लाल, उपल=पत्थर) पु० लाल चुन्नी, पद्मराग २ लालपत्थर ।

सं० अरुन्तुद (अरु=मर्मस्थल, तुद=काटना) क्लेशकारक, मर्मच्छेदक ।

सं० अरुन्धती- स्त्री० वशिष्ठमुनि की स्त्री ।

सं० अरूप (अ=नहीं, रूप=डौल) गु० निराकार, २ कुरूप, भोंड़ा, कुडौल ।

सं० अरोग (अ=नहीं, रोग=बीमारी) गु० भलाचंगा, निरोग, अच्छा ।

सं० अर्क (अर्च=पूजना, वा, अर्क=गर्म होना) पु० सूर्य, २ अकवन, आक, मदार ।

सं० अर्गल-पु० बिलाई, जंजीर, बेलहन ।

सं० अर्घ (अर्ह=पूजना, वा अर्घ=मोल होना) पु० आठ चीज मिलाकर ईश्वरको अथवा सूर्य चांद आदि देवता के लिये अर्पण करना, पूजा में सूर्य चांद आदि देवताओं को पानी देना, २ मोल, क़ीमत ।

प्रा० अर्घा (सं० अर्घ) पु० अर्घ देने का बरतन जो नाव के आकार बनता है ।

सं० अर्चक (अर्च=पूजना) पु० पूजनेवाला, पुजारी, सेवक ।

प्रा० अर्चना (सं० अर्चन) क्रि० स० पूजना, पूजाकरना, स्त्री० पूजा ।

सं०अर्चा (अर्च्=पूजना) भा० स्त्री० पूजा, सेवा, आराधना।

सं०अर्चित (अर्च्=पूजना) कर्म०पु० पूजाकियाहुआ, सेवाकियाहुआ।

सं०अर्जन (अर्ज्=इकट्ठा करना) भा० पु० इकट्ठा, कमाई, संग्रह, सञ्चय।

सं०अर्जुन (अर्ज्=इकट्ठा करना, वा जीतना) पु० पाण्डु का तीसरा बेटा, युधिष्ठिर का भाई जो इन्द्र के अंश से पैदा हुआ, २ एक पेड़ का नाम, श्वेत, दिशा।

सं० अर्णव (अर्णस्=पानी, ऋ=जाना) पु० समुद्र, सागर।

सं०अर्थ (अर्थ=मांगना, वा ऋ=जाना) पु०अभिप्राय, मतलब, तात्पर्य, कारण, प्रयोजन, विचार, इरादा, मनोरथ, लिये, वास्ते निमित्त, २ धन, मुनाफ़ा।

सं०अर्थकारी (अर्थ+कृ=करना) क० पु० कार्यसाधक, उपयोगी, मुफ़ीद।

सं०अर्थशास्त्र-पु० राजनीति, हिकमतअमली, पालिसी।

सं०अर्थात् (अर्थ) समुच्च० अव्य० अर्थ से, जानो, याने।

सं०अर्थी (अर्थ) गु० धनी, धनवान् २ मांगनेवाला, याचक, ३ वादकरनेवाला,मतलबी, फ़रयादी, ४ मुर्दे की खाट, रथी।

प्रा०अर्दावा-पु० मोटाआटा, दलिया।

सं०अर्दित (अर्द=पीड़ितहोना) कर्म० पु० दुःखित, कष्टित,मुसीबतजदा।

सं०अर्द्ध (ऋध्=बढ़ाना) गु० आधा।

सं०अर्द्धचन्द्र (अर्द्ध=आधा, चन्द्र=चांद) पु० आधाचांद, चंद्रबिंदु ँ।

सं०अर्द्धनिमेष- पु० आधापल,आधाक्षण।

सं०अर्द्धवन्य-गु० नीमवहशी।

सं०अर्द्धरात्र (अर्द्ध=आधी, रात्रि=रात) स्त्री० आधीरात।

सं०अर्द्धाङ्ग (अर्द्ध=आधा, अंग=शरीर) पु० आधा शरीर,२पक्षाघात, शीतांग, एक बीमारी जिसमें आधा अंग रहजाता है।

सं०अर्द्धाङ्गी (अर्द्धांग) स्त्री० लुगाई, स्त्री, नारी, पत्नी, गु० पक्षाघाती।

सं०अर्पण (ऋ=जाना) पु० देवता की भेंटदेना, भेंट, दान, समर्पण, नजर।

प्रा०अर्पणकरना } (सं०अर्पण)
अर्पना } क्रि० स० भेंट चढ़ाना, ईश्वरको या देवताको भेंट देना, सिपुर्दकरना, चारजदेना।

प्रा०अर्ब (सं० अर्बुद, अर्ब्=जाना) पु० सौकरोड़, और कहीं कहीं अर्बुदका अर्थ दशकरोड़भी लिखाहै।

प्रा० अर्ब खर्ब-बोल० अपार, बेशुमार, अनगनित, असंख्यात।

सं० अर्भ } (ऋ=जाना) पु० लड़का
अर्भक } बालक, पुत्र, शिशु, गु० छोटा।

प्रा०अर्राटा पु० बड़ाभारीशब्द, मकान आदि के गिरपड़नेका शब्द, अथवा बाण व गोलेका शब्द।

सं०अर्वाचीन-गु० नया, जदीद,।

सं०अर्हन्त (अर्ह्=पूजना) पु० बौधमती, जैन, जैनियों के एक मुनिका नाम।

सं०अलक (अलू=संवारना) स्त्री० घूंघरवालेबाल-जुल्फ़, लटूरी, लट, घूंघरेबाल, अँगूठिये बाल।

सं०अलका- स्त्री० कुबेर री, दशवर्ष की कन्या।

सं०अलकावलि (अलक =घूंघरवाले बाल, आवलि=पांत) स्त्री० वेणी, घूंघरवालेबाल, जुल्फ़, घूंघरे बाल, अंगूठियेबाल।

प्रा०अलक्षि (सं० अलक्ष्मी) गु० धनहीन, दरिद्री, कंगाल, मुफ़लिस।

सं०अलक्ष्य (अ=नहीं, लक्ष् देखना) स्मी० पु० अलख, अगोचर, जोदेखनेमें नहीं आवे।

प्रा०अलख (सं० अलक्ष्य) गु० अनदेखा, अगोचर, जो देखने में नहीं आवे।

प्रा०अलखित (सं० अ=नहीं, लक्षित =देखागया) स्मी० पु० नहींदेखा, नहींजानागया, बेपता, अबूझा।

प्रा०अलग } (सं० अलग्न, अ=
अलगा } नहीं, लग्न, लगा हुआ, लग्=मिलना) गु० जुदा, अलगा, न्यारा, भिन्न, अलहदा।

प्रा०अलगाना (सं०अलग्न) क्रि० स० जुदाकरना, अलगकरना न्याराकरना, भिन्न २ करना।

सं०अलङ्कार (अलम्=शोभा, कार=करना, कृ=करना) पु० गहना, भूषण, शोभा, आभरण, २ साहित्य शास्त्र का एकभाग कविताका गुण दोष बतानेवाला ग्रन्थ, शब्दभूषण सनअत।

सं०अलंकृत (अलम्=शोभा, कृ=करना) स्मी० शोभायमान, शोभित भूषित, सँवाराहुआ, सुधाराहुआ, बनायाहुआ, मुज़ैयन।

प्रा०अलङ्ग स्त्री० ओर, तर्फ़, छोरपार-इसअलङ्ग=इसओर, इसपार।

प्रा०अलता (सं०अलक्त, अ=नहीं, रक्त=लाल अर्थात् जिससे अधिक और कोई लाल नहीं यहां र को ल होगयाहै) पु० लाखके रंगमें खूब गहरी रंगी हुई रुई जिससे स्त्रियां हाथ पैर रचाती हैं, महौरी।

प्रा०अलबेला-गु० छैला, बांका, छैलछबीला, छैल चिकनिया।

सं०अलम् (अल्+अम्) अव्य,

भूषण, योग्य, निषेध, निवारण, अवधारण, पूरा, सब, काफ़ी, बेफ़ायदा, बस, फ़क़त ।

सं० अलभ्य (अ=नहीं, लभ=मिलना) र्म० पु० जो मिल न सके दुर्लभ, अप्राप्य, नायाब ।

प्रा० अलान (सं० आलान) स्त्री० हाथीके बांधनेकी रस्सी, जंजीर आदि।

प्रा० अलाप (सं० आलाप) भा० पु० राग, तान, स्वर, २ बातचीत, बोल चाल ।

प्रा० अलापना } (सं० आलाप)
आलापना } क्रि०अ०सुरमिलाना, रागछेड़ना, गाना, तानछेड़ना ।

प्रा० अलापी (अ=बहुत, लप्=कहना) कहनेवाला, बकनेवाला, गुलमचानेवाला ।

प्रा० अलाव-पु० धूनी ।

सं० अलि } (अल्=समर्थ होना, अ
अली } र्थात् डंक मारनेमें औ गूंजनेमें जो समर्थ होताहै) पु० भौंर, भँवरा, २ बिच्छू, ३ कोयल, ४ काग, ५ शराब, मदिरा ।

सं० अलिनि-स्त्री० भ्रमरी, भौंरी ।

सं० अलीक (अल्=रोकना) गु० झूठा, मिथ्या, असार, असत्य, स्त्री० झूठ ।

सं० अलीन (अ=नहीं, ली=मिलना वा गलना) अयोग्य, हराम, नाजायज ।

प्रा० अलीहा (सं० अलीक) गु० झूठ, मिथ्या, दरोग़ ।

प्रा० अलैक पलवा (सं० अलीक प्रलाप) बेहूदा बकना, वाहियात बकना, बेठौर ठीक कहना ।

प्रा० अलैया बलैया (सं०अलि=काग, बलि=बलिदेना) स्त्री० निछावर ।

प्रा० अलोना (सं० अलवण, अ=नहीं लवण=निमक) गु० बिन लोन का, बे सवाद, फीका ।

सं० अलोभ (अ=नहीं, लोभ=लुभ्=चाहना) गु० निर्लोभ, संतुष्ट, बेतमअ ।

प्रा० अलोला-गु० नासमझ, बे अक़ल, स्थिर, बेहरकत ।

सं० अलौकिक (अ=नहीं, लौकिक=संसार का) गु० अनोखा, अद्भुत, जो इसलोक का नहीं परलोकका ।

सं० अल्प० (अल्=समर्थ होना, वा रोकना) गु० थोड़ा, कुछ, छोटा-क़लील ।

सं० अल्पबुद्धि (अल्प=थोड़ी, बुद्धि=समझ) गु० कमसमझ, मंद बुद्धि, मूर्ख ।

प्रा० अल्लहड़=गु० अनाड़ी, अनसीखा, २ जवान ।

सं० अव-उप० से, नीचे, दूर, बीच में, बुरा, नहीं, अनादर, जुदा, फैलाव, निश्चय, आसरा, शुद्ध, हार ।

सं० अवकाश (अव=बीचमें,काश=चमकना) पु० औसर, सुबीता, सावकाश, फुरसत, बीचका समय ।

प्रा० अवगाहना (सं० अवगाहन, अव+गाह्=मथना) क्रि० स० मथना, थाहपाना, २ न्हाना ।

सं० अवगुण (अव=बुरा,गुण) पु० दोष, खोट, औगुण ।

सं० अवग्रह (अव=नीचे, ग्रह=पकड़ना) भा० पु० रुकावट, रोंक, २ समासके पदोंका विभाग ३ हाथियोंका झुंड ४ आँकुश ।

सं० अवज्ञा (अव=बुरी, ज्ञा=जानना) स्त्री० अनादर, अपमान, २ घिन, नफरत ।

सं० अवतंस (अव=निश्चय,तसि=शोभना) पु० गहना, भूषण, २कानका गहना, झुमका, कर्णफूल ।

प्रा० अवतरना (सं० अवतरण,अव=नीचे, तृ=पारहोना) क्रि० अ० अवतार लेना, उतरना विष्णु का अवतार लेना ।

सं० अवतार (अव=नीचे, तृ=पार होना,) भा० पु० जन्म, प्रकट, उत्पन्न, विष्णुका जन्म लेना, विष्णु के चौबीस अवतार हैं उन में से दश अवतार बहुत प्रसिद्ध हैं जैसे १ मत्स्य, २ कच्छप, ३ वराह, ४ नृसिंह, ५ वामन, ६ परशुराम, ७ रामचन्द्र, ८ श्रीकृष्ण, ९ बुध, १० कल्की ।

सं० अवदान (अव=नीचे, दा=काटना) भा० पु० वध, कत्ल, मारडालना, पराक्रम, उल्लंघन ।

प्रा० अवदीच (सं० उदीचि=उत्तर दिशा, उत्=ऊपर, अञ्च=जाना) पु० गुजराती ब्राह्मणों की एकजात, ।

सं० अवद्य (अ=नहीं,वद्य=कहने योग्य, वद्=कहना) पु० पाप, दोष, अपराध, गु० नीच, पापी, निंदाकरनेकेयोग्य, नहींकहनेयोग्य ।

प्रा० अवध (सं० अवधि, अव=दूर धा=रखना) स्त्री० वचन, सीमा सींव २ समय, मुद्दत ३ (सं० अयोध्या) पु० अवधदेश, ४ (सं० अवध्य, अ=नहीं,वध्य=मारने योग्य वध्=मारना) गु० नहींमारनेयोग्य ।

सं० अवधान (अव+धा=रखा) भा० पु० कृपा, दया, तवज्जुह ।

प्रा० अवधारी-पु० निश्चय किया गयासोचा गया ।

सं० अवधीर्य-धा० अव्य० विचारकर सोचकर ।

सं० अवधीरित-र्म० पु० अनादृत, अपमानित, ग़फ़लतकीगई, जायाकीगई ।

सं० अवनति (अव=नीचे, नति=नम्=झुकना) भा० स्त्री० घटती, तन, ज्जुली, उतार ।

सं० अवनि } (अव्=बचाना) स्त्री०
अवनी } धरती, पृथ्वी, जमीन, भूमि ।

सं०अवनिकुमारी (अवनि=धरती, कुमारी=बेटी)स्त्री०सीता, जानकी, जनकराजा यज्ञके लिये धरती जोतते थे उससमय धरती में से एक घड़ा निकला उस में से सीता जी निकलीं (इसका पूरावर्णन राम चरित्रमेंदेखो) ।

सं०अवनिप (अवनि=पृथ्वी, प=रक्षाकरना)कृ०पु०राजा,बादशाह ।

सं०अवनिपरमणि–स्त्री० रानी, मलिका ।

सं०अवनीत (अव=नहीं, नी=ले, जाना) मर्म०पु० बेढंगा,बदचलन, बदसलीका, कुमार्गी ।

सं०अवनीश } (अवनि=धरती,
अवनीश्वर } ईश वा ईश्वर=राजा) पु० राजा, महाराजा, राजाधिराजा ।

सं०अवन्ति (अव्=बचाना) स्त्री० मालवादेश ।

सं० अवन्तिका (अव्=बचाना) स्त्री० मालवादेशकी राजधानी उज्जैन, सात पवित्र पुरियोंमेंकी एक पुरीथीअयोध्या, मथुरा, माया गया, काशी, कांची, अवन्तिका,पुरी ।

सं०अवयव (अव=जुदाजुदा, यु=मिलना)पु० अंग,शरीरका कोईभाग ।

सं० अवराधक (अव=निश्चयही, राध्=पूराकरना)कृ०पु०सेवक,सन्त आराधनाकरनेवाला, आबिद ।

प्रा०अवराधना (सं० अवराधन) भा० स्त्री० सेवा, खिदमत ।

प्रा०अवरेख–स्त्री० लेख, लकीर, गिनती, शुमार ।

सं०अवरोध(अव,रुध्=रोकना) पु० रोक, रोकाव,अटकाव, २ रनिवास ।

प्रा० अवर्त (सं० आवर्त) पु०पानी का चक्कर, भंवर, गिर्दाब ।

सं०अवलम्ब } (अव, लबि=ठहर-
अवलम्बन } ना) ण० पु० सहारा, आसरा, आधार,आड़ ।

प्रा०अवली (सं० आवलि) स्त्री० पांत, पंक्ति, लकीर ।

सं०अवलेह (अव+लिह=चाटना) पु०चाटना, चटनी ।

सं०अवलोकन (अव, लोक्=देखना) भा० पु० दृष्टि,दीठ,नजर, देखना, दर्शन, मुलाहिज़ाकरना ।

प्रा०अवलोकना (सं०अवलोकन) क्रि० स० देखना ।

सं०अवश (अ=नहीं, वश्=चाहना) बेवश, बेइख्तियार, बेकाबू ।

सं०अवशिष्ट (अव+ शिष्ट=बाकी रहना) कृ० पु० बाकी अधिक,शेष ।

सं०अवशेष–भा० पु० बाकी ।

सं०अवश्य (अव=निश्चयही, श्यै=जाना) क्रि० वि० निश्चयही चाहिये, ज़रूर।

सं०अवश्यक (अवश्य) गु० ज़रूरी।

सं०अवश्यकता (अवश्य) स्त्री० जरूरत, प्रयोजन, निश्चय।

सं०अवसर (अव=निश्चय, सृ=जाना) पु० औसर, अवकाश, समय, मौका, विराम, ठहराव।

सं०अवसन्न (अव+सन्न, सद्=बैठना) क० पु० थकाहुआ, गिरा हुआ, समाप्त, उदास, गमगीन, हारा हुआ।

सं०अवसान (अव, सों=नाशकरना) पु० अन्त, समाप्ति, मौत, २ हद।

प्रा०अवसेरी—स्त्री० देर, प्रत्याशा, इन्तिज़ारी।

सं०अवस्था (अव, स्था=ठहरना) स्त्री० दशा, उमर, आयुर्दा, हालत।

सं०अवस्थित—क० पु० ठहराहुआ, मुक़ीम।

सं०अवहित (अव+हित, धा=रखना) मनोयोगी, सावधान, मुतवज्जेह, २ प्रख्यात, मशहूर।

प्रा०अवाई (आना) स्त्री० आने की खबर, आना, २ मैलखोरा वा जीनपोश झालर समेत।

सं०अविकारी (अ=नहीं, विकार=दोष) क० पु० विकाररहित, बेऐब।

सं०अविगत (अ+वि+गत—गम्=जाना) क० पु० व्यापक, सब जगह मौजूद।

सं०अविचल (अ=नहीं, विचल=चलना) गु० अचल, अटल, जो चलेनहीं, दृढ़, मजबूत।

सं०अविद्या (अ=नहीं, विद्या=ज्ञान) स्त्री० अज्ञान, मूर्खपन, २माया।

सं०अविनय (अ+वि+नी=ले जाना) भा० पु० ढिठाई, शोखी बेअदबी।

सं०अविनाशी (अ=नहीं, विनाशी=नाशहोनेवाला, नश्=नाशहोना) गु० जिसका कभी नाश नहो सदा रहनेवालापरमेश्वर।

सं०अविरल (अ=नहीं, विरल=महीन, विल्=ढकना, छिपाना) गु० गहरा, गाढ़ा, मोटा, निबिड़, निरन्तर, सदा, हमेशा।

सं०अविरोध (अ+वि+रोध, रुध्=रोकना) भा० पु० मेल, इत्तिफ़ाक़, सम्मति।

सं०अविवेक (अ=नहीं, विवेक=विचार) पु० अज्ञान, अविचार, मूर्खपन, बे तमीज़ी।

सं०अविवेकता—भा० स्त्री० अज्ञानपन, बे तमीज़ी, जिहालत।

सं०अविवेकी (अविवेक) क० पु० अज्ञानी, मूर्ख, नहीं विचारनेवाला, बेतमीज़।

सं० अव्यक्त (अ=नहीं, व्यक्त=प्रकट) कर्म०पु०अलख, अदृश्य, छिपाहुआ, पु० विष्णु, परमेश्वर ।

सं० अव्यय (अ०नहीं, व्यय=नाश वा खर्च) पु० व्याकरणमें ऐसा शब्द जो किसी तरहसे बदलता नहीं वैसाही बनारहता है, जैसे, और, अथवा, फिर, पुनि, आदि, २ विष्णु, परमेश्वर, गु० अविनाशी २ कृपण, कंजूस ।

सं० अव्यवस्थित (अ=नहीं, व्यवस्थित=अचल) गु०चंचल, उतावला, अचेत, बेहोश, २अनुचित, तित्तर वित्तर ।

सं० अव्याहत (अ=नहीं, व्याहत=निराश, वि, आ, हन्=मारना) कर्म० पु० जो नहींरोकाजाय, आशावान् ।

सं० अशकुन (अ=नहीं, वा बुरा, शकुन=सगुन) पु०बुरे सगुन, अपसगुन

सं० अशक्त (अ=नहीं, शक्त=समर्थ) क० पु० निबल, कमज़ोर, दुबला, असमर्थ ।

सं०अशक्य (अ=नहीं, शक्=सकना) असम्भव, गैरमुमकिन, जो नहीं होसक्ता ।

सं० अशंक-गु० निर्भय बेखौफ़ ।

सं० अशन (अश=खाना) भा०पु० खाना, भोजन ।

सं० अशनि (अश=ताड़ना, मारना पु० वज्र, बिजली, इन्द्रका शस्त्र ।

सं० अशिक्षित (अ=नहीं, शिक्षित=सीखाहुआ, शिक्ष=सीखना, सिखाना) गु० अनसीखा, मूर्ख ।

सं० अशित (अश्=खाना) कर्म०पु० खायाहुआ, भुक्त, खुर्दा ।

सं० अशिव (अ=नहीं, शिव=शुभ) गु० अशुभ, अमंगल, बुरा ।

सं०अशुद्ध (अ=नहीं, शुद्ध=पवित्र गु० अपवित्र, ठीक नहीं, ग़लत ।

सं० अशुद्धता-भा०स्त्री०भूल, ग़लती, ग़लत फ़हमी, नापाकी ।

सं० अशुभ (अ=नहीं, शुभ=अच्छा) गु० बुरा, अमंगल, पु० बुराई, आपदा, दुःख ।

सं० अशुभचिन्तकता भा० स्त्री० बुराशोचना, बदअंदेशी ।

सं० अशोक (अ=नहीं, शोक=शोच) पु० सुख, चैन, आराम, २ एकवृक्ष का नाम, गु० प्रसन्न, चैनसे, खुश, बे फ़िकर ।

सं० अश्म, अश्मन् } पु० पत्थर ।

सं० अश्व (अश=फैलना वा खाना) पु० घोड़ा, तुरंग ।

सं० अश्वतर-पु०खच्चर, वह जानवर जो घोड़ी और गधे से पैदाहो ।

सं० अश्वपति (अश्व=घोड़ा पति=मालिक) पु० घोड़ेका मालिक, २ सवार घुड़चढ़ा ।

सं० अश्वमेध (अश्व=घोड़ा, मेध=यज्ञ) पु० घोड़ेका यज्ञ, एक प्रकार का यज्ञ जिसमें घोड़ा होमा जाताहै।

सं० अश्ववार (अश्व=घोड़ा, वृ=पसंद करना वा ढकना) पु० सवार, घुड़चढ़ा।

सं० अश्वशाला (अश्व=घोड़ा, शाला=जगह) स्त्री० घुड़साल, घोड़ों का तबेला।

सं० अश्वशिक्षक-क० पु० चाबुक सवार।

सं० अश्वसेवक-क० पु० साईस।

सं० अश्विनी (अश्व=घोड़ा, अर्थात् जिसका आकार घोड़ेके शिरसाहै) स्त्री० एकनक्षत्र का नाम, पहला नक्षत्र।

सं० अश्विनीकुमार (अश्विनी=घोड़ी, कुमार=बेटा, अर्थात् सूर्य की स्त्री एकबार घोड़ीका रूप बन गई थी तब घोड़े का रूप सूर्य बना था उस समय के पैदा हुए दो लड़कों का नाम अश्विनीकुमार है) पु० देवताओं के वैद्य।

सं० अषाढ़ (अषाढ़ा, एक नक्षत्र का नाम जो इस महीने की पूर्णमासी को होताहै और इस महीने में पूरा चांद इस नक्षत्रके पास रहता है) पु० बरस का तीसरा महीना।

सं० अष्टधातु (अष्ट=आठ, धातु=धात) स्त्री० आठभांतिकी धातु जैसे १ सोना, २ रूपा, ३ तांबा, ४ पीतल, ५ रांगा, ६ कांसा, ७ सीसा, ८ लोहा।

प्रा० अष्टधाती (सं० अष्टधातु) गु० आठ धातका बना हुआ।

सं० अष्टमी (अष्टम=आठवां, अष्ट=आठ) स्त्री० पक्षकी आठवीं तिथि

सं० अष्टसिद्धि (अष्ट=आठ, सिद्धि मन का मनोरथ) स्त्री० आठ प्रकार की सिद्धि १ अणिमा बहुत छोटा बन जानेकी शक्ति, २ महिमा बहुत बड़ा बन जानेकी शक्ति, ३ लघिमा हलका बन जाने की शक्ति, ४ प्राप्ति चाहे जितनी दूर पर जो चीज हो उसको ले लेनेकी शक्ति, ५ प्राकाम्य चाहे जैसे मनोरथको पूराकरना ६ ईशित्व ऐश्वर्यरखना, वशित्वसबके बशकरनेकीशक्ति, ८ कामावसायिता सांसारिक सारी इच्छा को पूरा करना अर्थात् किसी बातकी इच्छा नहीं रखना ॥ अणिमा लघिमा प्राप्तिः प्राकाम्यंमहिमा तथा। ईशित्वंच वशित्वंच तथा कामावसायिता ॥ १ ॥

सं० अष्टांगप्रणाम (अष्टाङ्ग=आठ-अंग, प्रणाम=नमस्कार) पु० आठ अंगों से दंडवत् करना अर्थात् १ हाथों २ पैरों ३ जांघ ४ हिरदा ५ आंखों ६ शिर ७ वचन ८ मन से प्रणाम करना।

सं० असंख्य (अ=नहीं, संख्या=गिन्ती) गु० अनगिनत, अगनित, बेशुमार, बेहिसाब ।

सं० असंग्रह (अ=नहीं, सं=सब, ग्रह=लेना) गु० पु० संचयहीन, नहीं इकट्ठा ।

प्रा० अस-गु० ऐसा, ऐसी, क्रि०वि० इस तरह से, इस प्रकार से ।

सं० असत्य (अ=नहीं, सत्य=सांच) गु० झूठा, मिथ्या, पु०झूठ, दरोग ।

सं० असत्यसंध गु० कपटपरायण, दग़ाबाज़ ।

सं० असफल (अ=नहीं, स+फल=सहित फल) गु० पु० फलरहित, असिद्ध, फल न देनेवाला, बेकाम, बेमुराद, बेमक़सद ।

सं० असभ्य (अ=नहीं, सभ्य=सभा के योग्य) गु० गंवार, अनाड़ी, जो सभा के योग्य न हो, बेतहज़ीब ।

सं० असमंजस (अ=नहीं, सम-अस=ठीक, सम्=साथ, अंजसा=सचाई से, अंज्=शुद्ध करना) पु० संदेह, द्विविधा, अनिश्चय, शक, शुबहा, पशोपेश, राजासगरके पुत्रका नाम ।

सं० असमर्थ (अ=नहीं, समर्थ=बलवान्) गु०दुबला, निबला ।

सं० असमर्थता भा० स्त्री० लाचारी, बेताक़ती, निर्बलता ।

सं० असमय (अ=नहीं, समय=काल) गु० कुसमय, बेऋतु, बेवक्त

सं०असमशर (असम=विषम, शर=तीर) पु० कामदेव ।

सं० असम्भव (अ=नहीं, सम्भव=होने योग्य) गु० अनहोना, नहीं होनेवाला, नहीं होसकनेवाला, ग़ैरमुमकिन ।

सं० असत्यवादी (अ=नहीं, सत्य=सांच, वद्=कहना) क० पु० झूठ बोलनेवाला, मिथ्यावादी, दरोग़गो ।

सं० असह्य (अ=नहीं, सह्य=सहने योग्य, सह=सहना) गु० जो सहा नहीं जाय, कठोर, कड़ा, कड़ुवा, बेबरदाश्त ।

प्रा० असवार / सवार } (सं०अश्ववार)पु० घुड़चढ़ा ।

सं० असाधु (अ=नहीं, साधु=सीधा) गु० अधर्मी, पापी, दुष्ट, बुरा ।

सं० असाध्य (अ=नहीं, साध्य=सिद्ध होनेयोग्य) गु० कठिन, २ असम्भव, ३ जिसका इलाज नहीं होसके, लादवा ।

सं० असार (अ=नहीं, सार=गूदा, तत्त्व) गु० छूछा, पोला, सूखा, २ वृथा, बेफ़ायदह, निष्फल, जिसमें कुछ सार न हो ।

सं० असावधान (अ=नहीं, सावधान=चौकस, होशियार) गु० अ-

चेत, बेसुध, बे सुरत, बेखबर, ग़ाफ़िल।

सं० असावधानी-भा० स्त्री० बे-चौकसाई, बेखबरी, ग़फ़लत।

सं० असि (अस=फेंकना, वा चमकना) स्त्री० तलवार, खांड़ा, खड्ग, शमशेर।

सं० असित (अ=नहीं, सित=धौला) गु० काला, कृष्णपक्ष।

सं० असिद्ध (अ=नहीं, सिद्ध=पूरा) गु० अधूरा, अनबना, २ बिनपका, ३ झूठ, झूठा।

सं० असिद्धता-भा० स्त्री० नाकामयाबी, झुठाई।

प्रा० असीस } (सं०आशिस) स्त्री० आशीर्वाद, दुआ।
आसीस }

सं० असु (अस=फेंकना) भा० पु० प्राण, श्वास, रूह, जान।

सं० असुर (सं० अस=फेंकना, जो देवताओं को फेंकते हैं) पु० दिति के बेटे, राक्षस, दैत्य, दानव।

सं० असुरसेन गयातीर्थ।

सं० असूयक (असू+य्+अक्, असू=निरादरकरना) क० पु० निन्दक, चुगुलखोर, बुराई बतलाने वाला।

सं० असूया-भा० स्त्री० गुणमें दोष लगाना, ऐबजोईकरना, निन्दा करना।

अं० असोसियेशन्=मेल, सभा, समाज, मजलिस।

सं० अस्खलित (अ=नहीं, स्खल्=गिरना) कर्म० पु० अच्युत, अपतित।

सं० अस्त (अस्=फेंकना) पु० सूर्य का छिपना वा डूबना, गुरूबहोना।

प्रा० अस्तहोना-क्रि० अ० बोल० सूर्य का डूबना, सूर्य छिपना।

सं० अस्तव्यस्त (अस्=फेंकना) गु० तितर बित्तर, जुदाजुदा, उलटा पुलटा, तीनतेरह, इधर उधर, जहां तहां, छिन्नभिन्न, तहोबाला।

सं० अस्ताचल (अस्त=सूर्यडूबना, अचल=पहाड़) पु० पश्चिम की ओर एक पहाड़ जहां हिन्दूलोग मानतेहैं कि सूर्य डूबता है।

सं० अस्ति स्त्री० विद्यमान, मौजूद।

प्रा० अस्तुत } सं० (स्तुति) स्त्री० सराह, तारीफ़, प्रशंसा, भजन।
अस्तुति }

सं० अस्त्र (अस्=फेंकना) पु० ऐसा हथियार जिसको फेंकके मारें जैसा बाण तोपका गोला आदि, २ तलवार आदि सब हथियारों को भी कभी कभी अस्त्र कहते हैं।

सं० अस्थि (अस्=फेंकना) पु० हाड़, हड्डी।

प्रा० अस्सी (सं० अशीति) गु० चारबीसी।

सं० अहमिति-स्त्री० अहंकार, अभिमान, ग़रूर, खुदी।

सं० अहंकार (अहम्=मैं, कार=करने वाला, कृ=करना) पु० घमंड, अभिमान, अकड़मकड़, गर्व, मद, ऐंठ, मरोड़, शेखी ।

सं० अहङ्कारी (अहंकार) पु० घमंडी, अकड़बाज़, अकड़ैत, शेखीबाज़, अभिमानी ।

सं० अहन-पु० दिन, रोज़, अहर ।

सं० अहर्निशि-स्त्री० रातदिन, शबरोज़ ।

सं० अहल्या (अहल्य, अ=नहीं, हल्=हल जोतना) स्त्री० गौतम ऋषिकी स्त्री ।

प्रा० अहार (सं० आहार) पु० खाना, भोजन ।

प्रा० अहाहाहा } सं० अहह } (अहह, अहम्=मैं, हा=छोड़ना) त्रि० बो० अचंभा, दुख, और खुशी आदिको जतलानेवाला शब्द, आहा, आह, हाय ।

प्रा० अहहिं (सं० अस्ति=है, अस्=होना) क्रि० अ० है, विद्यमान है, मौजूद है ।

सं० अहिंसा (अ=नहीं, हिंसा=मारना) स्त्री० दया, किसी को नहीं मारना, किसीको नहीं सताना ।

सं० अहि (अ=चारोंओर से, हन्=मारना) पु० सांप, सर्प, नाग ।

सं० अहिगति (अहि=सांप, गति=चलना, जाना) स्त्री० सांपकीचाल, टेढ़ीचाल, कजरफ़तारी ।

प्रा० अहिछार (सं० अहिचार) पु० सांप का विष ।

सं० अहित (अ=नहीं, हित=प्यार, भला) पु० वैरी, शत्रु, २ वैर, विरोध ।

सं० अहितकारी (अ=नहीं, हित भलाई, कारी=कृ=करना) क० पु० अप्रियकरनेवाला, बुराईकरनेवाला ।

सं० अहिनी-स्त्री० सांपिन, सर्पिणी ।

सं० अहिपति (अहि=सांप, पति=मालिक) पु० सांपोंकाराजा, शेषजी, २ वासुकी ।

सं० अहिफेन-पु० अफीम ।

सं० अहिलव=अभि+प्लुव (अभि=सामने+प्लुव=डुबाना अर्थात् बाढ़) २ सपोला, सांपका बच्चा ।

प्रा० अहिवात (सं० अस्ति पति, अस्ति=है, पति=भर्ता, खाविंद) पु० सुहाग, पतिके जीनेका चिह्न ।

सं० अहीन (अहि=सांप, इन=मालिक) पु० सांपोंकाराजा, शेषजी, शेषनाग ।

सं० अहीश (अहि=सांप, ईश=मालिक) पु० सांपोंका राजा, शेषजी ।

प्रा० अहीर (सं० आभीर आ=चारोंओरसे, भिय=डर, रा=देना, वा, आ, ईर=भेजना) पु० ग्वाला ।

प्रा० अहीरणी } अहीरी } (अहीर) स्त्री० ग्वालन ।

सं० अहे } वि० बो० संबोधनकासूचक,शोच,दुख,दया,अचंभा,बड़ा, सराह आदि अर्थोंमेंबोले जाते हैं ।
अहो }

प्रा० अहेर (सं० आखेट) स्त्री० शिकार, मृगया, आखेट ।

प्रा० अहेरिया } (सं० आखेटकी) पु० शिकारी, बहेलिया, आखेटकी ।
अहेरी }

प्रा० अहो (सं० अहः वि०बो०आश्चर्य, तअज्जुब,कष्ट,हर्ष, दुःख ।

सं० अहोरात्रि (अहन्=दिन, रात्रि =रात) क्रि० वि० रातदिन, दिनरात ।

आ

सं० आ, वि०बो०हाय,आह,दुख अथवा दयाको जतलानेवाला शब्द ।

सं० आ, उपस०से, (जैसे आकौमारम्=बालकपन से) २ तक, तलक, लग,तोड़ी (जैसे आगोपाल=ग्वाल तक,अथवा आमरणम्=मरनेतक) ३ चारों ओर से, ४ कुछ, कुछेक, सा,(जैसे आपीत=कुछेक पीला,अथवा पीलासा) ५ पहले,६ वाक्यके उलटे अर्थ में ।

सं० आ-पु० शिव,महादेव, २ ब्रह्मा ।

प्रा० आंक (सं० अङ्क) पु० अङ्क,संख्या, रकम, २ चिह्न, निशान,३कपड़ेके थानपरका चिह्न जिससे उस का मोल जाना जाताहै, निश्चय ।

प्रा० आंकना (सं०अङ्क=चिह्न करना) क्रि० स० जांचना, परखना, २ मोल करना, मोल ठहराना, ३ चिह्न करना ।

प्रा०आंकुश (सं० अंकुश) पु० अंकुश, आंकड़ी,लोहेका कांटा जिससे हाथी को चलाते हैं ।

प्रा० आंकुश मारना-बोल० वश करना ।

प्रा० आंख (सं० अक्षि) स्त्री० नेत्र, नयन, चक्षु, चषु ।

प्रा० आंखआना-बोल० आंख में जलन होनी, आंख लाल होजाना ।

प्रा० आंखखटकना-बोल० आंख दुखना, आंखमें दर्द होना ।

प्रा० आंखचढ़ाना-बोल० क्रोधकरना,गुस्सा करना, २ मस्तहोना, मतवालाहोना, नशेमें होना ।

प्रा० आंखचीरचीरके देखना-बोल० खूब ध्यान लगाके देखना, २ अथवा क्रोधसे देखना ।

प्रा० आंखचुराना-बोल० ध्यान नहीं देना, २ शर्मसे आंख फेरलेना, ३ किसी से आंख बचाना ।

प्रा०आंखछिपाना-बोल० किसीबुरे कामके करने से लजाना ।

प्रा० आंख ठंढीकरना--बोल० मित्रों के मिलने से प्रसन्न होना, प्रसन्नहोना ।

प्रा०आंखडबडबाना-बोल० आंखों में आंसू भरलाना।

प्रा० आंखदिखाना, आंखदिखलाना-बोल० धमकाना, घुरकना।

प्रा० आंखपथराना-बोल० चकाचौंदा होना, चौंधियाना।

प्रा० आंखफड़कना-बोल० आंख फटकना, आंखके पपोटों का हिलना (जब कि पुरुषकी दाहिनी और स्त्री की बाईं आंख फड़कती है तो हिन्दूलोग उसको अच्छा सगुन मानते हैं और सोचते हैं कि कुछ अच्छा होनेवालाहै पर जब पुरुष की बाईं और स्त्री की दाहिनी आंख फड़कती है तब सोचते हैं कि कुछ बुरा होनेवाला है)।

प्रा० आंखफूटना-बोल०अंधाहोना।

प्रा० आंखफूटी पीड़गई-बोल० यह मुहावरा उससमय बोला जाता है कि जब दो आदमी किसी एक चीज़के लिये झगड़तेहों और उस चीज के खोयजानेपर उनका झगड़ा बन्दहोजाय।

प्रा० आंखफेरना, आंखमोड़ना-बोल० मित्रोंसे मित्रताई तोड़ना, मित्रोंसे बैर करना।

प्रा० आंखबंदकरलेना, आंख मूंदना-बोल० दूसरे से मुँह मोड़ना, दूसरेकी खबर न लेना, २ मरना।

प्रा० आंखबचाना-बोल० आंखचुराना, आंख बराबर न कर सकना, शर्माना।

प्रा० आंखभरके देखना-बोल० किसी अनोखी चीजको खूबदेखना कि संतोष होजावे।

प्रा० आंखभरलाना-बोल० आंखों में आंसू भरलाना, आंखडबडबाना, रोनी सूरत बनाना।

प्रा० आंखमारना-बोल० आंखमटकाना, सैनकरना, इशारा करना, आनाकानी करना।

प्रा० आंखमिचजाना-बोल० मरना, मरजाना।

प्रा० आंखमिचौवल, प्रा० आंखमिचौली, प्रा० आंखमुंदौरा-(आंख मिचौलना, मूँदना) बोल० एक खेलका नाम।

प्रा० आंखमिलाना-बोल० मित्रताई करना, दोस्ती करना।

प्रा० आंखरखना-बो० प्यार करना, प्यारकी बातेंकरना, २ आशा करना, ३ देखना, ताकना, ४ किसी स्त्री को बुरी दृष्टि से देखना।

प्रा० आंखलगाना-बोल० किसी के प्यार में फँसना, प्यार करना, दोस्ती करना।

प्रा० आंखलड़ना-बोल०अपनेप्यारे से अचानक मिलजाना, अपने प्यारे